देवागम० १

॥ॐनमःसिद्धेभ्यः॥ अथदेवागमनामस्तवनकी देशभाषामयवचनिकालिखि
येहै॥दोहा॥ दुषनआदिचउवीसजिन वंदौशीशनवाय विघनहरनमंगल
करन मनवंछितफलदाय॥१॥सकलतत्वपरकासकर स्यादवादमयसार
श्रुतब्रह्मांचेनमूं जैनवचनहितकार॥२॥दुषनसेनकूंआदिलेअंतिमगौ।
तमस्वामिचउदहसैत्रेपननमूंगणधरमुनिवरनामि॥३॥पंचमकालमुआदि।
मैं केवलज्ञानीतीनाभ्रुतकेवलिछपंचजे॥४॥नमूंकर्ममलछीनाथतत्वारथज्ञा १
सनकियो॥५॥स्वामिमुनिईस॥सहातासकेचरणयुग॥नमूंधारिकरशीश॥६॥
सवैया॥स्वामिजोममंतनकृतत्वारथज्ञासनकीमहानाभ्यस्वीनाकी आदिमैंवि १
नारिकैं॥परमश्रुतनमीमांसादेवागमनामथुतिस्यादवादसाधनतैंनाषीविस्त॥

रिकैं॥अष्टशतीदुहितानाकीकीनीअकलंकदेवताकूंविद्यानंदिसूरिनलैंमन।
धारिकैं॥अलंकाररूपवरनीहजारआठश्लैसेतीनमुनिरायपायनमूंमदछा।
रिकैं॥६॥दोहा॥आगमकीउतपतिकूं॥कारणआप्तविद्यारि॥ताहीतैंकैंज्ञानवर
नमनेयोगपनिहारि॥७॥कियोनमनअवकरतहं॥देवागमथुतिदेषि॥देशवचनि
कातासकीटीकाआशायपेषि॥८॥श्रीमंगलकैंअर्थिइष्टकूंनमस्कारकीया
अवशास्त्रकीउतपतिंतथाशास्त्रकाज्ञानआप्तैहीहोययातैंशास्त्रकेमूलकर्त्ता १
तो ३ परमगनहारकश्रीऋषभदेवआदिवर्द्धमानपर्यंतचउवीसतीर्थंकरस्वतुर्थका।
लमैंभये॥अरतिनिकीदिव्यध्वनिकूंलेगणधरनिनैंद्वादशांगरूपरचनाकर १
तिनिकीपरिपाटीअनुसारइसपंचमकालमैंमुनिनयेतिनैंशास्त्रनिकीप

हस्तिकरी। श्वेसैंसास्त्रकीउत्पत्तितथाशास्त्रकेज्ञानकेकारनआप्तहीहै।
तेशास्त्रकीआदिविषैनमस्कारयोग्यहैश्वेसैंजानितिनकूंनमस्कारकरि
देवागमनामस्तवनकीदेशभाषामयवचनिकालिखूंहूं।ताकासंबंधश्वेसा
जोपथमतीर्थंकरमास्वामिमुनिनैंतत्वार्थसूत्रदशाध्यायरूपरच्या।ताकीगंध
हस्तिनामाप्तमीमांसास्वामिसमंतभद्रनैंरचीताकीआदिमैंआप्तकीप
रीक्षारूपयहदेवागमनामस्तवनकीयासोयाकादेवागमश्वेसातौआदि
अक्षरकेसंबंधतैंनामहै।अरयाकासार्थकनामआप्तमीमांसाहै।मीमांसा
परीक्षाकूंकहियेहै।वक्रिइसस्तवनकीअकलंकदेवआचार्यनैंहस्तिक २
रीताकेश्लोकआठसैंहै।ताकूंअष्टशतीश्वेसानामकहियेहैवक्रिइसि।

अष्टशतीकाअर्थलेश्रीविद्यानंदिनामाआचार्यनैंअष्टसहस्रीनामायाकाअ
लंकाररूपटीकारचीहैसोयेप्रकरणन्यायपद्धतिकेहै।इनिकाअर्थयो
करणन्यायशास्त्रकेपढनिकूंजासै।सोश्वेसेपढनेंवालेतथाइनिकीगुरुआ
म्नायकीविरलताहोयगईताकरिश्वेअर्थकेसमझवनेंवालेविरलेहैं।मैंरैकमू
ढनिकाबुद्धिसारूवोधनयातवविचारनयाजोसम्यक्दर्शनकाप्रधानका
रणआप्तआगमपदार्थकाजाननांहै।अरआप्तकीपरीक्षाइनिग्रंथनिमेंहै।
सोआप्तकायथार्थस्वरूपइनिग्रंथनितैंप्रगटहोयतौबडाउपकारहै।अल
बुद्धिरुआप्तकास्वरूपयथार्थसमझैतौताकेवचनआगमहै।तथातिसआ
गमतैंपदार्थकास्वरूपवर्णनहै।ताकूंसमझेंसम्यक्दर्शनकीप्राप्तिहोय

Digitized with financial assistance from the Government of Maharashtra on 11 June 2017

श्रीसैंविचारियास्तवनकीदेवागमाषामयवचनिकासंक्षेपअर्थरूपअष्टसह
स्त्रीटीकाकाआश्रयलेकिछूलिषूंहूंसोमव्यजीववांचियोपढियोधारियो।या
तैंआप्तकायथार्थस्वरूपजांणिश्रद्धानदृढकीजियो।अरअर्थमैकहूंहीनाधि
कलिषूंतोविशेषबुद्धिवानमूलश्लोकतथाटीकादेषिशुद्धकरिवांचियो। मेर १
अल्पबुद्धिजांणिहास्यमतिकरियो।सत्पुरुषनिकास्वभावगुणाग्रहणकरणो।
काहोयहैसोदोषदेषिक्षमाहीकरैं।श्रीसैंमेरीपरोक्षप्रार्थनाहै।छाडसदे।
वागमस्तोत्रकीपीठिकाश्रीसैंहैं।यामैंपरिछेददश्लोहैं।तिनिमैंआदिकापथम।
परिछेदमैंकारिकाश्लोकतेईसहैं।इज्ञातिनिमैंआदिमैंदेवागमइत्यादित १ ३
नश्लोकमैंतीनभगवानमहानस्तुतियोगश्रीसेहेतुनितैंनांहीहैश्रीसैंकह्याहै

वज्रसिदोषावरणाइत्यादिदोयश्लोकनिमैंनभगवानसर्वज्ञवीतरागहैश्रीसाअनु
मानकीयाहै।वज्रसिसलमेवाइत्यादिकाश्लोकमैंश्रीसेसर्वज्ञवीतरागतुमअ
रहंतहीहोश्रीसैंकह्याहै।वज्रसिखलमताइत्यादिदोयश्लोकमैंअनआप्तनांही हे२
श्रीसैंकह्याहै।श्रीसैंआप्तश्लोकमैंतीपीठबंधहै।वज्रसिआगैंनभगवानावपक्षका
णकांतकेनिषेधकापांचश्लोकहैं।तातैंनावअनावअनभगवानावा।अवक्तव्य
धानावावक्तव्यापा अनावावक्तव्याहानावानावक्तव्याणश्रीसैंविधिनिषेधा
केसप्तभंगकरिइत्यादिषायाहै।वज्रसिआगैंनवश्लोकनिमैंनभगवानकी
सप्तपक्षकाअनेकांतरूपस्थापनहै।वज्रसिकश्लोकमैंअगिलेपरिछे।
दनिमैंपक्षनिकेसप्तभंगकरनेकीसूचनिकाहै।असैंएथमपरिछेदसमा

मकीयाहै।छ।अथौदितीयपरिछेदमैंअद्वैतएकांतपक्षकावर्णनहैश्लो।
कतेरामै।१३।तहांप्रथमश्लोकनिमैंअद्वैतपक्षकेएकांतकानिषेधहै।छ
स्थाश्लोकनिमैंएकांतपक्षकानिषेधहै।छ।श्लोकमैंदोऊ
पक्षकाअरअवक्तव्यपक्षकानिषेधहै।छ।श्लोकनिमैंइनिपक्षनि
केअनेकांतकास्थापनहै।ऐसैंइतीयपरिछेदसमाप्तकीयाहै।२।अथौ
तृतीयपरिछेदनित्यानित्यपक्षकाहैतामैंश्लोकचौईसहै।१४।तहांप्रथम
कनिमैंतौनित्यएकांतपक्षकानिषेधहै।छ।श्लोकनिमैंदशएका
कांतपक्षकानिषेधहै।छ।श्लोकमैंदोऊकीपक्षअरअवक्तव्यपक्षका
निषेधहै।छ।पांचश्लोकनिमैंअनेकांतकरिइनिपक्षनिकास्थापनहै।

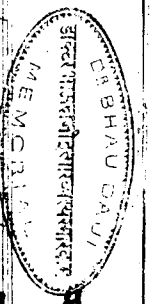

ऐसैंतृतीयपरिछेदसमाप्तकीयाहै।छ।अथौंचतुर्थपरिछेदनेदानेदपक्षका
हैतामैंश्लोकबारहहै।१३।तिनिमैंछहश्लोकनिमैंतौनेदएकांतपक्षकानि।
षेधहै।छ।तीनश्लोकनिमैंअनेदपक्षकानिषेधहैछ।श्लोकमैंदो
ऊकीपक्षअरअवक्तव्यपक्षकानिषेधहै।छ।श्लोकमैंअनेकांतक
स्थापनहै।ऐसैंचतुर्थपरिछेदसमाप्तकीयाहै।धाछौंअपेक्षाअनपेक्षाकीप।
क्षकापंचमपरिछेदहै।तामैंतीनश्लोकमैंएकांतकानिषेधअनेकांतकास्था।
पनहैऐसैंपांचवांपरिछेदसमाप्तकीयाहै।५।अथौहेतुआगमकीपक्षकाछ
ठापरिछेदहै।तामैंतीनश्लोकहैं।३।तिनिमैंएकांतकानिषेधअनेकांतकास्था
पनहैऐसैंछठापरिछेदसमाप्तकीयहै।६।अथौअंतरंगबहिरंगतत्वकीप

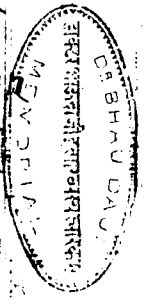

ह्नकासातमापरिछेददहैतामैंनवश्लोकहै।।०।।तहांचारिश्लोकनिमैंतौ एकां॰
तकानिषेधहै अरपंचश्लोकनिमैंअनेकांतकास्थापनहै। ऐसैंसातमांपरिछे
दसमाप्तकीयाहै।।७।।अथौदैवपौरुषकीपक्षकाआठमांपरिछेददहैतामैं॰
श्लोकच्यारिमैंएकांतकानिषेधअनेकांतकास्थापनहै। ऐसैंआठमांपरिछेद॰
समाप्तकीयाहै।।८।।अथौपुन्यपापकेवंधकीरीतिकानवमांपरिछेददहैतामैं॰
श्लोकच्यारिमैंएकांतकानिषेधअनेकांतकास्थापनहै ऐसैंनवमांपरिछेद
समाप्तकीयाहै।।९।।अथौदशमांपरिछेदमैंउगणीसश्लोकहै। तिनिमैंतीनश्लो
कनिमैंतौअज्ञानतैंवंधअरअल्पज्ञानतैंमोक्षऐसाएकांतकानिषेधकरिआ॰ ५
रवंधमोक्षजैसैंहोयतैसैंअनेकांततैंस्थापनकीयाहै। वज्रसिंहोयश्लोकनि

मैंसंसारकीउत्पत्तिकाक्रमकह्याहै।वज्रसिंहोछैंदोयश्लोकनिमैंउसांणाक॰
स्वरूपसंख्याविषयफलइनिच्यारिनिकावर्णनिकरिअरदोयश्लोकनिमैं
र्यंतपदकास्वरूपकह्यापीछैंएकश्लोकमैंस्याद्वादकूंअरकेवलज्ञानकूंक
थंचित्समानदिषायापीछैंनयकाहेतुरूपएकश्लोकमैंकहिअरछमांएका
विषयवस्तुकास्वरूपएकश्लोकमैंकह्यापीछैंएकश्लोकमैंयाहीकूंदृढकी।
या।पीछैंछमाएनयकेवाक्यकास्वरूपकह्याग्रेकच्यारिमैंपीछैंएकश्लोक
मैंस्याद्वादकीस्थितिकहीअरपीछैंएकश्लोकमैंग्रंथकहनेकाप्रयोजनक
हिउगणीसश्लोकरूपपरिछेदसमाप्तकीयासर्वश्लोकएकसौचौदानया
११४।ऐसैंदशपरिछेदरूपपीठिकाहै। अथअष्टसहस्रीनामटीकाकर्त्ताश्री

विद्यानंदिनामाचार्यकृतहै॥ जोयहदेवागमनामशास्त्रहैसोकेसाहैत्या १
स्वकाप्रारंभनकालविषैस्वीजोस्तुतिताकैगोचरजोआप्तताकेगुणनिका।
अतिशयकीपरीक्षास्वरूपहै। सोश्रेसैंमोक्षशास्त्रजोतत्वार्थसूत्रताकी।
आदिविषैइष्टास्त्रकीजसहितयाशास्त्रकाज्ञाकाकारणपणाकरितयामंगल ४७
कैअर्थिमुनिनिमैंनगवान्आप्तकास्तवनश्रेसैंकीया॥ ज्ञा॥मोक्षमार्गस्यनेता
नृ४७ रंनेतारंकर्मभूतांज्ञातारंविश्वतत्वानांवंदेतद्गुणलब्धये॥१॥याकाअर्थामोक्ष॥
प्र३ मार्गकेप्रकाशनेवालेकर्मरूपपरवतकेनेदनेवालेसमस्ततत्वकेजाननेवा
लेश्रेसेआप्तकूंमैंतिनिकेगुणनिकीप्राप्तिकैअर्थिवंदौहौ॥ श्रेसैंअतिशयर ६
हितगुणनिकरिस्तवकीयासोनगवान्आप्तमानूंसमंतनद्रआचार्यकूंसा

नर

ज्ञातपूछ्याजोहेसमंतनद्रयकमुनिनिनैंहमारास्तवननिरतिशयगुणनि
करिकीयासोहमारैदेवागमआदिविभूतिपाइएहै। श्रेसेअतिशयनिकरि
हसमहानहैस्तवनकरनेंयोग्यहौ। श्रेसेअतिशयसहितगुणनिकरिहमारास्त
वनकौनकीया। श्रेसैंपूछनैंसमंतनद्रआचार्यनगवानकूंमानूंसाक्षात्नहींकहै
हौंकैसेहैसमंतनद्रआचार्यमोक्षकामार्गस्वरूपजोआपनाहितताकूंचाहतेजेन
व्यजीवतिनिकैसम्यक्श्रश्रमिथ्याजोउपदेशताकाविशेषताकाज्ञानकैअर्थिआ।
प्तकीपरीक्षाकूंकरनेहौ। वक्रिकैसेहैश्रद्धाश्रगुणज्ञानइनिदोकनिनैंवयुक्त
हैमनजिनिकाश्रैसेहै। श्रैसैंउत्तेक्षाश्रलंकाररूपवचनहै। श्रैसैंनगवान्आप्त
कैसाक्षात्पूछेंमानूंसमंतनद्राचार्यकहैहै॥ ज्ञा॥श्लोकाकादेवागमनभोयानचा

मराद्विभूतयः। मायाविष्वपिदृश्यंते। नातस्त्वमसिनोमहान्॥१॥अर्थः।हेभग
वानतुमारेदेवनिकाआगमआदितथाआकाशविषेगमनआदितथाचामर।
छत्रआदिविभूतिपाइएहै।इसहेतुतैंतोहमारेमुनिनिकैतुममहानस्फुटिक
रनेयोग्यनांहीहौ।जातैंविभूतितौमायावीजेमस्करीआदिइंद्रजालवालेतिनि
विषैभीपाइएहैयातैंतौआप्तप्रधानीहैतेदेवनिकाआगमआदिविभूतिअपनं २
परमेष्ठीपरमात्माकाविघ्नमांनूंआरहमसारिषेपरीक्षाप्रधानीतोश्रैसेविघ्ना।
तैपरमेष्ठीस्तुतिकरनेंयोग्यनांहीमांनैहै।जातैंयहस्तवनआगमकैआश्रयहै
वक्तरियास्तवनकाहेतुदेवागमादिविभूतिसहितपणांहैसोयहँतुभीआगमा ७
श्रितहै।प्रतिवादीकैतौप्रमाणसिद्धहीनांही।पैलासाक्षात्देवागमादिदेष्पा

विनांकैसैमांनै। आरआगमप्रमांणवादीकैनीमायावीआदिविषद्मैंवर्त्तनेतैंव
निचारीहैसाधकूंकैसैसाधै। वक्तरिआप्तप्रमांणवादीकहै। जोसांचादेवनि
काआगमआदिविभूतिसहितपणांनागवानकैहैतैसामायावीनिविषैनांही।
नातैंहेतुव्यभिचारीनांहीतौतहांनीश्रैसाउत्तरजोसाचैविभूतिनागवानकैप्रत्य
क्षअनुमानतैंसिद्धिनयेनांही। आरआगमतैंसिद्धिकीयेमानैतौआगमाश्रितह १
नयातातैंइसहेतुतैंस्तुतिकरनेयोग्यनागवान्आप्तसिद्धहोयनांही। छआ।
रौमांनूंनागवानपूछ्यैहै। जोअंतरंगआरबाह्यशरीरआदिसहोदयहमारेहैतै
साआप्तकैनांहीसांचाहैयातैंहमहानूस्फुटिकरनेयोग्यहैनातैंतैंसैस्तवन
कोनकीया।श्रैसैंपूछ्यैमांनूंआचार्यकहैहै।तद्यथाश्लोक।अध्यात्मंबहिरप्येष

देवागम० ६ विग्रहादिमहोदयः। दिव्यः सत्योदिवौकस्स्वा॥ प्तिरागादिमत्सुसः २ अ॥
र्थः॥ अध्यात्मकहियेआत्माश्रितशरीराश्रितअंतरंगशरीरआदिकामहान॥
उदयमलपसेवरहितपणाआदिकावक्रियाद्यदेवनिकरिकीयागंधोदा॥
कहष्टिआदिकणांचेमायावीनिविषैनपाईणावक्रद्धिदिव्यहैचक्रवर्त्यादिक
मनुष्यनिकैश्रैसेनपाईणासोश्रैसेहेतुतैंनीनगवानआप्तभुमहमारैस्तुतिकरनै
श्लो ४ योग्यनांहीहौं। जातैंयअंतरंगवोसांचामहोदययद्यपिपूरणादिकउंद्धजा॥
लीनिविषैनपाईणहै। तौकषायरागादिसहितस्वर्गकेदेवनिनिविषैपा॥
ईणहैं॥ तातैंहेतुयनिवारीहै। इसेंतुतैंनीनगवानपरमात्माहै। श्रैसैंनांहीस्तु॥ ६
तिगोचरकीजियेहै। इहांनीकहैजोनगवानकैघातिकरमकेनाशतैंनैसा

हे २

विग्रहादिमहोदयहैतैंसारागादिकसहितदेवनिविषैनांहीहै। तहांनीपूर्वोक्त
हीउत्तरजोनगवानकैघातिकरमकेनाशतैंउपज्याश्रैसासोंद्धातदीषैनंहो
श्लो ३ तातैंयहनीस्तवनयथाहेतुआगमाश्रितहीहै। इहांकहै। जोवमांणसंज्ञवके॥
माननेवालेअनेकवमांणतैंसिद्धमांनैहै। इहांआगमवमांणतैंसिद्धनयासो॥
ईआगमाश्रितहेतुजनितअनुमानतैंसिद्धयायासैंदोषकहा। नाकूंकहिये। श्लो ५
श्रैसैंवमांणसंज्ञवनांहीहै। पहलैंवमांणसिद्धवामाणआगमतैंसिद्धनया॥
तौकताकाहे। तुकूंवत्पन्नदेषिअनुमानतैंसिद्धकरैपीछैनाकूंवत्पन्नजाणो॥
तहांवयोजनविशेषहोयहै। श्रैसैंवमाणसंज्ञवहोयहै। केवलआगमहीतैं॥
तथाआगमाश्रितहेतुजनितअनुमानतैंवमांणकरिकाहेकूंवमाणसंज्ञा॥

वकहनां। श्रैसैइसविग्रहादिकमहोदयतैंनीनागवानपरमात्मानांहीमानैंहै
छा। श्रागैमांनूंनागवानकेरिपूछैहै। जोहमारातीर्थंकृतसंप्रदायहै. मोक्षोंगरू। मा२
पधर्मतीर्थंहमचलावैहैंइसहेतुतैहममहानस्तुतिकरनेंयोग्यहैश्रैसेंपूछैमा
नूंफेरिश्राचार्यसाक्षातहीकहैहै। श्लोक॥तीर्थंकृतसमयानांचापरस्परविरोध
तःसर्वेषांसम्यक्त्वनास्ति। कस्मिद्देवनवेकुरुनाथ। श्रर्थ॥हेनागवन्तीर्थंकृद्धियेजा
करितिद्धियेश्रैसाधर्मंमार्गताकूंकरैतेतीर्थंकृततिनिकेंसमयकद्धियेमततथा
श्रागमतिनिकेंपरस्परविरोधहैतातैंसर्वहीकैंश्राप्तपणांहोयनांहीतिनिमैंको।
ईएकगुरुमाहानस्तुतिकरनेंयोग्यहोयानावार्थी हेनागवनश्राप्ततुमारैती। ए
र्थंकरपणांहेतुतैंमहानपणांसाधियेतौयहतीर्थंकरपणांपक्षश्रनुमानप्रमां

णतैंनौसिद्धहोयनांहीपक्षदोषैंनांहीतथाताकालिंगदोषैंनाहीं। श्ररश्रागमतैं
साधियेतौपूर्ववतश्रागमश्राश्रयग्रहरै। वक्तरियहहेतुव्यभिचारीहै नातैंइंद्रा।
दिकविषैंव्यसंभवीहै। तौकुवोधश्रादिश्रनमतीहैतेसर्वश्रपनेश्रपनेश्राप्तकूं
तीर्थंकरमानैंहै। यातैंसर्वहीमहानठहरैंहैं। वरितेसर्वरहैनांहीं। जातैंपरस्परा ६४
विरुद्धश्रागमकहैहै। जोविरुद्धवनकहैतौतिनिकैंमतनेंदकाहेकूंहोयतातैंतीर्थं
करपणांहेतुहैसोकाहूहीकैंमहानपणांकूंसाधैनांहीहै। इहांमीमांसकमतीक
हैहैजोयाहीतैंश्रैसाश्रायाजोपुरुषतौकोईभीसर्वज्ञमाहानस्तुतिकरनेंयोग्यनांहीं
हैनेकल्याणकेश्रर्थीहैतिनिकैंवेदहीकल्याणउपदेशकासाधनहै। ताकूंभीश्रैसै
हीकहनांजोवेदश्रापहीतौश्रापकेश्रर्थकूंकहैनांहीवेदकाश्रर्थपुरुषहीकरैहै

तिनिकैनीपरस्परविरोधहोदेषियेहै। तहांनइकेसंप्रदायीतौवेदकावाक्यार्थ।
भावनाकूंमानेहै।प्रभाकरकेसंप्रदायीनियोगकूंवाक्यार्थमानेहै।वेदांतकेसं
प्रदायीविधिकूंवाक्यार्थमानेहैतिनिकैपरस्परविरोहै। इतिकास्वरूपविशेष ध३
करिश्रेष्टसहस्रमैंवर्णनहै। तथाविरोधविस्तारसूंदिषायाहैतहांतैंजाननां।वा
कुरिइहांनास्तिकवादीवार्वीकतथाशून्यवादीकहैजोकछूवस्तहीसत्यार्थनाह १
तवकाहैकाआप्तअरकाहैकोंपरीक्षाकाविवादकाप्रयासकरियेताकूंकहि।
येजोवस्तनांहीहैत्रैसाजानिनिश्चयकैसैंकरियै। तूनास्तिकतथाशून्यकाकहनां।
वालाकिछूवस्तुहीनांहीतौतेरीकहीकौनमानैगा। अरतूवस्तुहैतौतैंसैंहीसर्व १०
वस्तुहैतथासर्ववस्तुकाजाननैंवालासर्वज्ञआप्तहैतहांवस्तुकास्वरूपकोई।

कैसैंमानेहैकोईकैसैंमानेहै। तहांपरीक्षाजोकरीचाहियै।वक्तरिपरीक्षाहोय
हैसोप्रमाणरूपज्ञानतैंहोयहैवक्तरिप्रमाणरूपज्ञानहैसोसर्वथासांचाज्ञा।
नसर्वज्ञकाहैसोसर्वज्ञअरहंतहै। ताकानिश्चयकीयाचाहियै।अरअल्पज्ञकै।
निश्चयहोयसोअपनैंज्ञानहीकैआश्रयहोयसोसाधकप्रमाणअरस्वाधकप्रमां
णजैसैंनिश्चयहोयवादीप्रतिवादीनिर्बाधनिश्चयकरैकोईएकास्वाधानआ
वैतैसैंनिश्चयकरनांसोपरीक्षाहै। वक्तरिइहांमीमांसाकएकहैजोअल्पज्ञकीतौ मां ७
सिद्धिहोयहैअरसर्वज्ञकीसिद्धिनांहीताकैनिषेधकूंइसश्लोककेचौथेपदक २
अर्थत्रैसैंकरनांजोकश्चिदेवनवेत्तुरुकहियैकौनगुरुहै। यहचित्तैंहैज्ञान।
रूपआत्माहैसोहीगुरुहैमहान्हैजातैंइसचैतन्यआत्माकैअन्यपुद्गलकै।

देवाग० ११ संबंधतैं ज्ञानावरणादिक कर्महैं तिनिकें आवरणतैं अल्पज्ञपणां अरदोष सहितपणां हैसो आवरण रहितयें सर्वज्ञवीतरागहोयहैं यहप्रमाणतैं सिद्धहै। ऐसैं आप्त सर्वज्ञका निश्चयनयैं तिसकें वचनरूप आगमका निश्चयहो यआगमतैं सर्ववस्तुका निश्चयहोय। ऐसैं निश्चयकरतैं देवागमादिविभूति सहितपणांतैं अरहियहादिमहोदयपणांतैं अरतीर्थंकरपणांतैं तौ आप्त सर्वज्ञसिद्धभया। तातैं नैरात्म्यकारनिश्चयनयाहैं असंभवता बाधकप्रमाणजामैं ऐसा जानावान अरहंत तुमहीं संसारीजीवनिका पूज्यहोस्वामीहोयातैं आप्तपणां कदोषनिकी अरआवरणाकी हानिकरि सिद्धभया सप्ततत्त्वार्थनिका ज्ञातापणां। ११ करिसूत्रकारादिमुनिनिनैं तुमारास्तवनकीयाहै। ऐसैं आचार्यसमंतभद्रनैं

निरूपणाकीयातबफेरिमानूंनगवानसाक्षातपूज्यजोअत्यंतदोषअरआवरणाकीहानिमोंविषैकोनहेतुतैंनिश्चयकरी। ऐसैंपूर्वफेरिआचार्यसमंतभद्रकहैंहैं। तथा श्लोकादोषावरणयोर्हानिर्निश्शेषास्त्यतिशायनात्। क्वचिद्यथास्वहेतुभ्योवहिरंतर्मलक्षयः॥ अर्थादोषअरआवरणाकीहानिसामान्यतौपाइसिद्धहै। ज्ञातैंएकदेशहानितैंअल्पज्ञानिकैएकदेशज्ञानिदोषपणांअरएकदेशाज्ञानादिकतिसहानिकेकार्यदेखियेहै। यातैंनिनिदोषआवरणाकीहानिसंपूर्णकाश्रविषैसाधियेहै। तथा निश्शेषास्त्यतिशायनऐसाहेतुहैयाका अर्थयऊजोयऊहानिवधतीवधतीदेखियेहै। जैसैंकवितकहियेकहूंकनक [redacted] पाषाणादिविषैकीटकालिमाआदिवाह्यअभ्यंतरमलका अपनाहेतुजोतावदेतैंसर्वथाआ

नावहोयहैतैसैंअल्पज्ञकैतिनिकेज्ञानकेहेतुनेसम्यग्दर्शनादिकतिनितौं
सर्वथादोषअरआवरणाकाअभावहोयहैऐसासिद्धहोयहै।इहांआवरणा।
तौज्ञानावरणआदिककर्मपुद्गलकेपरिणामहैअरदोषअज्ञानरागादिकज १
वकेपरिणामहै।वज्रशिलाकोईकहैतैसैंअतिज्ञायनहेतुतैदोषआवारणा
कीहानिसंपूर्णासाधीतैसैंकहुंबुद्धिआदिगुणाकीहानिबधतीदेखियेहै।सो
यहनीकहुंसंपूर्णासधैहै।ताकूंकहियेबुद्धिआदिकीसंपूर्णहानिआत्माविषै।
साधियेतौआत्माकैजड़पणांआवैसोयहबड़ादोषआवैतातैंजीवपुद्गलकासं
बंधरूपबंधपर्यायमैंज्योंपद्यासरूपबुद्धिहैताकाअभावहोयहैसोआत्मा १२
कास्वभाविकज्ञानादिगुणतौसंपूर्णप्रगटहोयहैअरबंधपर्यायकाअभावा

होया पुद्गलकर्मजड़रूपनिश्चहोयजायहै।तैसैंपुद्गलकैंबुद्धिआदिगुणका
अभावकाव्यवहारहै।ऐसैंवीतरागसर्वज्ञपुरुषअनुमानकरिसिद्धहोयहै।
छा॥ओमीमांसकमतीकहैहै।जोजीवहैसोअभावकर्मअज्ञानादिकतैंरहित
नयाहोयतौकसूक्ष्मादिपदार्थसमस्तकूंतौमांहीजानैंअथवाअन्यपदार्थनि
कूंसर्वकूंजानैंतौजानूंपरंतुधर्मअधर्मकूंतौनांहीजानैऐसैंमानूंजावानकेरिपू
ज्ञातवमानूंकेरिसमंतनऽआचार्यसूत्रकारादिकस्तवनकरनेवालेमुनिनि
कीबुद्धिकाअतिज्ञायजनावनेकीऽछाकरिनावानकूंकहैहै।छाश्लोक।सू
क्ष्मानरितऽरार्थाःप्रत्यक्षाःकस्यचिद्यथा।अनुमेयत्वतोऽग्न्यादिरितिसर्वज्ञा
संस्थितिःप्र।अर्थ।सूक्ष्मकहियेस्वभावकरिपरमाणूआदिकवज्रगि

अंतरितकहियेकालकरिअंतरजिनिकापड्याअैसेरामरावणादिक। वजरि
ष्टकहियेक्षेत्रकरिष्टखतीमेरुहिमवत्आदिकापदार्थहैतेकोईकैप्रत्यक्ष
दृष्टहैजातैंअनुमेयहैअनुमानप्रमाणकेविषयहैजैसैंअग्निआदिकपदार्थ
अनुमानकाविषयहैसोकोईवाकूंप्रत्यक्षनांदेखैहैतैसैंसूक्ष्मआदिकनांहै
अैसैंसर्वज्ञकानलेषकारनिश्चयहोयहै।इंकोईकहैनेपदार्थअनुमांनकेवि हां५
षयहैतेतौकोईकैप्रत्यक्षहै।अरजैअनुमानगोचरहीनांहीतेकैसेंप्रत्यक्षहै २
यातावूंकहियेजोधर्मादिकपदार्थनिकूंअनुमानकाविषयनमानिएतौसर्व
हीअनुमानकाउछेदहोयहैअरइहांधर्मअधर्मपदार्थविवादमेंआयेहैतिनि १३
हींकोसाधियेहै अन्यपदार्थविवादमेंनआयेतिनिकीचरचानांही।अरधर्मादि

कपदार्थहैतेअनुमानकेविषयहैही।जातैंतेअनित्यस्वभावरूपहै।काहूकैसु
स्पष्टहोयतहांजानियेयाकैपुण्यकाउदयहैकाहूकैंऽस्पष्टहोयतहांजानियेयाकै
पापकाउदयहै।अैसैंअनुमानकेविषयधर्मादिकपदार्थहैतातैंकोईकैप्रत्यक्ष
हैअैसैंसर्वज्ञकाअनुमानकरिकैसिद्धपनकीया।छ।।आगैंकैसिमांनूनगवान
पूज्यजोअैसैंसामान्यपणौंतौसर्वज्ञसिद्धनयापरंतुअैसापरमात्माअरहंतही।
है।अैसानिश्चयकैसैंकीयाजातैंतुमारैहमहींमहानवंदनीकउहरैअैसेपूछेसा
तूंकैसिआचार्यजैसैंअरहंतहीसर्वज्ञउहरैअैसासाधनकहैहै।।श्लोक। सत्वा
मेवासिनिर्दोषो।युक्तिशास्त्रविरोधिवाक्।अविरोधोयदिष्टतेप्रसिद्धेनन्नवा
ध्यते।इ। अर्थहेनगवनसकहियेसोपूर्वोक्तनिर्दोषकहियेआवरणअरअ

ज्ञानरागादिकतिनिंतैंरहितश्रैसासर्वज्ञवीतरागुतुमहीहोजातैंकैसेहोतुम
युक्तिअरशास्त्रइनिदोकनितैंविरोधरहितअविरोधीहैवचनजिंकैश्रैसेहो नि२
जैसैंकोईश्रेष्टवैद्यहोयतैसैंइहांनागवानमांनूफेरिपूछ्याजोहेसमंतभद्रमा
रेवचनयुक्तिशास्त्रतैंश्रविरोधीकैसैंनिश्चयकीयेतहांश्राचार्यफेरिकहैहैजो
हेनागवानतुमारागकह्याइष्टतत्वमोक्षश्ररमोक्षकाकारणश्ररसंसारश्रर सं
सारकाकारणएहैसोप्रसिद्धजोप्रमाणताकरिनांहीवाधियेहैजोप्रमाणकरि
नांहीवाध्याजायसोहीयुक्तिशास्त्राविरोधीइहांवैद्यकादृष्टांतश्लोकमैंनाहीहै
तौकश्राचार्यस्वयंभूस्तोत्रमैंश्रापकह्याहै। तातैंश्रष्टसहस्रीटीकामैंकह्याहै १५
वैद्यनीरोगश्ररोगकीनिहतिश्ररतिनिकेकारणविषैनिरावाधपवर्त्तेहैश्रै

सैंवैद्यकादृष्टांतहै। तहांमोक्षादितत्वनिर्वाधकैसैंहैसोदिखावैहै। प्रथमतौन
गवानश्ररहंतकानामामोक्षतत्वहैसोप्रमाणकरिवाध्यानजायहै। इंद्रियज्ञा
निंपरुक्षप्रमाणकातौमोक्षविषयहीनांहीं। वाधकैसैंहोय। वाधकसाधकहो त३ क३
यसोश्रपनेविषयहीकाहोयवक्तरिश्रनुमानकरिश्रागमकरिमोक्षकाश्रस्ति
त्वकास्थापनहैहीकहूंदोषश्रावरणाकाश्रत्यंतश्रभावभयेंश्रनंतज्ञानादिक
कालानमोहीमोक्षश्रनुमानश्रागमतैंप्रसिद्धहै। तैसैंहीमोक्षकाकारणतत्वसा
म्यग्दर्शनज्ञानचारित्रहैतेनीप्रमाणकरिसिद्धहै। जातैंकारणविनाकार्यका
नहोनांप्रसिद्धहै। वक्तरिसंसारतत्वहैसोनीप्रमाणकरिवाध्यानजायहै। श्र
नेनउपायेकेवशतैंश्रात्माकैएकनवतैंश्रष्टनवकीपानिसोसंसारहैसोप्रत्य

तश्चनुमानकातौविषयहीनांहीतिनिकीबाधाकैसैंआवै। वज्रशितिनिकाविष
यहोयतौतेसाधकहीहोयाबाधकतौनहोयावज्रशिआगमतैंसंसारखंडसिद्धहै तर
हीवज्रशिसंसारकाकारणतत्वनीपमाणबाधितनांहीहै।जातैंकारणविनांकार्य
होयनांही। मिथ्यात्वादिकसंसारकेकारणपमाणसिद्धहै।श्रैसैंमोक्षमोक्षका-
कारणश्ररसंसारसंसारकाकारणतत्वपमाणकरिबाधनजायहै। तातैंनगाव २
नश्ररहंतकेवचनयुक्तिशास्त्रतैंबाधनजायहै।सोश्रैसेनिर्बाधवचननगावा-
नकेनिर्दोषपणांकूंसाधेहीहै।ऽकोईकहैसर्वज्ञवीतरागकैइच्छाविनाउपदेश-
शरूपवचनकीपवृत्तिकैसैंसंनवैताकूंकहिएवचनपवृत्तिकूंकारणनियम १५
करिइच्छाहीनांहीहैविनाइच्छाभीवचनपवृत्तिहोयहैश्रैसैंसूताश्रादिककैइ

च्छाविनांवचनपवृत्तिहोयहैतैंसैंजाननांयातैंसर्वज्ञवीतरागजानावानस्तुतिकर
नेयोग्यहै।यातैंहेनगवनश्रैसेतुमहीमोक्षमार्गकेप्राप्तकरैनेंवालेहोश्रन्यक
पिलकहियेसांख्यमतीश्रादिकश्रैसेनांहीहैसोहीकहैहै। ज्ञानश्लोकात्वन्मता
मृतबाह्यानांसर्वथैकांतवादिनांश्राप्ताभिमानदग्धानांस्वेष्टदृष्टेनबाधतेशा
श्रर्थ।हेनगवन्तुमाराशमतश्रनेकांतस्वरूपवस्तुहैतथाताकाज्ञानहैसोय
ज्ञश्रमृतजोमोक्षताकाकारणहै।यातैंयज्ञमतनीश्रमृतहै।सर्वथानिर्बाधहै
तातैंनयजीवनिकैपरितोषउपजावनहाराहैयातैंबाह्यसर्वथा एकांतहैति
सकेश्रनिप्रायवालेतथाकहनेंवालेसांख्यश्रादिमतकेपरूपककपिलश्र २
दिकहैतेश्राप्तपणांकेश्रनिमानकरिदग्धहैजातैंतेश्रैसैमांनैहैजोहमश्राप्त

है। अरबाधासहितसर्वथाएकांतकेकहनेवालेहै। तातैंकूंठाअनिमांनकरि
दाधहैतिनिकामानाखेष्टतत्वहै। सोसर्वथासत्सर्वथाअसत्सर्वथाएकस
र्वथाअनेकइत्यादिकहैसोदृष्टकहियेप्रत्यक्षप्रमांणकरिबाधाजायहै। जातैं
सकलबाह्यअंतरंगवस्तुहैसोअनेकांतस्वरूपहै, समस्तजगतकेजीवनिकै।
अनुभवमैंऐसाही आवैहै तातैंहमनीसर्वथाएकांतरूपनांहीदेषैहै। औसैंप्रत्
क्षप्रमांणकरिबाधितहै। बा॥ष्यौ आत्मांकाअपजैहैजोसर्वथाएकांतवादीनिकै
नीपुन्यापुन्यरूपकुशलाकुशलकर्मकीवज्रशिरलोककीप्रसिद्धहैयातैं।
आप्तपरमेष्ठीहैंतातैंमहानपरमस्तुतियोपक्षीनांहीऐसीआत्मांकाहोतैंआ
चार्यकहैहै॥ श्लोकाकुशलाकुशलकर्मपरलोकश्चनक्वचित्एकांतग्रहर

क्तेषु॥ नाथस्वप्नरवैरिष्वा॥ अर्थ। हेनाथजेसर्वथाएकांतकेहठमैंअशक्तहै
अथवासर्वथाएकांतरूपपिशाचकैवशीभूतजिनिकाअनिष्टायहैतिनिवि
षैंकुशलकहियेकल्पांतस्वरूपपुन्यकर्मअरअकुशलकहियेअकल्पांतस्व
रूपअपुन्यकर्मावज्रशिरलोकतथापरलोककाकारणधर्मअधर्मवज्रशिरो
क्तआदिएकहूंहीनांहीसंनवैहैजातैंकैसेहैतेस्वकहियेआपकेअरपरकैवैरी
नैसैंशून्यवादीसर्ववस्तुकूंशून्यमांनिआपकाअरपरकानाशकरैहैतैसैंहै। त
होंस्वतैंकहाअरपरकहासोकरैहैपुन्यपापरूपतैंकर्मअरतांकाफलसुख
दुखरूपकुशलअकुशलअरतिसकासंबंधरूपरलोकाएतैंस्वहै। जातैंइनि
कूंसर्वथाएकांतवादीमांनेहैवज्रशिरनिकैअनेकाएहैजातैंतिनैंअनै

कांतमें मानो नांही। वज्रशिलानेकोतकानेनिषेधकरेहै। तातैंहेअनेकांतकेवै
रीहै। सोयहपरकोवैरीपणांहैसोहीआपकेवैरीपणांकोसाधेहै। जातैंअनेकां
तनमानातवसर्वथासत्रूपतथासर्वथाअसत्रूपतथासर्वथानित्यरूपतथा
सर्वथाअनित्यरूपअैसातत्वमानतवथैसेवस्तुमैंअर्थक्रियाकाअभावसिद्धहो।
यहै। अरअर्थक्रियाविनांपुण्यपापकर्मआदिकनांहीसिद्धहोयतवअनेकांतम १
न्यांविनांपुण्यपापआदिकीसिद्धिनहोय। तवपरकेवैरीपणांतैंआपनांवैरीपणां।
सिद्धभया। अैसैसर्वथाएकांतवादीनिकैपक्षमेंअनुमानप्रमाणकरिविरुद्धभा
षीपणांहैयातैंअज्ञानादिदोषनिकीसिद्धिहै तातैंआप्तपणांवणैनांही। यातैंहेन १७
गवनतुमअरहंतहीसर्वज्ञवीतरागयुक्तिशास्त्रतैंअविरोधीवचनपणांकरिनि

र्दोषहोअैज्ञानिश्चयकरितत्वार्थशासनकाआरंभविषैमुनिनिमैंतुमकूंस्तव
नगोचरकीयेहैजातैंतुमहीतत्वार्थशासनकीसिद्धिकेकारणहौ॥छ॥आगैंनगव १
नमांमूफेरिपूछैहैजोहेसमंतभद्रदीर्थनिकाभावहीहै॥अभावनांहीअैसानि।
श्चयहोतैंपरमज्ञअनुमानतैंविरोधकाअभावहैयातैंनाएकांतवादीनिकैनि
र्दोषपणांकीसिद्धितैंआप्तपणांवणैंहैनातैंतिनिकैस्तुतियोग्यपणांहोऊअैसैपू।
छेमांमूफेरिआचार्यकहैहै॥श्लोक॥नावैकांतेपदार्थानांमानाभावात्मकेसति।
सर्वात्मकमनाद्यंतमस्वरूपमतावकं॥१॥अर्थ॥हेभगवन्पदार्थनिकैभाव।
एकांतहोतैंअभावनिकालोपभया॥यातैंसर्वात्मकअनाद्यंतअैसावहस्वासो।
अैसावस्तुकानिजरूपनांहीसोतुमारामतनांही। तहांसांख्यमतमैंतौपदार्थपर्यो

समानैहै। तहांमूलप्रकृति। कविकाररहिता॥१॥एकमहान्सोउ तिविनाज्ञा
पर्यंततिष्ठनैंकालीवृद्धि॥१॥तिसवृद्धितैंउपजैंश्रैसाअहंकारा॥१॥गंधरूपरसस्प
र्शशब्दश्रैसैंतन्मात्रापंचा॥५॥श्रैसैं। एमातुप्रकृतिकीविक्रतिवक्रिवृद्धिड्डिय।
कर्मेंद्रिय।पांतन्मात्रातैंनयेपंचभूतश्रष्ठीश्रपतेंनवायुश्राकाशश्रैसैं। पांश्रा
१। एकमनश्रैसैंषोडशकयाकूंविकारकहैहै। वक्रशिप्रकृतिविक्रतितैंरहित
१। एकपुरुष॥१॥श्रैसैंपचीसनयो। इनिकाश्रस्तित्वहीहैनास्तित्वनाहीश्रैसैंनाव।
१। कांतहैसोश्रैसामांनेंव्यापिकारश्रूनावहै। ताकालोपहोपतवदूतरेतरना
वकालोपतैंतोसर्वात्मकंकहियेपचीसतत्वका१। कतत्वहरैतवनेंदका
हनेंकाविरोधश्रावै। वक्रशिश्रसंतानावकालोपतैंप्रकृतिकैंपुरुषकाश्रसंत

१८

श्रनावहैताकूंनमांनियेतवप्रकृतिकैंपुरुषस्वरूपपणाश्रावै। तवप्रकृतिपुरु
षकानिन्नलक्षण१। कहनेंकाविरोधश्रावै। वक्रशिश्रसंतानावकेलोपतैंप्रकृतिकैं।
महान्तनयामहानतैंश्रहंकारनयाश्रहंकारतैंषोडशक१। णानया। पंचतन्मात्र
तैंपंचमहाभूतनये। श्रैसैंमृष्टिकातपनमांकहनांनिषेध्याजायतवा१। सर्वश्र
नादिकेवहरै। वक्रशिप्रसंसानावकेलोपतैं१। महानश्रादिकहैतेश्रर्वनाशरहि
तवहरै। तवप्रलयकाकहनांमिथ्यावहैरैप्रथ्वीश्रादिमहाभूततौपंचतन्मात्रामैल
यहोयहै। वक्रशिषोडशग१। श्रहंकारमैलयहोयहै। श्रहंकारमाहानमैलयहोय
है। महानप्रकृतिमैंलयहोयहैश्रैसैसंहारकाकहनांविगडैहै। श्रैसैसांष्यमतीत
त्वकास्वरूपकहैहैसोयक्रतत्वकानिजस्वरूपनांहीनांतैंश्रस्वरूपहैश्रैसैंहीश्र

१८

अभावका कांतवादीनिकेमतमैंदोषआवैहै। अभावनमानैंतवकेवलभाव-
मानैंकाहूकानिषेधनहौयातवाकूंरूपतत्वग्रहरैसोहैनांहीवेदांतवादीतो
सन्मात्रएकब्रह्मकूंतत्वमानैंहै॥ अरविज्ञानाद्वैतवादीबौद्धमतीविज्ञानमात्र ३२
एकतत्वमानैंहैअरशैदभावकूंअविद्यारूपवस्तुमात्र॥ वस्तुभानैंहैसोअैसा- ३४
तत्वकाहूएकारसिद्धहोयनांहीतातैंसोतुमाराअरहंतकामतनांही॥ जातैंतु
माराभतमैंकथंचित्अभावकालोपनांहीहै॥ ब्या॥ मौद्गरादिकैबकरिआदि
दिकैपाषाणभावअरध्वंसाभावकालोपकहनेवालावादीकैदूषणदिषावते
संतेकहैहै॥ श्लो॥ कार्यद्रव्यमनादिस्यात्प्रागभावस्यनिह्नवेप्रध्वंसस्यधर्म १७
स्यात्प्रच्यवेऽनंततांव्रजेत्॥१७॥ अर्थ॥ प्रागभावकहियेकार्यकैपहैलैंनहो।

नांताकानिह्नवकहियेलोपताकेहोतैंकार्यद्रव्यकहियेघटआदिकतथाघट
दिकवस्तुसोअनादिकैठंहरैसोअैसैहैनांहीयहदोषआवै॥ बहुरिप्रध्वंसका
हियेकार्यकाविघटनांनामाधर्मताकाप्रच्यवकहियेलोपहोतैंकार्यद्रव्यहैसोअ
नंततांकोपावैहोयअविनाशीठहरैसोहैनाही॥ यहदोषआवैहै॥ तहांघटादिक
कार्यद्रव्यकैअनादितातथाअनंततांकासंगकाउदाहरणतौसांख्यमतकी
अपेक्षाहै॥ बहुरिब्रह्मादिकार्यद्रव्यकैअनादितातथाअनंततांकासंगका
उदाहरणमीमांशकमतकीअपेक्षाहैइनिकीचर्चाअष्टसहस्रीटीकातैंजान
नी॥ ब्या॥ औरैइतरेतराभावअरसंतीभावनमानैंवालेवादीनिकैदूषणदिषावे
नेकीइच्छाकरिआचार्यकहैहै॥ श्लो॥ सर्वात्मकंतदैक्यस्यादन्यापोहव्यति

क्रमो॥अन्यत्रसमवायेनाव्यपदिश्येतसर्वथा॥१२॥अर्थ॥अन्यापोहकहियेअ
न्यस्वभावरूपवस्तुतैंअपनेस्वभावकानिश्चयाकूंइतरेतरभावकहियेया
कायतिक्रमकहियेलोपताकेहोतैंतत्कहियेसर्ववादीनिनैंसांख्योवस्तुक
निन्निन्निस्वरूपसोसर्वएकसर्वात्महोयजायगहदोषआवै॥आपनमान्याअ
सापरकामान्यातत्वसोभीआपकामान्यागहरै॥अैसैंसर्वात्मकगहरै।वज्र
रिआपनैंसमवायीपदार्थकैंअन्यसमवायीपदार्थविषैंसमवायहोनांसोअ
यंतानावकालोपहैताकूंहोतैंसर्ववादीनिकाइष्टतत्वव्यपदेशकहियेनाम
ताकूंनांहीपावैहै।अपनांमान्यास्वरूपविषैंपरकामान्यास्वरूपकानीनाम।
कापशंगाआवैहै॥आपकैंइष्टतथाअनिष्टतत्वविषैंतीनकालविषैंनीविरो।

षकामांननांनगहैरैहै।यहदोषहैइहांकोईपूछैपाराभावअन्यअंसाभावमैंअर
इतरेतराभावमैंविशेषकहाहै।तहांअन्यअनोकार्यद्रव्यघटादिकताकैंपहैलै
अवस्थाधीसोतीपाराभावहै॥वज्रकिकार्यद्रव्यकैंपीछैजोअवस्थाहोयसोघ।
अंसाभावहै।वज्रकिइतरेतराभावहैसोअैसैंनांहीहै॥जोदोयनावरूपवस्तुन्या
रेन्यारेयुगपतदीषैतिनिकैंपरस्परस्वभावनेदकरिवाकानिषेधवांसैंवाकानि
षेधवांमैंअैसाइतरेतराभावहैयहविशेषहै।सोयहतोपर्यायार्थिकनयपधा
नकरिपर्यायनिकैंपरस्परअभावजाननांवज्रकिअंसंतानावहैसोद्रव्यार्थि
कपधानकरिहै॥अन्यद्रव्यकाअन्यद्रव्यविषैअंसंतानावहै।ज्ञानादिकतौ।
पुद्गलद्रव्यमैंकारूकालमैंहोयनांही।वज्रकिरूपादिकजीवद्रव्यविषैकाहूका

MEMORIAL LIBRARY

लमैहैयनांहीश्रैसैंइतरेतरानावश्रश्रयंतानावादोक्रश्रनावनमांनियेतै २
सर्वतत्वकाएकतत्वहोयनायश्रश्रपनांपरकाइष्टतत्वकीव्यवस्थानवह
रैश्रैसैंदोषश्रावैहैतातैश्रनावकूंकथंचित्नावकीज्योंवस्तुकाधर्ममाननां
योग्यहै॥छा॥श्रौरश्रनावाएकांतपक्षविषैइषणादिषावैहै॥छा॥श्लोकाश्र
नावैकांतपक्षेपिनावाएकवादिनांवोधवाक्यंप्रमाणंनकेनसाधना
इषणं॥१२॥श्रर्थ॥श्रनावकहियेकिछूनीवस्तुनांहीश्रैसाश्रनावाएकांतप
क्षहैतांकेहोतैनावकालोपनयासोइसनावकैलोपकहनेवालेवादीनिकै
वोधकहियेज्ञानजिसतैश्रपनांश्रर्थतत्वकासाधनइषणकरिये श्रथवा २१
एकहियेपरकाश्रर्थतत्वकासाधनइषणरूपवचनइनिकाश्रनावनया

तवप्रमाणकीव्यवस्थानवहरी॥तवश्रपनांश्रनावाएकांतपक्षकाहैतैथा
षै॥श्रपरकानावपक्षकाहैतैदूषावकरिजोखपरपक्षकासाधनइषणमां
नियोतौनावपक्षकीसिद्धिहोयहैश्रैसाइषणश्रावैहैतातैश्रनावाएकांतपक्ष
कल्पणकारीनांहीहै॥छा॥श्रौरश्लोकहैहैजोपरस्परश्रपेक्षारहितनावनाव
पक्षवाश्रवक्तव्यपक्षनीकल्पणकारीनांहीहै॥श्रैसैस्वामिसमंतनद्रश्चार्यक
हैहै॥श्लोनविरोधान्नोनयैकांतां॥स्याद्वादन्यायविद्विषां॥श्रवाच्यतैकांतेप्य
क्तिर्नावाच्यमितियुज्यते॥१३॥श्रर्थ॥इनयकहियेनावश्रश्रनावाएकां
तोकात्मंकहियेएकस्वरूपसोनांहीहै॥जातैस्याद्वादन्यायकेविद्विषकहिये
शत्रुविरोधीतिनिकैनावश्रनावादो[illegible]

कणकस्वरूपकहनेमैंपरस्परपरिहारस्थितिलक्षणविरोधआवैहै।वक्तरि
अवाच्यकहियेकहनेमैंनआवैऐसाअवक्तव्यणकांतमानियेतौवक्तअव
क्तव्यहैऐसाकहनांनीयुक्तनहोयहै।तहांऐसाजाननांजोनावपक्षमैंअरअ
नावपक्षमैंन्यारेन्यारेमानेदोषआयातातांकेइकरनेकीइच्छाकरिदोकू
णकस्वरूपमांनेनेवालेकैविधिनिषेधकैपरस्परपरिहारस्थितिस्वरूपप
णांहै।तातैंदोकूंणकरूपमाननांयुक्तहोयनांही।तातैंविरोधदूषणआ
वैयातैंऐसामाननांकल्पणरूपनांही।वक्तरिनावअनावअरदोकूंइनि
नीमूंहीपक्षमैंदोषआयातांनिअवक्तव्यणकांतपक्षग्रहणकरैतांकैअव। २२
क्तव्यतत्वहै।ऐसाकहनांनीनवणै। तवपरकूंअपनांअवक्तव्यतत्वकैसैं।

जनावैं।वचनविनाज्ञानमात्रहीतैंतौपरकूंजनावनांवणैनांही।तातैंअवक्त।
व्यणकांतमाननांनीकल्पणकारीनांही। इहांआचार्यफेरिमांनूंनावानपूछ्या
जोहैसमंतभद्रजावअनावैंनावअवक्तव्यइनिकांतमानैहै।तिनिपक्षनिमैंतौ
दूषणदियापरमतकानिराकरणकीयापरंतुवादकीजातितौपरमतकर
निराकरणअरस्वमतकास्थापनइनिदोकूंनिकैआधीनहैतातैंहमाराइष्ट
तत्वमतहैसोकैंसेंसिद्धभणाकरिनांहीवाधाजायहैसोकहोऐसैंपूछेमानूं
आचार्यजावअद्यिस्वरूपकथंचित्तनिर्वाधदिखावैहैश्लोकाकथंचित्सदे
वैहेकथंचिदसदेवतत्तथोभयमवाच्यंचानययोगाच्चसर्वथाधाअर्थ।हेन
णवनतुमाराइष्टतत्वहैसोकथंचित्कोईएकारसदेवकहियेंसतहीहै।वक्तरि

कथंचित्सदेवकहियेईषत्कारसत्हीहै।वक्तरितैसैंहीकोईषत्कारसत्
यमेवकहियेकोईषत्कारसत्सत्दोकहीहै।वक्तरितैसैंहीस्यात्वाच्यंकहिये।
कोईषत्कारस्यवक्तव्यहीहै।वक्तरिचकारकरितैसैंहीकोईषत्कारसत्स्यवक्त
व्यहीहै।वक्तरितैसैंहीकोईषत्कारस्यसंस्यवक्तव्यहीहै।वक्तरितैसैंहीकोईषत्कार
सत्स्यसत्वंवक्तव्यहीहै।सोश्रैसाकाहेतैंहे।नययोगात्कहियेईष्यार्थिकपर्या
यार्थिकस्यादिनयनिकेयोगतैंहै। इहकोईषत्कारकाप्रयोजनहै।वक्तरिकोईष
कारकहनेतैंसर्वथाकानिषेधनयास्तीकफेरिसर्वथानांहीहैश्रैसानियमकै
श्रर्थिवचनहै।श्रैसैंघटकेवशतैंएकवस्तुविषैंश्रविरोधकरिविधिप्रतिषेध
कीकल्पनातैंसप्तभंगकीप्रवर्त्तिहोयहै।श्रैसैंनयवाक्यमतहीहै।विधिनिषे

धकेभंगसातहीहै।इनितैंश्रनांहीहोयहै।जोसंयोगभंगकीनियेतौइनिहीमैंश्र
तभूतहोयहै।तथाकोईपुनरुक्तहोयहै।वक्तरिसातषकारवस्तुधर्महै।श्रसा
त्कल्पनांहीहै।इनिहीतैंवस्तुकायथार्थज्ञानश्रवस्तुकैश्रर्थक्रियारूपेट
तिकानिश्चयहोयहै।इनिमैंसत्स्यवक्तव्यतीनभंगतौएकएकहीहै। वक्तरि
सत्स्यसत्क्रमकरिकहनांश्रसत्स्यवक्तव्यश्रसत्स्यवक्तव्यतीनद्विसंयोगी
है।वक्तरिसत्स्यसत्स्यवक्तव्यइहएकत्रिसंयोगीहै।तिनमैंसत्स्यसत्क्रम
करिकहनातीनतौवक्तव्यकैनये।श्रएकश्रवक्तव्यका।श्रैसैंव्याख्यातौ
श्रवक्तव्यश्चवक्तव्यकासंयोगभंगकरनैतैंतीनफेरिएश्रैसैंसातभंगनयेहै
इहांसत्श्रादिशब्दहैतैंतौश्रनेकांतकैवाचकहै।श्रएकथंचित्शब्दहैसोश्रनेकं

तकाद्योतकहै।वक्रियाकैश्रौ।वकारश्रद्दैसोश्रवधारणकहियेनियमकै
श्रर्थिहोयहै।वक्रियद्दकथंचित्श्रद्दैसोयाकापर्यायश्रद्दस्यात्श्रैसाहैसोसै
र्ववचननिपरिलगाईहै।सोजहांयाकाप्रयोगनांहीहोयतहांनीजेस्याद्वाद्न्याय।
मैपवीगहै तैसामर्थैसूंजानिलेहैस्यात्श्रद्दविनांसर्वथासतरूपहीवस्तूंहैइत्या
दिकहनेमैश्रनेकदोषश्रावैहैतिनिकीचरचाटीकातैंजाननीं॥८॥श्रौघद्दली
कारिकामैंनयप्रयोगकह्यासोश्रवपद्दलेइसरैनंगविषैनयौप्रयोगदिषावैहै॥श्लो
क॥सदैवसर्वकोनेच्छेत्॥स्वरूपादिचतुष्टयात्॥श्रसदैवविपर्यासान्नचेन्नव्य
वतिष्ठते॥१०॥श्रर्थ॥स्वरूपादिचतुष्टयातकहियेश्रपनेंद्रव्यक्षेत्रकालभावरू
पचतुष्टयतैंसर्ववस्तूंसतद्दहैं।श्रैसैलौकिकजननतथापरीक्षकजननश्रैसाकौनहै

जोनांहीइष्टकरैहैसर्वद्दीमांनैहै।वक्रशिविपर्यासातकहियेपरकेद्रव्यक्षेत्रकाल
भावरू[redacted]पचतुष्टयतैंश्रसतद्दहैं
श्रैसैंसर्वद्दीमानैंहै।इद्दांसर्ववस्तुकद्दनैंतैंचेतनश्रचेतनद्रव्यतथापर्यायतथा।
द्वंतश्रद्वैततथाश्रापकैंइष्टतथाश्रनिष्टइत्यादिजाननैं।जातैंजोपतीतिसैंश्रा
वैताकालोपकरनैंकाश्रसमर्थपणांहै।वक्रशिक्रुनयकशिविपर्यस्तनईकैंबु
द्धिजाकीश्रैसाकोईइमतीनांहीइष्टकरैनमानैंसोकाहूद्दीइष्टतत्वविषैनांहीसिद्ध
है।जातैंवस्तुविषैंजोवस्तुपणांहैसोश्रपनांस्वरूपकातोजथोद्यनकहियेग्रहु
णश्रपरकेस्वरूपकाश्रयोद्दनकहियेत्यागदोऊव्यवस्थाकरिवद्दरैहै।जोश्र
पनेंस्वरूपकीज्योंपररूपकरिभीसत्वमांनियेतौचेतनादिककैश्रचेतनादिक

DR. BHANU DAN

देवाग० २५

[redacted]पणांकाप्रसंगआवैवक्तरिपररूपकीज्योंस्वरूपकरिनीआ
सत्वमांनियेतौसर्वथाशून्यपणांकीप्राप्तिआवैसैंहीस्वद्रव्यकीज्योंपरद्रव्यकरि
नीसत्वमानियेतौनिजद्रव्यन्यारेन्यारेनवहरैवक्तरिपरद्रव्यकीज्योंस्वकरि ६त्व२
नीकोईकैंअसत्वमांनियेतौसत्काद्रव्याअन्यनवहैरैतैसैंहीअपनेक्षेत्रा
कीज्योंपरक्षेत्रतैंनीसत्वमानियेतौकाहूकान्याराक्षेत्रनवहैरैवक्तरिपरक्षेत्र
कीज्योंअपनेक्षेत्रतैंनीअसत्वमानियेतौक्षेत्रविनाद्रव्यवहरैतैसैंहीअपनेका
लकीज्योंपरकालतैंनीसत्वमानियेतौअपनांअपनांन्याराकालनवहरैवक्त
रिपरकालकीज्योंअपनेकालकरिनीअसत्वमानियेतौवस्तुकासकलकाल २५
विषैअंसनवीपणांवहरै।ऐसैंवहद्रमतीकहांतिहैअपनापरकाद्वैअनिष्ट

कीव्यवस्थाविनांकहूंवहरनांनाहीं।तातैंवक्तनलेपकारकद्वाद्वावणैहै।जो
सत्असत्एकवस्तुमैंनमानियेतौस्वपरसत्वकीव्यवस्थानवहैतवसर्वथा
एकांतीकहूंवहरैनांहीं।छ।आगैंऐसैंप्रथमद्वितीयभंगकास्थापनकरिश्रव
इतीयादिभंगनिकूंआचार्यनिर्देशकरैहै।श्लोक।क्रमार्पितद्वयाद्वैतं।सहा
वाच्यमशक्तितः।अवक्तव्योत्तरांशेषा।स्वयोभंगास्वहेतुतः।१६।अर्थ।क्रमार्पि
तकहियेपहलैंन्यारेकहेनेसत्असत्दोकअनुक्रमतैंकहनेतैंवस्तुद्वैतहै।
वक्तरिसत्असत्एदोकसहकहियेयुगपत्एकैंकालअवाच्यकहियेकहनें
मैंनआवैजातैंयुगपत्कहनेकीवचनकैसामर्थ्यनांहीतातैंअवक्तव्यहै।वक्त
रिशेषाकहियेअवशेषनेतीनभंगअवक्तव्यहैवस्तुपदार्थनिकैंऐसेतेअपनें

देवाग० २६

अपनेंतुतैंतेणें॥तहांअनुक्रमकरिअर्पणाकीयाजोस्वरूपादिअरपररूपादि
काचतुष्यद्रव्यक्षेत्रकालभावकाश्रिकतातैंतोकोईएकारसतअसतअैसादो
ऊकाएकनंगहैयाकोंद्वैतअैसानामकह्यासोर्द्वतज्ञानप्रत्यक्षस्वार्थविषैअणव्य
त्ययकरिद्वैतज्ञानउपजायहै।वक्रश्रिअपनांपरकास्वरूपादिचतुष्यअपे
क्षाएककालकहनेंकीअशक्तितैंअवक्तव्यहै॥जातैंतिसप्रकारकहनेवाला
पदतथावाक्यकाअभावहै।वक्रश्रिवाकीतीननंगपांचवाछठवासातवासत्अ
सतउभयइनिकैअवक्तव्यउत्तरपदलगायअपनेंहेतुकैवशतैंकहनेंकोई तेंकैसैं३ २६
एकारसतअवक्तव्यहीहै।जातैंस्वरूपादिचतुष्यकीअपेक्षातौसत्अैसाव
क्तव्यहै॥परंतुसतअसतअैसैंदोऊएकैंकालवस्तुमैंहैतातैंएकैंकालकहे

नहींजायहै॥तातैंअवक्तव्यनीहै।अैसैंयक्रपांचवानंगहै।वक्रश्रिअैसैंहीकोई
एकारअसतअवक्तव्यहीहैजातैंपररूपादिचतुष्यकीअपेक्षातौअसत्अैसा
कह्याजायहै।अरसतअसतएदोऊएकैंकालहैपरंतुएकैंकालकहेजातेनां
हीं॥तातैंअसतअवक्तव्यहैअैसैंछठानंगहै।वक्रश्रिकोईएकारसतअसतअ
वक्तव्यहीहै।जातैंसतअसतएदोऊक्रमकरिकहेजायहै।अरदोऊकैंकालक
हेनजायहै।तातैंसतअसतअवक्तव्यअैसासातमानंगहै अैसैंएवक्तव्यवक्तव्यरू
पतीननंगपूर्वोक्तव्यारिनंगनितैंन्यारेहीहैं।वक्रश्रितिनिमैंसतअसतउभयइनि
तीनैमैंएकनहोयतौअवक्तव्यधर्मवतौनांहीं॥जातैंतिनितीनूंनिकूंहोतैंनीति
निकोविरुद्धानकरतैंकेवलाकत्यारीहीअवक्तव्यनांकहनेमैंविरोधनांहीं

देवाग०
२७

है श्रैसैं इनिनं गनिकी स्वमतपर्मतश्रपेक्षासंनवनेकी वस्त्वाश्रइसहस्रमैंहैत
हांनैंजाननी।ब।श्रौरकैहैजो वस्तुका स्वरूपश्रस्तित्वहीहै नास्तित्व वस्तुका स्व
रूपनांहीहै नास्तित्वहैसोपरवस्तुकास्वरूपकैश्राश्रयहै।।कहीवस्तुकैश्राश्र
यहोनेमैंश्रतिप्रसंगदूषणाश्रावैहै श्रैसीतर्कहोनैंश्राचार्यकहैहै।।स्यान्श्रस्तित्व।
प्रतिषेधेनाविनाभावेकधर्मिणि।विशेषणत्वात्साधर्म्यंयथानेदविवक्षया
१७।।श्रर्थ।।श्रस्तित्वधर्महैसोएकधर्मीजोजीवश्रादिकतावर्षैंप्रतिषेधजोश्रस्ति
त्वकैनास्तित्वताकरिश्रविनाभावीहै नास्तित्वविनांश्रस्तित्वनांहीहोयदोकका।
निन्नश्राधारनांहीजातैयाश्रास्तित्वनास्तित्वकैविशेषणपणांहैजोविशेषणहो २७
यसोएकधर्मीविषैंश्रपनांप्रतिषेधधर्मसूंश्रविनाभावीहोया जैसैंहेतुकाधर्यो।

गविषैसाधर्म्महैसोनेदविवक्षाकहियेवैधर्म्यताकरिश्रविनाभावीहै।यहसर्वहे।
तुवादीनिकैंयसिद्धहैजाहांश्रन्वयहोयतहांव्यतिरेकनीहोयजैसैंघटविषैंश्रस्ति
त्वहै।तैसैंयहपटनांहीहैश्रैसानास्तित्वनीहै।जोयहनास्तित्वनांहीहोयतोघटपा
टनीहोयजाया।श्रैसैंश्रस्तित्वधर्महै।सोएकधर्मीविषैंनास्तित्वधर्मकरिश्रविनाभा १
वीजांननी।।ब।।श्रौरकैरिपूछैजोश्रस्तित्वतौनास्तित्वकरिश्रविनाभावीहोइश्रर
नास्तित्वश्रस्तित्वकरिश्रविनाभावीकैसैंहोयश्राकाशकेफूलकैतोश्रस्तित्वकी
ईषकारनीसंनवैनांही।वाकैंतोनास्तित्वहीहै।श्रैसैंपूछेंश्राचार्यकहैहै।।स्यो
नास्तित्वंप्रतिषेधेनाविनाभावेकधर्मिणि।विशेषणत्वाद्वैधर्म्यंयथानेदविवक्ष
या।।१८।।श्रर्थ।।नास्तित्वधर्महैसोश्रस्तित्वधर्मताकरिएकधर्मीविषैंश्रविनाभावी

हैजातैंयहविशेषणहैनैसैंहेतुकेप्रयोगविषैंवैधर्म्यहैसोअनेदविवक्षाकरि
यैसाधर्म्यरूपपतिषेध्यधर्मकरिअविनाभावीहै।यहसर्वहेतुवादीनिकैप्रसिद्धहै
नैमैंशब्दकैअनित्यपणांसाधनैविषैकृतकपणांहेतुआकाशादिविपक्षमैंवैधा-
र्म्यरूपहैसोघटादिसपक्षतैंयसमानधर्म्मरूपजोसाधर्म्यताकरिअविनाभावीवि
शेषणहै।अैसाउदाहरणजीवादिकधर्मीविषैंपररूपादिकरिनास्तित्वकूंस्व
रूपादिकरिअस्तित्वकरिअविनाभावीसाधैहींहै।इहांभावार्थअैसाजोअस्तित्वना
स्तित्वदोऊपरस्परविधिनिषेधस्वरूपहैसोविधिविनांनिषेधनांहीं।निषेधविनाविधि
विनांहीं।आगैंपूछैहैजोअस्तित्वतौविशेषणहैंविशेष्यनांहींहैतातैंअस्तित्वना- २८
स्तित्वकैअविनाभावीसाधनैंकूंदोयकारिकाअनुमानप्रयोगकीकहीसोविशेषण

रूपधर्मतौसाध्यसाधनकैआधारहोयनांहीं।तातैंअनुमानप्रयोगकैसैंवणैं।कोई-
तौअैसैंकहैहै।वऊरिकेईअैसैंकहैहैंजोवस्तुकास्वरूपतौवचनगोचरनांहीं।ता
तैंकहनांनवणैं वऊरिकेईअैसैंकहैहैंजोजीवादिकवस्तुकैअत्यंतनेदहीहै जै
सैंघटनिन्नहै तातैंअस्तित्वनास्तित्वनिन्नहींहै। तिनिस्वरूपवस्तुनांहीं।अैसैंक
हनैंवालेनिषतिआचार्यकहैहै॥श्लो क॥विधेयप्रतिषेध्यात्माविशेष्यःशब्दगो-
चरः।साध्यधर्मोयथाहेतुरहेतुश्चाप्यपेक्षया॥१॥अर्थ॥विशेष्यकहियेविशे
षणकैयोग्यसर्वजीवादिकपदार्थहैसोविधेयकहियेविधिकैयोग्यअस्ति
त्वधर्मअरप्रतिषेध्यकहियेनिषेधयोग्यनास्तित्वइनदोऊधर्मनिस्वरूपहैं।जा
तैंविशेषणकैयोग्यविशेष्यहोयसोअैसाहींहोयवऊरिइसविशेष्यपणांकैसा-

धनेकूं हेतुरूपविशेषणहै। कैसाहैविशेष्यशब्दगोचरःकहियेशब्दकाविषयहै
जोशब्दकरिकहियेऐसाविशेष्यविधिप्रतिषेधस्वरूपहीहोयाअवयाकाउदाह
रणकहैहै। जैसैंसाध्यकाधर्मऐसाहेतुहैसोअपेक्षाकरिविधिप्रतिषेधस्वरूपा-
हीहोयजासाध्यकूंसाधैतहांतौहेतुहोया अरजासाध्यकूंनसाधैतहांसोहीअहेतु
होया जैसैंशब्दकूंअनित्यसाधियेतवकृतकपणांताकाधर्मकूंहेतुकहियेसो।
ताकैअनित्यपणांसाधैवकृरिसोहीकृतकपणांशब्दकूंनित्यसाधनैमैंअहेतुहो
याततथांजहांअग्निमांनपणांसाधियेतहोधूमवानपणांहेतुहैसोहीताकैविपक्ष
जलकैनिवाशविषैंअहेतुहैऐसैंजाननां। ऐसैंविधिप्रतिषेधस्वरूपजीवादिप २१७
दार्थीहैसोशब्दगोचरहैऐसासिद्धहोयहै।।८।।श्रीगौतमूछेहैजोयाज्ञिनांतौस्यश्च।

कीयेअरशेषकहियेवाकीतीननंगकैसैंपानकरणैंऐसैंपूछेआचार्यउत्तर।
कहैहैं।श्लोक।। शेषनंगाश्चनेतव्यायथोक्तनययोगतःनचकश्चिद्विरोधोस्ति।
मुनींद्रतवशासनेा।२०।अर्थ।।शेषनंगाकहियेवाकीतीननंगहैतेपूर्वैंजोअस्ति
त्वनास्तित्वकीदोयकारिकामैंनयकहीताकैयोगतैंपानकरणैं।तहांहेमुनींद्र।
तुमारेशासनकहियेशास्त्रमततामैंकिछूनीविरोधनांहीहै।इहांकारिकामैंशे
षवचनहैसोउत्तरकेतीननंगनिकीअपेक्षाहैजातैंपहलीदोयकारिकामैंअस्तित्वदो
कहीअपनैंअपनैंप्रतिपक्षीकीअपेक्षाविशेषणपणांहेतुतैंसाधे। वकृरियाका
रिकातैंपहलैकारिकामैंविधिप्रतिषेधस्वरूपविशेष्यवस्तुकूंशब्दगोचरतैंसाधा
सोयेकृतीसरानंगसाधासोयाकूंनीविशेषणपणांहेतुतैंअपनांप्रतिपक्षीकी।

MEMORIAL

अपेक्षाविधिनिषेधरूपज्ञाननोवक्तरिनैसैंहीसामर्थ्यनैंअवक्तव्यनीअपनांभू
पतिपक्षीवक्तव्यधर्मताकीअपेक्षाविशेषणपणांहेतुनैंविधिनिषेधरूपज्ञांन
नांश्रैसैंव्याप्तिनांतौंअशेषतीननंगाअस्तित्वावक्तव्यनास्तित्वावक्तव्यअ
स्तित्वा।नास्तित्वावक्तव्यश्रैसैंअपनेंअपनेंपतिपक्षीकीअपेक्षाविशेषणप
णांहेतुनैंविधिप्रतिषेधरूपज्ञाननोंविशेषणत्वान्श्रैसानयोगहैसोसर्व
कैलगावणांज्ञानैंएकधर्मीजीवादिवस्तुविशेष्यनिविषैएकधर्मविशेषणहैश्रै
सैंसर्वज्ञकैमतमैंकिछूविरोधनांहीहैअपनेंपतिपक्षीधर्मनैंश्रविनाभावीविशे
षणकूंनैंअन्यवादीनांहीसाधैहैतिनिहींकैमतमैंविरोधश्रावैहै।ज्ञा।श्रौंअ। ३०
वस्त्राचार्यकहैहैंनोविधिनिषेधकरिश्रवस्थितनांहीश्रैसाअनेकांतात्मकवस्तु

हैसोसप्तभंगीवाणीकीविधिकानामीहै।सोहीअर्थक्रियाकाकरनेवालाहैवस्तु
रिश्रन्यप्रकारनांहीहैजोअस्तिहीहैतथानास्तिहीहै।श्रैसीकल्पनासर्वथाएकां
तरूपकरैहै।सोअसत्कल्पनांहै।वस्तुकारूपनांहीं।श्रैसैंअपनीपक्षकासाध
नपरकीपक्षकादूषणरूपवचनकूंसमेटतासंतासंकोचतासंताकहैहैं।श्लोक
एवंविधिनिषेधाभ्यामनवस्थितमर्थकृत्।नेतिचेन्नयथाकार्यंबहिरंतरुपाधि
निः।।२३।।अर्थ।।एवंकहिएपूर्वोक्तप्रकारन्यायकरिसप्तभंगीविधिविषैविधिनि
षेधकरिश्रनवस्थितजीवादिकवस्तुहैसोअर्थक्रियाकृत्कहियेअर्थक्रियाकूंकरै है। क३
कार्यकारीहै।वक्तरिनेतिचेत्कहियेअन्यवादीश्रैसैंनांहीमानैहैतोतिनिकैसै
सैंबाह्यअंतरंगउपाधिकहियेंकार्यतिनिवादीनिनैंमान्याहैतैसैंनांहीहोयहै।त

हांनीवादिवस्तुसतहीहैअथवाअसतहीहै।।ऐसैसर्वथानहोयाकथंचित्स।
तहै।कथंचित्असतहै।ऐसैहोयतातैं अनवस्थितकहियेसोहीवस्तुकार्यक
रनेवालाहै।वस्तुजोअन्यवादीसर्वथाएकांतकरिसतहीहैअथवाअसतही
हैऐसाअवस्थितकहैहै।तिनिकैतिनिनैंजैसाकार्यसिद्धिहोनांवाद्यअंतरंग।
सहकारीकारणअरबपादानकारणकरिमान्यांहैतैसानांहीसिद्धहोयहैयाका
रणतातैंविशेषअष्टसहस्रीतैंजानना।।८।।आगैतर्कहैजोवस्तुअनेकधर्मस्वरू।
पमान्यांतहांअस्तित्वआदिधर्मनिकैधर्मीकरिसहितजेउपकार्यजेउपकारक।
भावहोनैंधर्मनिकैंउपकारधर्मीकरैहैकिधर्मीकैंउपकारधर्मकरैहैतहांनी। ३१
धर्मीएकशक्तिकरिकरैहैकिअनेकशक्तिकरिकरैहै।।ताहांनीआपतैंअनि

नशक्तिकरिकरैहैकिनिनशक्तिकरैहैऐसैंसरिअन्यवादीदूषणावतावैति
निसर्वहीकानिराकरणकरतेसंतेआचार्यकहैहै।।जोएकधर्मीविषैंअनेकधर्म ३२
हैतातैंकथंचित्सर्वथाकारसंनवैहै।धर्मधर्मीकैअंगअंगीभावहैतातैंअने।
कांतकहनेमैंविरोधनांहीहै।।८।।श्लोक।।धर्मेधर्मेन्यएवार्थोधर्मिणोनैनधा
र्मणःअंगित्वेन्यतमांतस्यशेषांतानांतदंगता।।३२।।अर्थ।।अनंतधर्मतामैपाइ
एकैसाजोजीवआदिकएकधर्मीतांकैएकएकअस्तित्वआदिकधर्मविषैंअ
न्यहीअर्थहैनिननिनप्रयोजनहैकार्यहैसोवहप्रयोजनकहांहैतहांकहियेति
सकीवहतिआदिहोनां।।अथवातिसकाजानहोनांहैवस्तुएकहीप्रयोजनस
र्वधर्मनितैंनांहीहैजातैंअस्तित्वआदिएकहीनांतैंअनंतधर्मात्मकवस्तुका

देवा० ३२

ज्ञानहोनायतौवाकीनेनाअनर्थकवहैरै।वक्रधिधर्मीसर्वथानित्यनारावस्का-
नोंहीहै।वक्रश्रनित्रहीनोंहीहै।नाकरिनेदोनेदपक्षकादूषणआवैकथंचि-
तनेहानेदात्मकहै।अनंतधर्मात्मकवस्तुजात्यंतरहैधर्मनिकेस्वरूपसिवाय
एकन्यारानात्यंतरहै।तहांविरोधकाअवकाशनोंहीवक्रितिनिअस्तित्वआ
दिधर्मनिविषैएकधर्मकैअंगीपणांकहियेप्रधानपणांहोतैशेषअनंतध-
र्मनिकैतिसकाअंगपणांकहियेगौणपणांहोयहै।तातैंअन्यअन्यकाप्रयोग
युक्तहैधर्मधर्मीथनिधर्मीकैकथंचित्स्वभावनेदवतीहै।तातैंवस्तुविषैंपरमा
र्थतैंअस्तित्वआदिधर्मनिकीव्यवस्थाअंगीकारकरनीयाहीतैंअस्तित्वआदि ३२
सप्तभंगनिकीप्रवृतिहैसोसुनयकेअर्थणतैंहैअैसैंस्यात्अस्त्येवजीवादिःइ

स्यादिसप्तभंगनिकाप्रयोगयुक्तहै।ब।आगैंश्रवणकपणांअनेकपणांआदि।
सप्तभंगीविषैंनीयहहीप्रक्रियाप्रगटकरतेसंतेआचार्यकहैहै।फ्रा का॥क १
नेकविकल्पादावुत्तरत्रापियोजयेत्। प्रक्रियांनंगिनीमेनांनयैर्नयविशारदः
अर्थ।नयनिविषैंप्रवीणजोस्याद्वादीसोयहसप्तभंगीप्रक्रियाहैताहिउत्तरपक
रणविषैंएकपणांअनेकपणांइत्यादिविकल्पविचारविषैंनीनयनिकरियुक्त
करै॥तहांस्यात्कहियेकथंचित्नीवादिवस्तुएकहीहै।सप्तभंगनयकीअपे
क्षाकरिवक्रसिप्तपर्यायनयकीअपेक्षाकरिएकनोंहीहै।इहांकोईकैहै।
व्यतोअनंतहैएकद्रव्यकैसेंकहियेताकाउत्तरश्रैसाजोपरमसंग्रहनयएकस
त्मात्रकाग्राहकहैताकीअपेक्षाकरिएककहनेमैंदोषनाही।वक्रिकथंचित्

नीवादिवस्तुअनेकहीहैजातैंनेदूषणयोग्यारेदेषियेहै।वक्रशिक्रमकरिअर्थ
णाकीयाजोएकपणांअनेकपणांतातैंकथंचित्तएकानेकस्वरूपहैवक्रशि
युगपत्अर्थणाकीयाजोएकपणांअनेकपणांतांकथंचित्तअवक्तव्यहै।तैसै
हीकथंचित्तएकावक्तव्यकथंचित्तअनेकावक्तव्यकथंचित्तएकावक्तव्यश्रैसै।
सप्तभंगीप्रक्रियाजोइनी। बक्तरिनैसैंपूर्वैअस्तित्वकूंनास्तित्वकरिअविनाभावी
शेषणपणांहेतुतैंसाधणां॥ श्रैसैकस्याथातैंसैंइहांएकपणांअनेकपणांआदि।
सप्तभंगनिविषैंनीअपणांअपणांप्रतिपक्षीनिकरिविशेषणांहेतुतैंअविनाभा
वीसाधणां॥श्रैसैंएकत्वअनेकत्वनिकरिअनवस्थितजीवादिवस्तुसप्तभंगी॥ ३३
वाणीविषैंप्रसक्तीयाकीर्यकारीहैसर्वथाएकांतविषैंक्रमाक्रमकरिअर्थक्रि

याकाविरोधहैनातैंकार्यकारीनांहीहैश्रैसैंजानना॥छ॥चौपई॥स्वामिसमंतभ
द्रकीवाणि॥सप्तभंगकीविधिमयजाणि॥सेवोरविकरसमनविनूरि॥मिथ्यातम
कूंकरिहैइरि॥१॥इतीश्री आप्तमीमांसानामदेवागमस्तोत्रकीसंदेपअर्थरूपदे
वागमाप्तस्तवनिकाविषैषष्ठमपरिछेदैसमाप्तमयाम॥ॐनमः॥दोहा॥अदैता
दिविकल्पपरिसप्तभंगसुविचारि॥कहैमुनीनिनिकूंनमूं॥मंगलकवनसुधा
रि॥१॥अबअदैतएकांतविकल्पपरिसप्तभंगकाद्वितीयपरिछेदकाधारेनहैत
हांप्रथमहीअदैतएकांतपक्षविषैंदूषणादिषावैहै॥छ॥श्लोक॥अदैतैकांतपा
क्षेपिदृष्टेनेष्टेविरुध्यते॥कारकाणांक्रियायाश्चनैकंस्वस्मात्प्रसाध्यतेश्लोक॥
र्थ॥अदैतएकांतपक्षकैहोतैकर्तृकर्मआदिकारकनिकैंवक्रशिक्रियाकै।

प्रत्यक्षप्रमाणकरिसिद्धनेदहैसोविरोधरूपहोयहै॥वज्रसिसर्वथाएकहीहो
यसोआपहीतैंकर्त्ताकर्मरूपहोयनांहीआपहीतैंआपकीउत्पत्तिहोयनांही॥
तहांअद्वैतनामाएकस्वरूपहोयताकाहै॥जातैंदोयकरियुक्तहोयसोद्वीतवज्र
रिसीतहीहोयसोद्वैतवज्रसिद्वैतनहोयसोश्रेसाअद्वैतशब्दकाव्याख्यानहै॥ता
काएकांतहोयअद्वैतहीहैश्रैसाअभिप्रायहोयसोअद्वैतएकांतपक्षहैतिस
केहोतैंदृष्टकहियेसाक्षात्तथाअनुमानगोचरनेदहैसोविरोधजायहैप्र
त्यक्षादिप्रमाणकरिसिद्धजोकर्त्ताआदिकारकनिकानेदअस्थानगमना॥
आदिअचलनरूपतथाचलनरूपक्रियाकानेदप्रसिद्धहैसोकैसैनिषेधा ३५
जाय॥नांहीनिषेधाजाय॥वेदांतीएकब्रह्मतैंनयेकर्त्तीक्रियाआदिकानेद

मानैंहै॥सोसर्वथानित्यएकब्रह्मतत्वतैंतौहोनांसत्यवैनांहीजातैंकर्त्ता॥
क्रियाआदिकभैतौ॥उपजनांविनशनांहैसोयहमांनियेतौब्रह्मअनित्य
वहरैअद्वैतकाप्रसंगआवै॥तथाउपजनाविनशनाएकहीकैआपहीतैं
अपकारणविनांहोयनांही॥अरअविद्यातैंमांनैंतौअविद्यातौअवस्तुमां
नैंहै॥अवस्तुकैकार्यकारणकाविधानसंभवैनांही॥वज्रसिवस्तुमांनैंतौद्वै
तपणोआवैऽत्यादिप्रत्यक्षअनुमानप्रमाणतैंविरोधआवैहै॥ताकीमस्त
अष्टसहस्रीतैंजाननी॥छ॥आगैऽसद्वैतपक्षविषैंहीअनेकदूषणदिखावतै
संतेआचार्यकहैहै॥श्लोक॥कर्मद्वैतंफलद्वैतंलोकद्वैतंवचोमनः॥विद्या
विद्याद्वयंनस्याद्बंधमोक्षद्वयंतथा॥१॥अर्थ॥पूर्वोक्तअद्वैतएकांतपक्षहो।

MEMORIAL DR BHAU DAJI

तैलौकिकवैदैककर्मअथवाशुभअशुभकर्मकाआवरणाअथवापुण्यपाप
कर्मअैसाकर्मद्वैतनवहरैवक्तरिकर्मद्वैतकाफलनलाबुरासुषदषकाद्वै
तनवहरै।वक्तरिफलभोगनेकाआश्रयइहलोकपरलोककाद्वैतनवहरै
वक्तरिइहांकहैजोकर्मआदिकाद्वैतनवहरै।वक्तरिइहांकहैजोकर्मआदि।
काद्वैतनौअविद्याकेउदयतैहैनौतहांकहियेधर्मअधर्मकाद्वैतकाअभाव
होतैविद्याकाद्वैतैसंतवैनांहीतवंबंधमोक्षकादिककाअभावहोया।वक्तरि
विद्याअविद्यानीकल्पितमानेंशून्यवादवालेकीकल्पनांभीमांननांवहरैसो
यहयुक्तनांहीपरीक्षावाननौकिछूपरमार्थरूपफलविचारिवनैहै
सोपुण्यपापसुखदुखयहलोकपरलोकविद्याअविद्याबंधमोक्षअैसेविशे

रनिषेधकरनेंकेइच्छकश्राचार्यकहैहै॥श्लोक॥हेतोरद्वैतसिद्धिश्चेद्वैतंस्या
द्धेतुसाध्ययोःहेतुनाचेद्धिनासिद्धिर्द्वैतंवाङ्मात्रतोनकिं॥३॥अर्थ॥हेश्रद्वैतवा
दीजोतूंहेतुतैंश्रद्वैतकीसिद्धिमानैंहैतोसर्वनानावस्तुदीखैंहैसोयहतिनासमैंस
र्वगर्भितनयैंश्रसेहेतुसैंपरमब्रह्मश्रद्वैतकीसिद्धिकरैहै॥तोश्रैसैंतोहेतुश्रस
ध्याद्दोयतहरैतवद्वैतपणांश्राजावजरहेतुविनाश्रागममात्रतैंश्रद्वैतकीसिद्धि
मानैंतौवचनमात्रतैंकहाद्वैतनानहोयहोयहीहोयश्राममश्ररश्रद्वैतब्रह्मश्रैसैं
दोयतूंहैतवद्वैतपणांकोनश्रावैश्रौरश्रन्यदूषणादिषावैहै॥श्लोक॥श्रद्वै
तंनविनाद्वैतादहेतुरिवहेतुना॥सज्ञिनःप्रतिषेधोनप्रतिषेध्याद्हेतुकंविना॥ ३६
श्रर्थ॥हेश्रद्वैतवादिनश्रद्वैतहैसोद्वैतविनानहोय॥श्रद्वैतग्राहहैसोश्रपनांश्र

र्थकाप्रतिपक्षीजोद्वैतपरमार्थस्वरूपताकीश्रपेक्षातैंहै॥नातैंयहश्रद्वैतग्राह॥
निषेधपूर्वकश्रखंडपदहैजैसैंश्रद्वैतब्रह्महैसोहेतुविनानहोयतैसैंजहांका॥
श्रर्थकावाचकाकपदहोयतांकूंश्रखंडपदकहियेसोइहांनिषेधपूर्वकद्वैता॥
ग्राहकान्याराहोयश्रर्थपरमार्थभूतनांहीहै॥एकहीश्रर्थहैतातैंश्रपनेप्रतिपा॥
क्षीजोद्वैततांविनानहोय॥वज्रशिनहांश्रखरविषाणश्रैसाग्राहहोयतांकरिश्रा॥
तिप्रसंगनांहीहै॥जातैंयाविषाणग्राहकानिषेधहैसोखरग्राहकरिसहितनया॥
नवश्रखंडपदरह्याखरविषाणग्राहनयासोखंडपदनया॥तवयाकाश्रर्थकि ३३
ल्पवस्तुनांहीतांकानिषेधनीवस्तुनांहीतांकीजोयहश्रद्वैतग्राहहैनांहीयांका
तौप्रतिपक्षीद्वैतग्राहहैतांकापरमार्थभूतश्रर्थहै॥श्रैसैंनिषेधपूर्वकश्रखंडप

देवागम० ३७ दतैंदैतविनाश्रदैतनांहीहै॥याहीतैंसामान्यवचनश्रैसाहैजोसंज्ञावानपदार्थनो
प्रतिषेध्यकहियेनिषेधकरनेयोग्यवस्कतिसविनांप्रतिषेंकहूंहीनाहींहोयहै।जे २
श्रवरविषाणकीज्योहोयतौताकासंज्ञावानपदार्थहीनांहीं॥तातैंश्रैसाश्रद्दप्रति
षेध्यविनांनहीयहै॥वक्रश्रिकहैपरनैमान्योजोश्रविद्यातैंदैतताकाप्रतिषेधतैंश्र
दैतश्रद्दकापरमार्थसिद्धहोयहैतौताकूंकहियेश्रैसेंतौखपरकाविनाननात्विक
सिद्धहोयहैतथाश्रविद्यात्मिकसिद्धहोयहैतबदैतकीसिद्धिकैसेंनहोय।वा
क्रश्रिश्रदैतब्रह्मवादीकहैजोहम॥श्रविद्याकूंवस्तुभूतमानेनांहीप्रमाणतैंश्रवि
द्यासिद्धहोयनांहीयातैंदैतकीसिद्धिनहोय॥जोब्रह्मकूंश्रविद्यावानमानियेतौ ३७
वक्राद्दोषश्रावै।वक्रश्रिब्रह्मकूंनिर्दोषमानियेतौश्रविद्याकैश्रनर्थकषणाश्रा॥

वै॥वक्रश्रियाकैश्रविद्यानांहीहै।श्रैसाश्रस्तिब्रश्रविद्याकाश्रविद्याहीमैंकल्पियेहै
वक्रश्रियहश्रविद्याब्रह्मद्वारैनिकसीहैश्रैसाकोईप्रकारसीसिद्धिनहोयहै।वक्रश्रि
३८ श्रनुभनतैंनैसैंमैंब्रह्महोश्रैसैंब्रह्मश्रनुभवसहितनहोयहै॥तैसैंयहैश्रविद्याहैसोमैं॥
नांहीहोश्रैसेंयमाणरूपज्ञानतैंवाधितश्रविद्याहोयतौश्रविद्याकैश्रध्यासपणा
कासंगश्रावैहै॥वक्रश्रिब्रह्मकूंज्ञाणेविनांश्रविद्याकूंसेंजाणे॥वक्रश्रिब्रह्मकूंज्ञाणें कैप
श्रविद्याकाश्रनुभवविनांबाधनांनहोयहै॥ज्ञातैंवस्कनूतनहोयतबबाधासंभवैहै॥
वक्रश्रिश्रविद्यावाननश्रविद्याकूंनिरूपणाकरनेकूंसमर्थनहोश॥तातैंवस्ककां
वर्त्तनकीश्रपेक्षातौश्रविद्याथैनांहीज्ञातैंवस्कविनांश्रन्यविषैंप्रमाणकाव्या
पारहोयनांहीश्रश्रविद्यावस्कहैनांहीतातैंश्रविद्याकाश्रविद्यायणाविषैंश्रसाधा

रणलक्षणश्रेसाहै। जोप्रमाणकीबाधाकूंसहनेकूंसमर्थनांही। श्रैसाजाकास्वभाव।
सोश्रविद्याहै। सोसंसारीकैस्वानुभवकैश्राश्रयहै। तातैश्रद्वैतवादीकैकिछूदोष
नांही श्रावैहै। वक्ररिद्वैतवादीसंसारीहैसोमायाप्रपंचप्रमाणबाधितहैताकूंश्रने
कप्रकारकरैहै। यातैद्वैतवादीकैश्रनेकदोषश्रावैहै ताकूंकहियेजोसकलप्रमा
णसूंश्रतीतश्रविद्याकूंश्रंगीकारकरैसोकाहेकायरीक्षावानश्रविद्याकैनीकथं
चित्तवस्तुपणांमांनिश्चमाणकाविषयपणांमांनेंप्रमाणतैसत्श्रसत्कानिश्चय
करैसोहीपरीक्षावानहै। वक्ररिशद्वैतवादकातथासंवेदनाद्वैतवादकाएकांत
पक्षकानीब्रह्माद्वैतपक्षकीजोनिराकरणजाननां ॥ श्रीकोईकहैजोश्रद्वैत ३८
कांतकानिराकरणहैतौहमएथत्वकाएकांतश्रंगीकारकरैंगेताकूंश्राचार्यकहैहैं।

जोश्रैसैश्रवधारणमतिकरैजातैएथत्वकाएकांतनीबाधासहितहैसो ही दिषै। वैहै१
॥ जोकाएथत्वकैकांतपदैपिएथत्वकोदएथक्त्वनैं॥ एथक्त्वकेनएथक्त्वंस्यादनेक
स्योह्यसौगुणः॥ श्रर्थएथक्त्वकहियेपदार्थसर्वभिन्नभिन्नश्रनेकहीहै श्रैसा।
एकांतपक्षहोतैएथक्त्वनामागुणतैगुणश्रगुणीइनिदौऊपदार्थनिकैएथक्त्व
पणांकहिभिन्नपणांहोतैतैदौऊश्रपथक्कहियेश्रभिन्नहीवहैहैश्रैसेय
कूंपथक्त्वनामागुणहीनथहैहैहै। जातैएथक्त्वगुणकूंएककूंश्रनेकपदीथनि
मैतिष्ठामांनेहै। सोएथक्त्वगुणकहनानिफलनथा इहाश्रैसाजाननांजोवैशे
षिकमतीइव्यगुणकर्मसामान्यविशेषसमवायश्रैसैछहपदार्थमांनेहैश्र
रतिनिकेनेद्रव्यनवगुणचौईसकर्मपांचप्रकारसामान्यदोयप्रकारविशे

षश्चनेकसमवायश्चकश्चैसेनेदमानेहै॥तिनिमैंगुणकेचोईसनेदनिमैंएकएण॥
त्वनामागुणमानेहैसोयकगुणसर्वद्रव्यगुणआदिपदार्थनिकूंनित्यकरैहैश्चैसैं
मानेहै॥वक्रहिनैयायिकमतीपमाणषमेयसंशयप्रयोजनदृष्टांतसिद्धांतअवय॥
वतर्कनिर्णयवादजल्पवितंडाहेत्वाभासछलजातिनिग्रहस्थानश्चैसैसोलहपदा
र्थमानेहैतिनिकूंनित्यनित्यहीमानेहै॥तिनिकैपदार्थनिकीसर्वथानित्यपक्षहैतिनि
कूंपूछियेएथक्त्वनामागुणतैद्रव्यगुणयेदोऊश्चेन्नहैकिनित्यहै॥जोकहैश्चनित्यहैतौस निश्च
र्वथानित्यपक्षकाएकांतकैसेंठहरै॥वक्रहिकहैजोद्रव्यगुणएथक्गुणतैनित्यहै॥
तौतेद्रव्यगुणश्चनित्यंठहैरैएथक्गुणसारहैतिसनैंद्रव्यगुणकैकहाकीयाकि॥ ३१७
छूनीनकीया॥जातेएथक्गुणएकहैश्चरश्चनेकहैतिह्यामानेहै॥श्चैसैंइसका॥

रिकाकेव्याख्याननैंसर्वथानेदवादीनैयायिकवैशेषकक्रूंसर्वथाएथक्त्वएकांत
पक्षमैंदूषणदियाया॥छ॥श्रीजैनिसत्यवादीवोदमतीएथक्त्वएकांतश्चैसैंमानेहै
जोसर्वपदार्थपरमाणूरूपनित्यनिरन्वयविनश्वरनित्यनित्यहै॥तिनिकैकाहूप
कारसिलापनोडनांहीश्चैसाएकांतमानेहैताविषैंदूषणपराटकरनैकामनकरि॥
श्रीआचार्यकहैहै॥श्लोक॥संतानःसमुदायश्चसाधर्म्यंचनिरंकुशाःप्रेत्यभावश्चतत्सा
र्वंनस्यादेकत्वनिह्नवे॥६॥अर्थ॥जीवआदिद्रव्यनिकैएकएणकालोपमानियो॥
श्रपनैपर्यायनितैंएकतारूपश्चन्वयवचनमानियेतौसंतानठहरैएकमरूपपर्या॥
यनितैंएकहीजीवादिद्रव्यश्चन्वयरूपहोयसोसंतानसोद्यणिकपक्षकरिपर्या॥
यनिकैसर्वथानेदहीमाननेमैंसंतानपरमार्थभूतनवणैं॥श्चरसंतानकीज्योठ

SHRI MAHAVIR JAIN ARADHANA KENDRA KOBA

देवागम० ४०\ हरै॥वक्तरिसमुदायभीनवहरै॥एकस्कंधकै अवयवनितैंएकताहोयसोसमु
दायसोसर्वथाएथक्तपक्षमैंयहसमुदायभीनवहीं॥वक्तरिसाधर्म्यभीनवहरै॥सम
नधर्मीनिकैहैतिनिकैसमानपरिणामकीएकताकूंसाधर्म्यकहियेहै॥सोयथा॥
क्षणिकांतपक्षमैंएकताकालोपहोतैंयहभीनवहीं॥वक्तरिवैसमानवकहियेपरलो कथ
सोभीनवहरैमरिकरिफेरिफेरिवैसमानताकूंपरलोककहियेहै॥सोदोकनव
मैंएकआत्माकालोपमानैंयहभीनवहीं॥तथावर्त्तमाननैंइसनवमैंभीबालयुवा
नवृद्धपणाआदिअनेकअवस्थाहोयहैतिनिमैंएकपणाकाएथक्तपक्षअनुनवहैसो
यहविरोधआयनवदैनेलेनेकाव्यवहारभीनवहरै॥वक्तरिसंतानसमुदाय ४०\
साधर्म्यपरलोकाएनिरंकुशहै॥अवयवहैपमाणसिद्धहै॥तिनिकाअभावकैसे

मानिये॥अरएकपणाकालोपहोतैंएनवहरै॥तातैंयथक्तएकांतपक्षअनेकांहा
कीआगैएथक्तएकांतपक्षहीविषैअनेकदूषणदिखावतेसंतेआचार्यकहैहै॥श्लो ७
क॥सदात्मनोर्थनित्यत्वेद्रव्यज्ञानज्ञेयाद्विधिप्यसत्॥ज्ञानाज्ञानैकथंज्ञेयंवहिरंतश्चतै
द्विधा॥१॥अर्थ॥ज्ञानहैसोज्ञेयवस्तुतैंसत्स्वरूपकरिजोनिज्ञानमानियेतौदोऊ
हीपकारअसत्स्वरूपहोय॥ज्ञानतैंसत्निन्नमानियेतबज्ञानअसत्स्वरूपहोया॥
ज्ञेयतैंसत्निन्नमानियेतबज्ञेयअसत्होय॥वक्तरिज्ञानतैंहीसत्निन्नमानियेतौ
ज्ञानकाअभावहोतैंज्ञेयकाभीअभावहीहोया॥जातैंज्ञानज्ञेयकाअविनाभाव॥
तौपरस्परअपेक्षातैंसिद्धहै॥सोएककाअभावहोतैंदूजेकाभीवहोयया तैंआचार्य अना
कहैहैहेनगवन्तुमारेदेवीजेसर्वथाएकांतवादीतिनिकैवाह्यअरअंतरंगजेजे

हो\

यतेकैसैंठहरै॥वाद्यज्ञेयतौघटपटआदिकअरअंतरअज्ञेयजीवआत्मातथाज्ञा
नादिकइनिसर्वनिकाअभावठहरैतातैंएथकएकांतकहैनेवालेबौद्धतथा
वैशेषिकनिकूंयहउपरांतसप्तभंगीसप्तार्थहै॥आगैबौद्धमतीनिकूंविशेषकरिदूषण॥
दिषावैहै॥८॥श्लोक॥सामान्यार्थाहिरोषेषांविशेषोनाभिलप्यते॥सामान्यानाव
तस्तेषांमृषैवसकलागिरः॥८॥अर्थ॥अन्येषांकहिए॥अन्यनैबौद्धमतीतिनिकैसा
तमैंगिरकहियेवाणीवचनहैतेसामान्यार्थीकहियेसामान्यहैअर्थजिनिकाअैसे
हैं॥तिनिवचननिकरिविशेषजोवस्तुकानिजलक्षणसोनाहीकहियेहै॥तिनि॥
बौद्धमतीनिकैसामान्यकैअभावतैंसप्तभंगवचनहैतेमिथ्याठहरैहै॥भावार्थ॥बौ ४१
द्धमतीअैसेमानेहैंजोवचनतौसामान्यमात्रकूंकहैहै॥अरसामान्यवस्तुभूतनांही

वुद्धिकरिकल्पियेहै॥अरखरूपकास्वलक्षणहैसोअनिर्देश्यहैवचनगोचरनांहीतां
कूंआचार्यकहैहैंजोसामान्यतौवस्तुभूतनांही॥अरविशेषस्वलक्षणहैसोवच
नकैअगोचरकहैतोअैसेवचनतोतिनिकेमतमैंसर्वहीमिथ्याठहरैअरवच
नविनामतकैसैंथापैहैतातैंतिनकामतभीझूंठाहीहै॥८॥आगैवादीकहैजोएथ
कएकांतनिर्धर्मनांहीतातैंअनेकांतकीजोयहउक्तिहोजतिनिदोऊ॥
निकाएकरूपएकांतअैसेहैं॥अैसैमाननेवादीकूंतथासर्वथाअवक्तव्यतत्वहै
अैसेवादीकूंआचार्यकहैहै॥श्लोक॥विरोधान्नोभयैकात्म्यंस्याद्वादन्यायविद्वि
षां॥अवाच्यतैकांतेप्युक्तिर्नावाच्यमितियुज्यते॥९॥अर्थ॥जेस्याद्वादन्यायके
विद्वेषीहैंतिनिकैजैसैअस्तित्वनास्तित्वएकत्वअनेकत्वपरस्परविरोधतैंएक

स्वरूपनांहीथयेहैतैसैंहीपृथक्कअरपृथक्कनावनीपरस्परविरोधस्वरूपहैसोण।
कस्वरूपनांहीथषैहै।जानैंयहनीप्रतिषेधस्वरूपहै।जोदोयविरुद्धधर्मरूपदो।
यसोसर्वथाएकांतपक्षमैंएकरूपनथषै।वक्तरिसर्वथाअवक्तव्यतत्वमानैं।
ताकैंनीतत्वअवक्तव्यहै।औसावचननीकहनांयुक्तनहोयतातैंअवक्तव्यण।
कांतमांननांनीश्रेष्टनांहीं।।८।।आगैंएकत्वआदिएकांतकेनिराकरणकीसाम
र्थ्यतैंअनेकांततत्वसिद्धनयातौंक्रतिसकैंज्ञानकीघातिदृढकरनेंकैं अर्थित।
थाकोईअनेकांतविषैंअसद्भकारअज्ञानकाकरैताकैंनिराकरणकैं अर्थिति
सएकत्वानेकत्वकैंसप्तभंगघटकरनेंकैंउद्यक्तआचार्यतिसकैंमूलदोय ४३
नंगास्वरूपकूंजानावाद्दिपृथक्कंपस्वनेंदैंसाधनेंयथा।।९।।अर्थ।हिकहियेनिश्च।

वस्तुकैंकहैहै श्लोक अनेपेक्षेपृथक्कैंकोहूंवस्तुक्यहैतुनः तदैवैकांद

यतैंपृथक्कअरोक्त[redacted]णदोऊहैतेपरस्परअपेक्षारहितहोय
तौदोऊहीअवस्तुवहरैजातैंदोऊकैंअवस्तुपणांकासाधकपरस्परनिरपेक्षप
णांहेतुहैं।एकत्वकीसापेक्षाविनातौंपृथक्कअवस्तुहै।वक्तरिपृथक्तकीसापेक्षा
विनाएकत्वअवस्तुहै।औसैंनिरपेक्षदोऊहीअवस्तुवहरै।वक्तरिपरस्परसापेक्ष
दोऊहेतुतैंसोहीपृथक्कअरोक्तपरमार्थस्वरूपहैवस्तुहै।इहांदृष्टांतजैसैंसा
धनकहियेहेतुकास्वरूपवौद्धमतीपक्षधर्मसपक्षेसत्वविपक्षाद्व्यावृत्तिजैसा
अथवांतीननेदतिनिकरिविशिष्टएकमानैंहै।ताकैंनीअन्वयव्यतिरेकएदो
यनेदमानैंहै।[redacted]तहांजोदोऊपरस्परअपे
क्षारहितहोयतौदोऊहीअवस्तुरूपहोयतवसाधननवहरै।दोऊकैंपरस्प

रसापेक्षपणांहीतैंदोकवस्तुसूतसाधनउहरैतैसैंहीएथक्कअरोक्यदोकसापे
क्षहीवस्तुस्वरूपहै॥निरपेक्षअवस्तुहै।इहांकोईपूछैनोएथक्कएकक्काएकां
तकानिषेधतौयहलीकीयाहीएफेरियहकारिकाकोंनअर्थिकहीताका
समाधानअैसानौइसकाविधिनिषेधकाअनुमानकाप्रयोगनावनेंकूंफेरि
स्पष्टकरिकह्याहै॥परस्परनिरपेक्षसापेक्षकैकैदोकहेतुनमायाहै।वज्रसिला
धनकादाहरणाहैसर्वमतमैंसाधनकूंअन्वयव्यतिरेकस्वरूपमांनैहै॥सोपर॥
स्परसापेक्षविनासाधनसिद्धहोयनांहीतवअपनांअपनांमतकैसैंसिद्धकरैतातैंइ॥
हांतनीयुक्तहै॥सर्वथाएकांतमानैंकिछूनीसिद्धनहोयहै॥का॥स्त्रीपादीआदिआंका ४३
करैहैनोएकपणांकीप्रतीतिनैंतथाएथक्पणांकीप्रतीतितैंजीवादिकपदार्थ

तिकैएकपणांअरएथक्पणांकैसैंवणैहैं।एकपणांतौपरस्परदोषनांहीं॥अर॥
एथक्पणांसत्रूपाकमांनियेतौकैसैंहरैअैसैंसेंप्रतीतिकैनिर्विषयपणांआवै
हैअैसैंश्रीआदांकाहोतैंतिकाविषयदिषावनेंकामनकरिस्वांमिसमंतभद्रआ॥
चार्यकहैहै॥श्लोक॥सत्सामान्यात्सर्वैकंपएथक्त्वादिनेदतः नेदानेदविवक्षायां॥
समाधारणाहेतुवत्॥१३॥अर्थ॥तुकहियेपुनःपरस्परसापेक्षतैंतौपहलीकारिका
विषैजनाया॥अरइहांकैरिताकाविशेषणकात्राग्रथकरिकहैहै॥सत्सामान्यतै
तौसर्वजीवआदिकवस्तुहै।सोएकयकहियेएकस्वरूपहै।यातैंएकपणांकाप्रती
तिनिर्विषयनांहीहै॥वज्रसिलारेसारेसर्वजीवआदिकनेदव्यआदिकतिनिकै॥
नेदतैंएथक्पणांहै।यातैंएथक्पणांकीप्रतीतिनिर्विषयनांहीहै॥अैसैंनेदने॥

द्कीविवक्षाहोतैंसिद्धहोयहै।इहांदृष्टांतजैसैसर्ववादीनिकरिनेदानेदविवक्षा।
होतैंअसाधारणहेतुमानियेहै।सामान्यतौअनेदविवक्षाकरिहेतुएकमानियेहैं।
वऊरिनेदविवक्षाकरिविशेषताकेपक्षधर्मआदिनेदमानियेहैतैसैजानना।इ।आ
तौवादीश्रीसंक्षकरैहैजोएकपणांअरथएकपणांनेदअनेदकीविवक्षातैसाधे
सोविवक्षाअर[redacted]अविवक्षाकातौकिछूवस्तुविषयनांही।वक्ताकीइच्छामात्र
हैतिसकैवशतैंतौएकपणांअरथएकपणांठहैरैनांहीश्रैसीमानतेवादीकूं।
आचार्यकहैहै।इ।श्लोक।विवक्षाचाविवक्षाचविशेष्येनंतधर्मिणि।सतोविशे
षणस्यात्रनांतसैस्तदर्थिनि।१।अनंतनैधर्मजामैंश्रैसाजोधर्मीविशेष्यकहियेवि
शेषणजामैंपाईएश्रैसाजीवआदियदार्थतामैंविषैविवक्षाव।वऊरिअविवक्षाकरि

येहै।सोसत्विशेषणाकीकरियेहै।। असत्विशेषणाकीनकरियेहै।श्रैसीविवक्षाअ
विवक्षाकौनकारै।जोएकत्वपृथक्त्वआदिविशेषणानिकैअर्थीहैतेकरैहै।इहांवि
वक्षाअविवक्षावक्ताकैपदार्थकैकहनैंनकहनैंकीईच्छाकाहै।सोजाकूंकहनैंकी
इच्छाकरैसोसत्रूपविद्यमानहोयताहीकीकरैअसत्अविद्यमानकीतौनांकरै।सो
र्वथाअसतकैहनैंकीइच्छाकीयेतिसतैंअर्थकहासाधैसर्वथाअसत्तौगधाकैसी
गकीज्योंअर्थक्रियाकरिशून्यहै।श्रैसैपदार्थमैंएकत्वपृथक्त्वआदिविशेषणासत्
रूपहोयतिनिहीकीतिनिकैर्थीनिकैविवक्षाअविवक्षाहोयहैअहैअसत्रूपकीनां
होयहैश्रैसैंजाननां।इ।आतौंवादीश्रैसैंकहैहैपदार्थनिकैपरमार्थतैंनेदहीहैअ
नेदकहियेहैसोउपचारतैंहैजोदोऊपरमार्थतैंकहियेतौविरोधनामाईषणआवै

DR BHAU DAJI

वक्तरिकोऽन्यश्चैसैंकहैहै।जोपरमार्थतैअनेदहीहैअरनेदकहियेहैसोकल्पा।
नामात्रहै।दोऊमनैंविरोधआवैहैतिनिदोकवादीनिकूंआचार्यकहैहै।।श्लोक।
प्रमाणगोचरौसंतौनेदानेदौनसंहतिः तावेकत्राविरुद्धौतेगुणमुख्यविवक्षया।श
४ र्थी।पदार्थनिविषैनेदअरअनेददोऊहैतैसतरूपपरमार्थभूतहै।जातैंप्रमाण
गोचरहैप्रमाणकैविषयहै।नसंहतीकहियेउपचारस्वरूपनांहीहै।।इहांनेदपक्षअ।
नेदपक्षनेदमहअरैसैतीनपक्षकथंचित्परमार्थभूतसिद्धकरनी।वक्तरिहैनग।
वनतुमारैमतमैंनेदअरअनेदसत्यार्थरूपहै।तेएकवस्तुकैविषैविरुद्धरूपनां
हीं।जिनिकैमतमैंपरस्परनिरपेक्षरूपनेदानेदहैतिनिहीकैविरुद्धरूपहोयहै।जा॥ ४५
तैसर्वथाएकांतप्रमाणगोचरनांहीहै।वक्तरिइहांप्रमाणगोचरकह्यासोप्रमाणकास्व

रूपअरगौकहयो।अरैसैइसपरिछेदमैंकथंचित्अरैतहै।कथंचित्इथत्वहैअरैसैमू।
लदोयनंगविधिप्रतिषेधकल्पनांकरिएकवस्तु।विषैअविरोधकरिअस्तनकैव
शतैंदिषयो।वाकीपाचनंगनिकीप्रक्रियापूर्वैकहीतैसैंहीजोडणी।।तहास्यात्
एकत्वइथत्वस्यात्अवक्तव्यः।स्यात्एकअवक्तव्यः।स्यात्इथत्वअवक्तव्यः।स्या
त्एकइथत्वअवक्तव्यश्चैसैपाचनंगजाननैं।इनिकैनंयथोगपूर्वोक्तप्रकारहै
तुलगावणी।।छ।।चौपई।एकअनेकपक्षएकांत।तजैहोयनिजभावनुशांति।या
तैस्याद्वादनैंसाधि।स्यादर्थसतनिआधि।१।इतिश्रीआप्तमीमांसानामदेवागमस्तो।
त्रकीसंस्कृतअर्थरूपदेशभाषामयवचनिकाविषैद्वितीयपरिछेदसम्पूर्ण
या।श।इहांताईकारिकाछत्तीसभई।इहांअरौंअवक्तिव्यअनित्यपक्षकातीसं

रापरिछेदकाधारंनहौ॥दोहा॥नित्यश्रनित्यनुपन्नकीकथनीकाश्रारंनाकरुंप
मूंमगलश्ररथि॥जिनश्रुतिगुनिश्रदंना॥शतहोंश्रस्तित्वनास्तित्वएकत्वपथ
क्तएकांतकाप्रतिषेधकरिश्रनेकांतस्थाप्याश्रवयाकैश्रनंतरनित्यत्वश्रनि
त्यत्वएकांतकानिराकरणकाधारंनहै॥तहाप्रथमहीएकांतविषैदूषणदिषावै
है॥छ॥श्लोक॥नित्यत्वैकांतपक्षेपिविक्रियानोपपद्यते॥प्रागेवकारकाभावः क
पमांणंक्तत्फलं॥शब्दार्थी॥नित्यत्वएकांतकहियेकूटस्थविषैविक्रियाका॥
हियेपरणामनांश्रवस्थातैस्यश्रवस्थाहोनांश्रैसीक्रियातथापरस्पंदकहियेचल
नांक्षेत्रतैंश्रन्यक्षेत्रप्राप्तहोनांश्रैसीविविधिश्रनेकक्रियातैनवणी॥वक्रिकारा॥ ४६
कारकहियेकर्त्ताकर्मश्रादिकतिनिकाकूंटस्थमेंपहलैहीश्रभावहै॥श्रवस्था

नाकीपलटैनांहीतामैकारककीप्रतिकैसैंवणी॥वक्रियेनवकारककाश्रभावहस्या
नवपमांणकहाश्रप्रमाणकाफलप्रसिद्धिकहांजातैंपमाताकर्त्ताहोयतवप्रमाणश्रप्र॥
मितिनीसंजवैश्रकारकप्रमातानहोयनांही॥जोकाहूहीप्रतिसाधनहोयसोतोश्रवस्तुवह
शैतवश्रात्माकीनीसिद्धिनहोया॥श्रैसैंनित्यएकांतमैंदोषदिषाया॥छ॥श्रवस्थातैंसांख्यम
तीवादीकहैहश्रव्यकपदार्थकारणरूपहैतांकूंसर्वथानित्यमांनैहैश्रकार्यरूपा॥
व्यक्तपदार्थहैतांकूंश्रनित्यमांनैहैतातैंविक्रियावणीहैतहांव्यक्तकहियेजोपदार्थकाश्र
कैनिमित्ततैंछिपाहोयतांकापटहोनाश्रैसीतोश्रनित्यक्रिश्ररनवीनश्रवस्थाहोनासो
वस्तिश्रैसाव्यक्तपदार्थकूंश्रनित्यमानिविक्रियाहोतीकहैतामैंदूषणदिषावैहै॥श्लोक॥
पमाणकारकैर्व्यक्तंव्यक्तंचेदिंद्रियार्थवत्॥तेषांनित्येविकार्येकिंमाधोस्तेमासमनवहिं॥२

अर्थो॥ निसपक्षका एकांतवादी सांख्यमती कहै जो व्यक्त कहिये अनित्य व्यक्ति अरु अव्यक्ति रू
पदार्थ है तैसमाण अरु कारक निकरि व्यक्त प्रगट होय है। इहां दृष्टांत कहै है। जैसैं इंद्रिय
अपने विषयरूप अर्थकूं व्यक्त प्रगट करै है। तैसैं प्रमाण कारक व्यक्त पदार्थकूं प्रग
ट करै है ताके निषेधकूं आचार्य कहै है। जो है न गवन्ति निनिसत्त्व एकांतवादी निकै।
नैतैप्रमाण अरु कारक नित्य ही है॥ तातैं सर्वथा नित्यकारण निनैं अनित्य कार्य है २
यनांही तातैं तैवादी तुमारे सांख्यमतके ज्ञानसमवायतैं वाह्य है तिनिकै विकार्य कहिये अ
वस्था पलटनेरूप विकार स्वरूप कार्य कहां सिद्ध होय कि कूनी सिद्ध न होय॥ जो नित्य
प्रमाण कारक नितैं अनित्य व्यक्त अव्यक्तिरूप व्यक्त पदार्थ निकूं प्रगट न ये कहै तौ वौं ना ४७
नांही॥ तथा तिनि व्यक्ति निकै नी नित्य पणां आया वाहिये सो है नांही॥ जैसैं तिनिकै नित्य॥

एकांतपक्ष मैं विक्रिया न वणैं॥ ७॥ आगैं फेरि स्वादी कहै जो हम कार्थकारण नाव मांनै
है ना तैं हमारै किछू विरुद्ध नांही है ना कूं आचार्य कहै है॥ यहतौ विनाविचार्या सिद्धां
त है कार्य उपजै ना मैं दोय विकल्प है कै तौ सत्रूप उपजना कहनां कै असत्रूप उपजा
ना कहनां इनि दोऊ विकल्परूप पक्ष मैं इमणादि यावै है॥ ८॥ प्रश्नो का॥ यदि सत्सर्व
थाकार्यमुच्यन्तो यत्नुर्हन्ति॥ परिणामपक्षकृतिश्च नित्यैकांतवाधिनी॥ ३॥ अर्थो
यदि कहिये जो कार्य है सो सर्वथा सत् है कूटस्थवत् है॥ जैसा कहिये तौ जैसैं सांख्य
मती पुरुषकूं नित्य मानै है तैसैं कार्य भी नित्यपणैं है रैसैं उपजैनैं योग्य न ठहरै। वज्रसारिक
है जो केवल वस्तु कै अवस्थानैं अन्य अवस्था होय है जैसैं विकर्म नरूप कार्य न॥
पजै है॥ ताकूं कहिये जैसैं तौ वस्तु पूर्व परिणामी ठहरै है॥ सो यह परिणामी की पलट

निरूपएकसिकहियेकल्पनाहैसोनित्यत्वाकांतकीबाधानेंवालीहैही।वफरि
कहैकार्यअसत्रूपउपजैहैतौसांख्यमतकासिद्धांतमैंकह्याहै।जोअसत्का।
करेनेंकाअसंभवहैसोअैसेसिद्धांतकाविरोधआवैहै अैसैनित्यत्वाकांतके
वादीजेसांख्यमतीआदिकतिनिकैकार्यनिपजनेंकाअभावैहैआगैंकार्यके
अभावहोनेमैंनित्यत्वाकांतवादीनिकैदोषआवैहै।तिनिकूंउपगटकहैहैं।
श्लोक॥पुण्यपापक्रियानस्यात्प्रेत्यभावःफलंकुतः।बंधमोक्षौचतेषांनयेषां।
त्वंनासिनायकःथा॥अर्थ।हेभगवतजिनिकैतुमअनेकांतकेउपदेशैकआ।
पनायकस्वामीनांहीहौतिनिसर्वथानित्यत्वादिकांतवादीनिकैपुण्यपापकी ४८
क्रियाकायबचनमनकीअनअशुभदृष्टिसरूपतथाउपजैनेंस्वरूपक्रिया

नांहीबणैहैयाहीतैपरलोकजीनांहीबणैहै।बफरिक्रियाकाफलसुखदुखआदि।
काहैतैहोयजांहीहोयाबफरिबंधअरमोक्षादोकजीनहोया।तातैनित्यत्वाकांतक २
मतहैसोपरीक्षावाननिकैआदरनेंयोग्यनांहीहै।तातैजामतमैंपुण्यपापपरलोकबं
धमोक्षअसंभवै।तिसमकोंपरीक्षावानकौनप्रयोजनअर्थीअघकरैनांहीकरै॥श्रा।
मीक्षाणकमतीवौद्धकहैहैसोयहअसत्यहैनित्यत्वाकांतमैंदूषणहैतातैक्षणिकैकां
एकांतहैसोघटीतनसिद्धहैताकैकल्पणाकरीहैअैसैसौगतवादीघतिश्राचार्यकहैहैं।
का॥श्लोक॥क्षणिकैकांतपक्षेपिप्रेत्यभावाद्यसंभवःप्रतिसिद्धयमानाक्रियाकारिणः
कुतःफलं॥अर्थ॥क्षणिकएकांतकापक्षहोतैंभीप्रेत्यभावादयकहियेपरलोक।
बंधमोक्षआदिकाअसंभवहोयहै।ताकैप्रतिसिद्धकहियेपरलैपिछलैसमयविषै

अवस्थाहोयतोकार्योऽरूपज्ञानतथास्मरणज्ञानआदिकाअज्ञानवतैंकार्यकाआरं
भसंभवैनांहीवक्रियाकार्यकाआरंभविनांपुण्यपापसुखदुःखआदिफलकाहैतैहो
यनांहीहोय।अरक्षणनिकासंतानकूंकार्यहाआरंभकरनेंवालाकहै।तौसंतानपर
मार्थभूतक्षणिकाकांतमैंसंभवैनांही।एकअन्वयीज्ञाताद्रव्यआत्मद्रव्यहरैतब।
संतानमाचाहरैसोक्षणिकपक्षमैंश्रैसैहैनांही।तातैंक्षणिकाकांतमतहितका।
रीनांही।जातैंपरलोकवंधमोक्षभंभवैसोकाहेकाहितकारी।जैसानित्यआदि
कांतहैसोहीयहैतातैंश्रैसैमतकूंपरीक्षावानआदरैनांही।आगैंऽसक्षणिकाकां
तपक्षविषैंसतरूपकार्यकाउपजनआवैनांहीसोकहैतौभतभैविरोधआवैश्वरअस
तरूपहीकार्यकहैतौतामैंदोषदिषावैहै॥८॥श्लोक॥यद्यसत्सर्वथाकार्यतन्मान

निखपुष्पवत्॥नोपादाननियमोभून्माश्वासःकार्यजन्मनि॥६॥अर्थी।जोकार्यहैसोसा
र्वथाअसतहीउपजैहै।श्रैसैमांनियेतौसोकार्यआकाशकेफूलकीज्योंमतिहोऊव।
ऊरिउपादानआदिकार्यकेउपजनेंकूंकारणहैनिनिकानियमनठहरै।वऊरिउपा
दानकानियमनठहरै।तवकार्यकाउपजनेंकाविश्वासनठहरै।जोऽसकारणतैं
यऊहीकार्यनियमकरिउपजैगा।जैसैयवअंकुरउपजनेंकाकारणयवबीजहीहै।औ
सैउपादानकारणकानियमहोयनिसकारणतैंसोहीकार्यउपजनेंकाविश्वासठहरै
सोक्षणिकएकांतपक्षमैंअसत्कार्यमानैंतवयहनियमनठहरै॥८॥आगैंश्रैसैंहोतैं।
क्षणिकएकांतपक्षविषैंअन्यदोषआवैहैसोकहैहै।श्लोक॥नहेतुफलभावादिरभा
भावादनन्वयात्॥संतानांतरवन्नैकःसंतानःसहतःष्टथक्॥७॥अर्थक्षणिकएकां

तपश्चविषैहेतुनावश्रश्फलनावश्रादिग्राहतैवाप्यकहियेवासनायोपघासकफहि
येवासनालेनेवाल।वक्रश्रिकर्मश्रश्कर्मकाफलकैसंबंधवक्रश्रिपहतिश्रादिग्नाव
नांहीनवैहै।जातैएनावश्रश्यनावतैश्रन्वयविनांहोयनांही।श्रश्सर्वथाक्षणिकमैश्र।
न्वयीछ्यासिद्धहोयनांहीनैसैंनित्तश्रन्यसंतानहैतैसैसंतानसंतानीनीनित्तहीहै।
तेनीश्रन्यसंतानकीज्योंहै।वक्रश्रिसंतानीजेक्षणतिनितैनित्तारहातोनित्तश्रन्यसं।
तानकीज्योंसंतानकिछवस्तुहैनांहीतिनिसंतानीनिकीएकतारहीकूंसंतानकहि
येहै।श्रैसैश्रन्यनावतैश्रन्वयविनांहेतुफलनावादिकनवणी।संतानसंतानीकैश्र
न्वयहोयसोहीसत्यार्थसंतानहै।तिसहीकैहोतैहेतुफलनावादिकवणैहै।छ॥ ५०
श्रीपैफेस्क्षणिकवादीकावचनकानत्तरश्राचार्यकहैहै॥श्लोक॥श्रसेष्टनश्च

हेयंसंहतिर्नमृषाकर्थं।मुख्यार्थःसंहतिर्नस्याद्विनामुख्यान्नसंहतिः॥८॥श्रर्थ।इ
हांसौगतवौद्धक्षणिकवादीकहैहै।जोश्रन्यविषैश्रन्यनश्रैसाग्रहहै।सोसंहति।
कहिएव्यवहारमात्रउपचारकरियेहै।नावार्थ।संतानीजेक्षणहैतिनितैसंतान
जोक्षणनिकापघाहकीपरिपाटीताकूश्रैसैकहियेहैसोयहक्षणनिकासंतान
हैसोश्रैसैक्षणहीहैतिनितैश्रन्यसंतानतौकिछपरमार्थभूतहैनांही।परमार्थदे
खियेतबतौक्षणश्रन्यहीहै।श्रसंतानतैश्रनन्यकहियेहैसोयहव्यवहारउपचा
रहै।श्रैसैक्षणकवादीकहै।ताकूंश्राचार्यकहैहै।जोश्रन्यविषैश्रन्यनकहनांस
र्वथाहीसंहतिहै।उपचारहैतौमृषाकहियेश्रसत्यकैसैनहोययहतौरूवहीहै।।
वक्रश्रिकहैजोसंतानहैसोमुख्यार्थहीहैसत्यार्थहीहै।।तोमुख्यार्थहोयसोसंहत।

ES BHAU

तिकहियेउपचारनहोय।वक्तरिकहैजोसंतानतौसहतिहोहैतौसंहतिनैमुख्यपयो
जनसत्यार्थजेप्रतिनिज्ञानआदिकतैपरमार्थभूतसंतानविनाकैसैसधैसैसाणव
कविषैंअधिकाअध्यारोपकरियेउपचारकरियेतबमाणवकतौंअधिकाकार्यतौ।
सधैनांहीतैसैउपचरितसंतानहैसोसंताननियमकाकारणनहोय।वक्तरिसंह।
तिउपचारहैसोजोमुख्यसत्यार्थविनातौहोयनांहीजैसैसाचासिंहहोयतौताका।
चिन्तामनीहोय।अरसाचासिंहनहोयतबताकाचित्रमकैसैहोयवक्तरिसंता
नपरमार्थभूतनठहैरैतबक्षणनैसंतानीनिनिकैसंकरपणांआवैजातैसंता
नीनैक्षणनिनिकैकार्यप्रतिनियमकारणपणांनवणैहै।न्यारेहोयएककार्यक। ५१
रैतबसंकदोषआवै।।आगैबौद्धमतीक्षणिकवादीकहैजोसंतानपरमार्थभूतक

हियेतौएकसंतानसंतानीनितैंभिन्नहैकिअभिन्नहैकिभिन्नाभिन्नरूपहैकिदो
कनावनितैरहितहैअैसासिद्धनहोयहैतातैअैसैहैसोश्लोकमैकहैहै।चतुःको
टेर्विकल्पस्यसर्वांतेपूक्तयोगतः।तत्वान्यत्वमवाच्यंचतयोःसंतानतद्वतोः।।अ
र्थ।क्षणिकवादीबौद्धअैसैकहैजोसंतानअरसंतानीनिनिहोकनिकैतत्पणांहै
किअतपणांहैअैसैदोकनावकहेजातेनांही।अवक्तव्यहै।जातैविकल्पकीच्या।
रिकोटिहै।सत्रूपहैकिअसतरूपहै।किसतअसतइनिदोकरूपहैकिदोक
रूपनांहीहै।अैसैसोसर्वहीधर्मनिविषैइनिच्यारिकोटिनकाकहनेवालावचनका
अयोगहैकिअकथ्याजातानांही।अैसैहीसंतानसंताकैनीतत्पणांअतपणांकह
नेकाअयोगहैजोवस्तकूंधर्मनितैंअतकहियेतौवस्तमात्रहीठहरै।वक्तरिव।

स्कतैश्चान्यकहियेतौऽसवस्तुकेएधर्महैश्चैसैकहनांनवणी॥दोऊकहियेतौदोऊ॥
दोषश्चावैदोऊरहितकहितोवस्तुनिःस्वभावधहैरै॥यातैसंतानसंतीनीकैतत्व॥
अन्यत्वपणांश्चक्यहीसिद्धहोयोहैश्चैसैवौधकहैताकूंआचार्यकहैहैजोश्चैसै
कहनेवालेकूंश्चैकहनां॥चाश्लोक॥अवक्तव्यचतुकोटिविकल्पोपिनकथ्यता॥
असंवीतमवस्तुस्यादविशेष्यविशेषणा॥१०॥अर्थी॥ह्यणिवादीकूंआचार्यकहैहै
जोसर्वधर्मनिविषैच्यारिकोटिकैविकल्पकहनेकावचनकायोगहै॥तोच्यारि॥
कोटिकाविकल्पअवक्तव्यहै॥यहनीवस्तमतिकहै॥वऊरिकिछहीनकहनां॥
तवपरकैपतीतिउपजावनेंकानीश्रयोगआया॥वऊरिश्चैसैंहोतैसर्वविक॥ ५२
ल्पनितैंरहितअवस्तुहीवहरैश्चैनातैंसर्वधर्मनितैंरहितभयातवविशेषणा॥

शेषणानावतैनीरहितभयातवअवस्तुहीभया॥वऊरिसर्वथाविशेष्यविशेषण॥
रहितहोयताकापनिषेधकरनांनीवणीनांही॥नातैंवस्तुहीविषैंपनिषेधकरनां॥
वणीहैसोंहीकहैहै॥श्लोक॥ऽव्याद्यंतरभावेननिषेधःसंज्ञिनःसतः असद्भेदेन
चावस्तुस्थांनंविधिनिषेधयो॥११॥अर्थ॥जोसतानसहितसंज्ञीकहियेसंज्ञावा॥
नवहार्थहैताहीकापव्यांतरक्षेत्रांतरकालांतरभावांतरऽनिकरिअपनेंद्रव्यक्षे
त्रकालभावनिकीअपेक्षानिषेधकीजियेहै॥वऊरिअसत्तारूपकातौनिषेधसंज्ञा॥
वैनांही॥सर्वथाअवस्तुतौपनिषेधकाविषयनांहीनातैंअसत्तनेदरूपहैसोतौ
अवस्तुहैसोतौविधिनिषेधकाख्यानांहीहैकाथेंवितसत्विशेषपदार्थहीवि॥
धिअरनिषेधऽनिकाआधारहै॥नातैंश्चैसाआयाजोअन्यवादीनैमान्याजोसर्व॥

धर्मनिकरिरहिततत्वसोअवस्तुहैसोअवक्तव्यहैऐसैकहैहै।ब।श्लोक॥अव।
स्त्वनभिलाप्यंस्यात्सर्वैतैःपरिवर्जितवस्तेवावस्तुतायातिप्रक्रियायाविपर्यया
त्।१७॥अर्थ॥जोसर्वैतैःपरिपरिवर्जितंकहियेसर्वधर्मनिकरिरहितहैसोधर्मीनां
हीअवस्तुहैतातैऐसाकाहूपमाणकाविषयनांहीसोहीअनभिलाप्यकहियेअव
क्तव्यहै।इहांद्वणिकवादीकहैजोसर्वधर्मनिकरिरहितअवस्तुअवक्तव्यहैतौ
तुमअवस्तुअवक्तव्यहै॥ऐसाजोकैसैकहौहौतातूंकहियेजोहमजातूंअवस्तु
कहैहैसोअवस्तुसर्वधर्मनिकरिरहितकूंनांहीकहैहै॥सत्असत्तदुभयादिअने
कांतात्मकंवस्तुकहैहैसोऐसैंहीतैंद्रव्यक्षेत्रकालभावकीअपेक्षाप्रक्रियाकै। ५५
विपर्ययकेवशतैवस्तुहीकूंअवस्तुकहौहै॥बजरिसर्वथाएकांतकरिसर्वधर्म

निकरिरहितहैतातूंतौअवस्तुकहैहैसोपरवादीकीकाल्पनांकीअपेक्षालेकरि
कहनांहै॥परमार्थतैसर्वधर्मनिकरिरहितहैतातूंतौअवस्तुहैऐसाकहनांजोह
मारैनांहीहै॥हमारैऐसैहैनैसैघटकूंअघटकीअपेक्षाअघटकहियेतैंसैअ
वस्तुकूंहीअवस्तुकहियेयासैंविरुद्धनांहीं॥जैसैंकाहूनैकह्योजोअब्राह्म
णकूंल्यावतहांजाननांजोब्राह्मणतैंअपक्षत्रियादिककूंबुलावैहै॥तथाब्राह्म
णकासर्वथाअभावनकहैहैनावहीकूंअपेक्षातैंअभावकहियेतैंसैंहीवस्तुकूं
अवस्तुकहनांअपेक्षातैहै॥जोसर्वथासर्वधर्मनितैंरहितहैसोअवस्तुतौअवस्तु
व्यहीहै॥ऐसैजाननां॥ब॥आगैद्वणिकवादीनिकूंकिछविशेषकरिदूषणादिघा
वैहै॥श्लोक॥सर्वांताश्चेदवक्तव्यास्तेषांकिंवचनंपुनःसंहतिश्चेन्मृषैवैषापरमार्थ

विपर्ययात्॥१३॥अर्थ॥अन्यवादीकैजोसर्वथाकहियेसर्वधर्महैतैअवक्तव्यहै
तिनिकैधर्मधर्मउपदेशरूपतथाअपनैतत्वकासाधनरूपपरकैदूषणरूपव
चनकहाहैकिछनीनांहीतवमौनहीसिद्धनयावक्तरिकहैजोसहतिकतियेव्य
वहारकैप्रवर्तनकूंउपचाररूपवचनहै॥ताकूंकहियेपरमार्थकैविपर्यय॥
तैंउपचारहै॥सोरतोमिथ्याहैअसत्यहै॥वक्तरिकैविवादीकहैजोकोईमौनीश्रै॥
सैकहैजोमेरैसदामौनहै॥श्रैसाकहनामौननैविरोधीहैतौऊपरकैजनावनैकूं
कहियेसोउपचारहै॥तैसैसर्वधर्मअवक्तव्यहैतौऊपरकैजनावनैकूंउपचार
रूपवचनकरिअवक्तव्यश्रैसावचनकहियेहै॥ताकूंकहिएजोअवक्तव्यकैसै ५४
हैस्वरूपकरिहिकिपररूपकरिहैकिदोऊरूपकरिहैकितत्वस्वरूपकरिहै

किंमृषास्वरूपकरिहै॥श्रैसैविचारियेतवकईहीपक्षानवहरैहै॥जोस्वरूपक
रिअवक्तव्यकहैतौअवक्तव्यकैसैजोअपनारूपहैसोकहनैमैंआवैहै॥वक्त
रियररूपकरिअवक्तव्यहैतौस्वरूपकटितौवक्तव्यहीनवहैरै॥वक्तरिहोऊपक्ष
मैंदोऊदोषआवै॥वक्तरितत्वकरिअवक्तव्यकहैतौव्यवहारकरिवक्तव्यक॥
हनांवहरै॥वक्तरिमृषापणांकरिअवक्तव्यकहनांनकहनांतुल्यहीहै॥श्रैसैव
क्तनकहनैंकरिकहा॥सर्वथा॥अवक्तव्यकहनैंमैंतौअवक्तव्यहै॥श्रैसाकहनांन २
नवणैहै॥तवपरकूंप्रतीतिउपजावनैंकोअयोगहै॥छ॥आगैसर्वथाअवक्तव्य
कहनेंवालेवादीकूंकहैहै॥जोअवक्तव्यकैमैंकहैश्रैसैंपूछेदोषदियावैहै॥॥
श्लोक॥अवक्तव्यादवाच्यंकिंसन्नावाक्किमबोधतः आद्यंतोक्तिद्वयेनस्यात्किं

व्यानेनोच्यतांमुटं॥१४॥अर्थ॥अवक्तव्यवादीकूंकहैहैतूअवक्तव्यकहैहैसोअ॥
शक्यत्वातकहियेतेरैकहनेंकीसामर्थ्यनाहीहैतिसपणांकरिकहीहै॥कित॥
त्वकाअनावैहैतातैअवक्तव्यकहैहैकिअवोधतकहियेतैरैतत्वकाज्ञाननां॥
हीहैतातैअवक्तव्यकहैहै॥अैसैतीनपक्षपूछीइनिमिवायपक्षकहैतौइनिहीमै
अंतर्भूतहोयहै॥ताहांआदिकीपक्षतौअशक्यपणांअरअंतकीपक्षअवोध॥
दोऊपक्षतौवणीनांही॥नातैक्षणिकमतकाआसवुद्धसुगतकैसवैस्याणांकहै
है॥तथाक्षमामैत्रीध्यानदानवीर्यज्ञानलक्षणोयायधर्मोदस्वरूपदशबलमं
नैहै॥ताकैअज्ञानअसमर्थतांकैसैवणी॥वक्तरिमध्यकीपक्षअनावहैसोवौद्ध ५५
तांकूंकहैहैजोअव्याजहिएक्षलकरिकहाप्रगटपणीतत्वकासर्वथाअभाव॥

हैअैसैसएकरिकहै॥अैसैकहैंएकपणांनआवैहै॥मायाचारीकरैअनासपणां
कापसंगआवैगा॥अैसैंसर्वथाअभावकहतैअवक्तव्यमैअरसूक्ष्ममतमैंकिशेष
हनांही॥अैसैवौद्धमतीकैसूक्ष्ममतकापसंगआवैहै॥वक्तरिकहैजोज्ञानक्षयतत्व
कासंकेतकीयाजातानांही॥तातैअवक्तव्यहै॥ताकूंकहियेवस्तुकाज्ञानक्षय
भावस्वरूपनांही॥सामांन्यविशेषरूपतथानित्यानित्यस्वरूपज्ञात्यंतरहै॥तातै
कथंचितसंकेतकरणासंज्ञवैहै॥जातैपरमार्थवस्तुकास्वज्ञानवपरज्ञानस्व
रविकल्पगम्यअैसैदोऊस्वरूपहै॥तातैसंकेतकरणासंज्ञवैहै॥अैसैंसर्वथाअव॥
क्तव्यवादीजोज्ञानकवादीतांकैसूक्ष्मवादआवैहै॥छ॥आगैंकहैहैजोयाहीतैज्ञा॥
नक्षयएकांतपक्षमैंकीयेकार्यकरतौनाशअरविनाकीयेकाहोनेंकापसंगआ

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वैहै। सोश्रैसातौउपहासकाविकाणाहै॥ श्लोका॥ हिनस्त्यनभिसंधाद्यनहिनस्त्य
भिसंधिमत्। वध्यतेनचयायेतंचित्रंवबंधमुच्यते॥ १५॥ अर्थ॥ ज्ञानिनिरन्तरयचि
तहैसोजोचित्तप्राणीकेघातनेकाअभिप्रायकरैहै। जोमैयाप्राणीकूंघातूंश्रैसा
अभिसंधिमनसोतौनांहीहीहैतौहैनांहीघातेहै। जोतैजान्योमैंअभिप्रायकीया
नाहीज्ञाणमैंवहचित्तहै। पीछैअन्यचित्तउपज्या। वऊरिजोचितप्राणीकाघातने
काअभिप्रायनकरैहै। सोअनभिसंधाहृचितप्राणीकूंहतोहैघातेहै। जातैजानैं।
अभिप्रायकीयाथासोविनिश्चिगया। पीछैअन्यचित्तउपज्यातानैंहण्या। वऊरि
जोचितहिंसनेकाअभिप्रायकरनेवालाचितनैंतथाहिंसनेवालाचितनैंइनिदो ५६
ऊनिनैंअन्यउपज्यातांकैहिंसाकाफलबंधथासोनथा। वऊरिजिसकैबंधनथा

सोनहूनथातबअन्यचितउपज्यासोबंधतैंहुआश्रैसाहिंसाकाअभिप्रायअनैंकी
याहिंसाअन्यनैंकरीबंधाअनहुआअन्यश्रैसैंकीयेकानाशविनाकीयेकाहीनें।
कापसंगआवैहैसोहास्यकाविकाणाहै। वऊरिसंतानतथावासनाकहैतौपरमा
र्थतैयहजीवज्ञाणिकवादीकैनांहीवणैहै। वऊरिस्यादवादीनिकैकथंचित्सर्व।
मावनिर्बाधसंभवैहै॥ ८॥ आगैज्ञाणिकवादीनिकैऽसहीअर्थकूंविशेषकरिदू
षणादिषावैहै॥ ९॥ श्लोका॥ अहेतुकत्वान्नाशस्यहिंसाहेतुर्नहिंसकः। चित्तसंता
तिनाशश्चमोक्षोनाणाहेतुकः॥ १६॥ अर्थ॥ ज्ञाणक्षयणाकांतवादीनाशकूंअहे
तुकहैहैतोवस्तुविनशैहैसोस्वयमेवविनाहैतुविनशैहैसोश्रैसैंकहतुतौजो।
हेसाकरनेवालाहिंसकहैसोहिंसाकाहेतुनवहस्या॥ वऊरिचित्तकासंतानकूं

धर्मोमूलतैंनाशहोनाक्योंकहमानैहै॥ताकूंअष्टांगहेतुतैंनयाकहैहैसोभीनठ
हरैमोक्षकाअष्टांगहेतुअैसासम्यक्कासंज्ञासंज्ञीवचनकायकाकर्म॥अंत
र्यायामजीवस्मृतिध्यानसमाधि॥ताहांसम्यक्कहिएबुद्धधर्मकाअंगीकारसं
ज्ञासंज्ञीकहियेवस्तुकीनामज्ञानभो॥वचनकायकाव्यापाराअंतर्यायामकहि
येश्वासोश्वासपवनकानिरोधजीवकहियेजीवकाअजावास्मृतिकहियेपिटक
येशास्त्रकीविद्या॥ध्यानकहिएकाग्रहोनां॥समाधिकहियेलयहोनां॥अैसे॥
अष्टांगहेतुकमोक्षकहनांनवणै॥अैसेनाशकूंहेतुविनाकहनैमैंइषाहैछ॥
आगैबौद्धकहैजोविरूपकार्यविसदृशकार्यकैअर्थिहेतुमानियेहै॥ताकाइष॥ ५७
णादिषावैहै॥श्लोक॥विरूपकार्योत्पादयदिहेतुसमागमः॥अाश्रयिव्यासन॥

मोसावविशेषादयुक्तवत्॥१७॥अर्थ॥विरूपकार्यकहियेहिंसाअरबंधमोक्षना
काअारंभकैअर्थिहिंसकअरसम्यक्अादिअष्टांगहेतुकासमागमकहियेव्यापा
रमानियेहैअैसेबौद्धकहैताकूंआचार्यकहैहैनोयहहेतुमानांअपनेआश्रयीने
नाशअरउत्पादतिनितैंअन्यनांहीहै॥अनन्यकहियेआनेदरूपहैनेनाशकाक १
रणहैसोहीउत्पादकाकारणहैयामैंविशेषनांहीं॥जैसैअयुक्तकहियेनावीअनेद॥
रूपहोय॥तिनितैंतिनिकाकारणजोनिलनहोयतैंपैंयदलेआकारकानिनाश
उतरआकारकाउत्पादकाकारणकहीहै॥तातैंनोउत्पादकूंतौहेतुमानैंअरन २
शकूंअहेतुमानैं॥सोकैसैंवणै॥जैसैमुद्गरघटकैनाशकाकारणहैसोहीकपाल
कैउत्पादकाकारणहैउत्पादनाशदोकहेतुविनांनांहीं॥छा॥आगैबौद्धमतीकूं॥

कहैनोतुमाश्रेष्ठाणैपरमाणूनपनैहैकितुमस्कंधसंततिमांनूंहोतेनपनैहैनोक
हौतोपरमाणूनपनैहैतोयामैंतोंहैतुफलनावकाविरोधश्चावैराजैसैंविनाज्ञहै
तुविनांमानूंहौतैसैहीज्ञत्यादनीहैतुविनमानूं।वज्रशिलोस्कंधसंततिकूंनपज्यामं २
नूंहौतौतासैदूषणहैसोदिषावैहै॥श्लोक॥स्कंधाःसंततयश्चैवसंहतित्वादसं।
स्कृताः॥स्थित्युत्पत्तिव्ययास्तेषांनस्यःस्वरविषाणवत्॥१८॥अर्थ।स्कंधाकहिये।
रूपवेदनाविज्ञानसंस्कारणायेपञ्चस्कंधहै॥तहांस्पर्शरसगंधवर्णकैपरमाणूनै २
रूपस्कंधहै॥वज्रशिलसुखदुःखआदिकवेदनास्कंधहै॥वज्रशिलविकल्पकनि।
र्विकल्पज्ञानविज्ञानस्कंधहै।वज्रशिलवस्तुनिकेज्ञानमयोसंज्ञास्कंधहै।वज्रशिलान ५८
पुण्यपापकीवासनाहैसोसंस्कारस्कंधहै॥तिनिकेसंतानकूंसंततिकहियेसोए।

स्कंधसंततिहैतेभ्रसंस्कृतहै॥अकार्यरूपहै॥जातैंउनिकैसंहतिपणांहैउपचार
करिबुद्धिकल्पितहै॥बौद्धमतीपरमाणूनिकूंसर्वथाभिन्नहीमांनैहैसोसंतानस
मुदायआदिहैतैकल्पनामात्रहैतातैंतिनिस्कंधसंततिनिकैस्थितित्वत्तिवि
नाशएनांहीसंभवैहै।जातैंएस्कंधसंततिविनाकीयेहैकार्यरूपनांही॥बुद्धिकल्पि
तकैकाहिकास्थितिउत्पत्तिविनाशहोयाएतौगधाकेसीगकीज्योंकल्पितहै॥ता
मैंपहलीकारिकामैंकह्याथाजोविरूपकार्यकअर्थिहैतुकाव्यापारमानियेहैसो
नीकहनीविगडैहै।स्कंधसंतानहीकूवेतवकौनरह्या॥जाकैअर्थिहैतुकाव्यापार
मानियै।औसैसंदाणीकाकांतपक्षहैसोअबेदनांहीहैतैसैंनित्यकांतअबेदमांहीहै
तैसैंयहनीपरिक्षाकायैसबाधहै॥छ॥अथागैनित्यक्षणिकाएदोऊपक्षसर्वथा

एकांतकरि मानैं तथा अवक्तव्य मानैं तामैं दूषण दिषावैं है ॥ श्लोक ॥ विरोधान्नो-
भयैकात्म्यं स्याद्वादन्यायविद्विषां अवाच्यतैकांतेप्युक्तिर्नावाच्यमिति युज्यते ॥
१९ ॥ अर्थ ॥ जे स्याद्वादन्याय के विद्वेषी हैं तिनिकैं उभयकहिये नित्यत्वअनित्य
त्वादीकपक्षएकस्वरूप नांही बणैं है जातैं दोकपक्षमैं विरोध है जैसैं जीवनामर
नांऽनिमैं विरोध है तातैं एकस्वरूप होय नांही तैसैं विरोध दूषणकैं नयतैं अवा
च्यताकहिये अवक्तव्यएकांतमानैं तौ यहभी अयुक्त है ॥ जातैं अवाच्य है असी
क्तिकहिये कहनां सोभी नबणैं ॥ ऐसैं कैं हैं भी अवक्तव्यपणांका एकांत तौ नर
ह्या ॥ ८ ॥ आदी शब्दसैं नित्यत्वआदिएकांतनयहरणैं सामर्थ्यतैं अनेकांता की सि- ५९
द्धि नई तौ कमूल्य स्याद्वादीकैं आश्रयकैं नाशकरनैं कूं तथा अनेकांतकैं शोनकीद

दशाकैं अर्थि स्याद्वादन्यायका अनुसारकरि नित्यत्वादिअनेकांतकूं आचार्यदि-
षावैं है ॥ ९ ॥ श्लोक ॥ नित्यंतत्प्रत्यभिज्ञानान्नाकस्मात्तदविच्छिदा ॥ क्षणिकं काल
नेदात्तद्ध्यसंचरदोषतः ॥ १० ॥ अर्थ ॥ हे नगवन् तैं कहिये तुमारा मुहौ अरहंतस्या
द्वादन्यायकैं नायकतिनिकैं सर्वज्ञीवआदिकतत्वहैं सो स्यात्कहिये कथं
चित् नित्यही है ॥ जातैं प्रत्यभिज्ञानप्रमाणतैं पूर्वोत्तरदशा
विषैयहसोही है जो पूर्वैं दिष्या था अबैं सैं एकपणांसिद्ध होयहसोही नित्य है ॥ बहरि
यहप्रत्यभिज्ञानअकस्मात्कहिये निर्विषयनांही जातैं याका अविच्छेदकरि अ-
नुनव है ॥ बहरि क्षणिकवादी है जो पूर्वोत्तरदशाविषैसदृशनावहैतांकूं एकूं
त्वमानन मात्र मैं है ॥ तांकूं कहिये जो पूर्वोत्तरकालकी दोकदशामैं अत्यअभेद है

ऐसा अनुभवका रूप मांण तैसिद्ध होय नांही तातैं एक त्व प्रत्यभिज्ञान ही सत्या
र्थसिद्ध होय है। बहुरि कहैं है जो यह प्रत्यभिज्ञान अकस्मात् नांही है। जातैं बुद्धिक १
अंसंचार काही पैअवै है। जो यह प्रत्यभिज्ञान का विषय नित्य पण नहोय तौ अवि
छेद रूप अनुभवन होय। तब बुद्धिका संचार कैसैं होय। निरन्वय विनाश होय।
तब एक कूंछोड़ि दूसरेपरि बुद्धि कैसैं जाय। जो मैं पूर्व देख्या था सोही मैं वर्त्तमान काल
में नाही कूं देखूं हौं ऐसैं एक द्रव्य विनां पूर्वोत्तर दशा में बुद्धिका संचार नैहोय तातैं प्रत्य
भिज्ञान निर्विषय नांही है। तातैं ऐसा प्रत्यभिज्ञान वस्तु कूं कथंचित् नित्य साधै है।
बहुरि सर्वज्ञादिक वस्तु हैं सो कथंचित् तद्गुणी कहै। जातैं काल काने दै है। ६ ६७
हीनी प्रत्यभिज्ञान प्रमांण नांही तैं सिद्ध है। जातैं तद्गुणी कविनां नी प्रत्यभिज्ञान होय नां

होय हा तद्गुणी कनी प्रत्यभिज्ञान ही का विषय है। जातैं पूर्वोत्तर पर्याय स्वरूप काल।
नेदन मांनियै तौ बुद्धिकै संचार का दोष आवै। काल नेद विना बुद्धिका संचार कैसैं।
कहिये। पूर्व दशा का स्मरण अर वर्त्तमान का दर्शन रूप बुद्धिका संचर पण ऐसैं
पूर्वोत्तर पर्याय विषै बुद्धि संचरै है। तब ही प्रत्यभिज्ञान उपजै है। ऐसैं कथंचित् नि
त्य वस्तु कथंचित् अनित्य पण एक वस्तु विषै सिद्ध होय है। तातैं विरोध आदि दूषण नी
नांही है। जो दूषण आवै है सो सर्वथा एकांत पक्ष मैं ही आवै है। आगैं मानूनवान।
कैरिपूछ्यो जो जीवादि वस्तु सत्ता द्रव्य विना आकार रहित तिष्ठै तिमात्र तौ कैसे स्वरूप करि।
है। बहुरि विनाश सत्ता द्रव्य कैसे स्वरूप करि है। बहुरि त्रयात्मक एक वस्तु कौ नव
कार सिद्ध होय है। ऐसैं पूछे मांनू आचार्य कहै है। श्लोक। नसामान्यात्मनोदेति न

LEHAU DAU

ऽपेतिव्यक्तमन्वयात्॥व्येत्युदेतिविशेषातेसहैकत्रोदयादिसत्॥२१॥अर्थो॥वस्तु॥
हैसोसामान्यस्वरूपकरितौनउदेतिकहियेउपजैनांहीहैउत्पादनहोय॥वक्तरिना-
शेतिकहियेविनशैनांहीहैनातैव्यक्तकहियेप्रगटअन्वयस्वरूपहै॥वक्तरिविशे-
षस्वरूपकरिविनशैजोहैस्थितिनाहै॥त्रैमेंतीननावनिरूपसत्वस्तुहै॥ताहोसा-
मान्यस्वरूपतौसर्वअवस्थामेंसाधारणस्वभावहै॥साकूंअन्वयरूपद्रव्यकहि-
येहै वक्तरिविशेषव्यतिरेकरूपपर्यायहै॥वक्तरिऽहाव्यक्तशैसाविशेषणहै॥सो॥
प्रगटप्रमाणकरिअबाधितसामान्यविशेषरूपत्रैमेंहीकहोयहैत्रैमाननावैहै॥वा-
क्यियुगपतउत्पादव्ययध्रौव्यतीनूंकह्यासोप्रमाणकाविषयहैसत्कालक्षणत्रै- ६१
साहीसिद्धहोयहै॥२१॥अबौंअसवादीजोसत्कालक्षणत्रयात्मककीयासोकैतौ॥

सत्नित्यहीवतौंकैउपजनाविनशनारूपअनित्यहीवतौं॥नित्यानित्यमेंतौंविरोध
है॥नातैनौंउत्पादअरव्ययहोयहैसोपूर्वेयाकाकछूसत्नांहीहैनवीनहीउपजै
है॥त्रैमेंकहनाजातैंनित्यपूर्वेहोयनाकातौनाद्यकैसैहोय॥अरपूर्वेअनित्यहाथा
तौकार्यउपज्यायविनशिगयाताकानवीननयेकार्यमेंसतकैसैंकहियेत्रैमेंयु-
क्तिकरैताकूंआचार्यकहैहै जोकार्यकाउपजिकैपहलैअभावहैसोभावस्वभा-
वहीहै सोतैमेंहैतैसैंदिषावैहै॥श्लोक॥कार्योत्पादःक्षयोहेतोर्नियमालक्षणा
त्पृथक्॥नतौजात्याद्यवस्थानादनपेक्षास्वपुष्पवत्॥२२॥अर्थो॥हेतुकहियेउप
दानकारणताकाक्षयकहियेविनाशहैसोहीकार्यकाउत्पादहै॥जातैंहेतुकैनि
यमसैंकार्यकाउपजनांहै॥जोकार्यतैंसर्वथाअन्यहैताकैनियमनांहीहै॥वक्त॥

रितेऽस्यादविनाश्रनित्यलक्षणतैस्यारेस्यारेहै।कथंचित्तनेदरूपहै।वज्रस्निग्धा
श्रादिकेश्रवस्थानतैंनित्यनांहीहै।कथंचित्तश्रनेदरूपहै।वज्रस्थिरस्यरश्र।
क्षारहितहोयतौश्रवस्तुहैश्राकाश्रकेफूलतुल्यहै।इहांनैसैकपालकाउत्पाद
श्रघटकाविनाशकैएकहेतुकेनियमतैंकार्यकाउत्पादहैसोहीपूर्वश्राकार
काविनाशहैश्रघटोकमैंलक्षणानेदहैहै।उत्पादकास्वरूपश्रस्य।विनाशकारू
पश्रन्यश्रैसैलक्षणानेदतैंनेदहैहै।वज्रस्निसर्वथानेदहीनांहीहै।नैसैकपालक
उत्पादश्रघटकाविनाशएहैकमृत्तिकास्वरूपहीहै।तैसैंकथंचित्तश्रनेदरू
पनीहै।श्रैसैउत्पादव्ययध्रौव्यस्वरूपवस्तुसिद्धहोयहै।इतीतीनूनावनिकैपर
स्परश्रपेक्षानहोयतौतीनूंहीश्रवस्तवहरै।तववस्तुसिद्धनहोया।कैवलउत्पा

दहीमानियेतौनवीनवस्तूत्पन्नाउत्पादहरै।तवमृत्पिंडाद्यवस्थाश्रावै।वज्रस्निकै
वलस्थितिहीमानियेतौउत्पादविनाशहैहीनेनवहरै।श्रैसैउत्पादविरोधश्रावै।ता
तैंकथंचित्तत्रयात्मकवस्तुमांननांयुक्तहै।छ।।श्रातौइसश्रर्थकीप्रतीतिकेसम।
र्थनेंकूंलौकीकजननकैंप्रसिद्धश्रसाहष्टांतेंकहैहै।।श्लोक।।घटमौलिसुवर्णार्थीना।
शोत्पादस्थितिष्वयं।।शोकप्रमोदमाध्यंजनीयातिसहेतुकं।।२।।श्रर्थी।।घटमौलिसु
वर्णार्थिनिकाश्रर्थीयहलोकहैसोसुवर्णाकाघटकूंनांनिमौलिकरनेंमैंशोकप्रमोद।
माध्यस्थकूंपासहोयहै।सोहेतुसहितहैनोघटकाश्रर्थीहैनाकैतोघटकेविनाशहो।
नैंनैंशोकजनायासोशोककाकारणघटनाशनया।वज्रस्निघटकूंनांनिमौलिकरनें
नैंमौलिकाश्रर्थीकैहर्षनयासोहर्षेकारणमौलिकाउत्पादनया।वज्रस्निसुवर्णा

कांक्षथीहैतांकैंशोकहर्षननयामाध्यस्थरह्या॥घटनीसुवर्णाहीथा॥मौलिनीसुवर्णी
हाहैश्रैसैमाध्यस्थकाकारणीसुवर्णाकस्थितिनई॥श्रैसैलोकिकजननकैउत्पादव्य॥
ध्रौव्यस्वरूपवस्तुपतीतिनेदसैसिद्धहै॥छ॥श्रागैजोलोकोत्तरजनबतीहैतिनिकै॥
नीपतीतिनेदसैश्रैसैंहीसिद्धहैताकादृष्टांतकहैहै॥छ॥श्लोक॥पयोव्रतोनदध्यत्तिन
पयोसिदधिव्रतः॥श्रगोरसव्रतोनेदस्मातत्त्वत्रयात्मकं॥२४॥श्रर्थ॥ताकैश्रैसाव्रत॥
होयनोश्रानिमैंदूधहीत्योंगासोतौदहीनांहीषायहै॥वकुरिजाकैश्रैसाव्रतहोयनोश्रा
निमैंदहीहीत्योंगासोवहदूधनांहीषीवैहै॥वकुरिजोरसवाव्रतनांहीसीदोऊनांहीले
हैतासैतत्वहैसोत्रयात्मकहैनावार्था॥गोरसश्रैसादूधश्ररदहीऽनिदोऊकूंकहियेहै॥ ६३
सोवस्तुविचारियेतवतीनामैश्रनेदेनाहै॥नासैदोऊणकगोरसस्वरूपहीहै॥वकु॥

रिनेदनाहैतासैंव्रतीननहैनेश्रैसैमानेहैनोदूधमानेकीव्रतिनालेतवदहीयद्यपिगो
रसहीहैतासैनेदमांनिनषायहै॥तैसैंहीदहीषानेंकीव्रतिनालेतवदूधैकूंनेदमांनि
नषायहै॥वकुरिजोदोऊकास्वानेकीव्रतिनानांहीलेसोदोऊहीनषाया॥श्रैसैव्रतीनैं २
नेदानेदरूपवस्तुमांनैहैतासैंश्रैसैंहीत्रयात्मकवस्तुपतीतिसिद्धहै॥तासैंकथंचित्
नित्यहीहैकथंचित्श्रनित्यहीहै॥श्रैसैंहीकथंचित्नित्यानित्यहीहै॥कथंचित्श्रव॥
क्तव्यहीहै॥कथंचित्नित्यश्रवक्तव्यहीहै॥कथंचित्श्रनित्यश्रवक्तव्यहीहै॥कथं
चित्नित्यानित्यश्रवक्तव्यहीहै॥श्रैसेयथायोगसप्तभंगीजोडना॥तैसैंपदार्थसप्त
दिपरिजोडीतासैंसैंहीनयसप्तावणी॥छ॥बीपई॥नित्यश्रादिकांतवसाय॥पदार्थ
नवमैंव्रमकराय॥तिनकैंउधरनकूंजिनबैनाश्रनेकांतमयवरतैश्रैना॥१६ती

श्रीआप्तमीमांसानामदेवागमस्तोत्रकीसंदेपअर्थरूपदेशभाषावचनिकाविषै
तृतीयपरिछेदसमाप्तभया॥३॥इहांताईकारिकासात्रिनईं॥६०॥आगैचतुर्थपरिछे
दकाघारंभहै॥दोहा॥नेदआदिएकांतसतसाईकियोजिनमूरखवचनकिरणतैना
मपदानमूंकर्मनिरमूरणाशास्त्रवईहांपथमहीवैशेषिकमतीनेएकांतपक्षवा॥पा
नांमतथापैताकापूर्वपक्षका॥श्लोका॥कार्यकारणनानात्वंगुणगुण्यंसनाविका॥सा
मान्यतद्वदयुतसिद्धैकांतेनयदीष्यते॥१॥अर्था॥कार्यकैअरकारणकैनानापणांवऊ
रिगुणकैअरगुणीकैअत्यंताकहियेनेदरूपनापणां॥वऊरिसामांन्यकैअरत
तकहियेविशेषनिकैअत्यंतापणांश्रैसैनैयोएकांतकरिमांनियेश्रैशेषिकमतीपूर्वप ६५
दकरैताकाउत्तरश्रीतीकारिकासैंहोसी॥इहांकार्यकैग्रहणतैतौकर्मकात

तथाश्रवयवीकातथाश्रनित्यगुणकातथाध्वंसाभाकाग्रहणहैवऊरिकारणकै।
वचनतैंसमवायीतथासमवायतथाध्वंसकानिमितकाग्रहणहैवऊरिगुणश्रह।
तैंनित्यगुणकाग्रहणहैवऊरिगुणीवचनतैंगुणकाश्राश्रयरूपदव्यकाग्रहणहै व
ऊरिसामान्यवचनतैंपरश्रपरनातिरूपसामांनपरिणांमकाग्रहै।वऊरितद्वतवचना
तैंश्रथारूपविशेषनिकाग्रहणहैश्रैसैंवैशेषिकमतीमानैहैतोइनिकैसर्वकैनेदहीर
णकतांनहीहैश्रनेदतांहीहैश्रैसाएकांतकरिमांनैहैताकूंश्राचार्यकहैहैतोश्रैसामानै।
इषणाश्रावैहैसोहीदिषावैहै॥श्लोका॥एकस्यानेकवृत्तिर्नोनानाबाद्रूनिवानानित्व
द्यास्यनैकत्वंदोषोवृत्तेरनार्हतेशाश्रर्था॥कार्यकैअरकारणकैवऊरिगुणकैअर।
गुणीकैवऊरिसामान्यकैअरविशेषकैतौएकांतकरिअत्यंतापणांनानापणांसर्वथा

नेदृहीमांनियेतौएककार्यद्रव्यआदिकीअनेककारणनिविषैंहतिकहियेघहति।
नांहावतौनातैंकार्यादिकैनाशकहियेखंडनिकाअनावहै।वक्रशिनोविनानाशका
र्यादिसर्वस्वरूपकरिवर्तैतौएककार्यादिकैवक्रतवहरैसौहैनांही।वक्रशिकार्यद्र।
व्यआदिकूंनाशीकहियेनाशनिसहितखंडरूपमांनियेतौकार्यादिकैएकपणानां
वहरैश्रैसैअहंतर्तैअन्यतौअनहंतताकैमतमैंहतिकादोषआवैहै।अरहतिमानी
वाहियेनमांनियेतौकार्यकारणनावआदिकाविरोधआवै।तहांएकदेशकरिह।
तिमांनियेतौवतौनांही।नातैंकार्यद्रव्यअरगुणअरसामान्यइनिकैअंशसामान्यनां
हीनिवदेशसामान्यहै।वक्रशिसर्वस्वरूपकरिमांनियेतौजेतेकारणहोयतेहीकार्य
द्रव्यवहरै।जैसैएकघटअनेकपृथ्वीकेपरमाणूंरूपकारणनिकरिवर्णयांहै।सो।

जेतेपरमाणूंहैतेतेघटहोयसोहैनांहीवक्रशिएकसंयोगआदिकगुणकाअनेकसंयो
गआदिगुणवहरैसोहैनांही।नातैंएककाएकगुणकाअनेकगुणीनिमैंनसामान्यहैसे
एकगुणकाअनेकगुणहोनापसोअैसामान्यांही।वक्रशिजैसैंहीएकसामान्यकाअनेक
सामान्यवहरै।अैसैकार्यादिककीकारणादिविषैंहतिकादोषआवैहै।तातैंसर्वथा
अनित्यपणांकार्यकारणादिककैवणैनांही।कथंचितनेदमांननांहीनिर्बाधसिद्ध
होयहै।ताआगैअैसैंहीकार्यद्रव्यअवयवीआदिकैकारणअवयवादिकतैंसर्वथानै
दहोतैंदेशकालकरिभीनेदवहरैअैसैंकहैहै।।श्लोक।।देशकालविशेषेपिस्याद्धृतियु
तसिद्धवत्समानेदेशनस्यातमूर्तकारणकार्ययोः।।३।।अर्थ।।अवयवीनैकार्यद्र।
व्यादिकतिनिकैअवयवनेकारणादिकतिनितैसर्वथानेदमांनियेतौदेशकाल।

DEBRAU

कावि शेषहोतैंनीहतिग्रहरै।जैसैदोयद्रव्य।जुडेंयुतसिद्धिकैहतिहोयतैसैग्रहरैप
र्वतकैअरद्रव्यादिकेनेदरूपहतिहैतैसैंग्रहरैसोअैसैहैनांही।अवयवीआदिकै।
अरअवयवआदिककैतौकथंचितनेदहै।वक्रिमूर्तीकनेकारणकार्यतिनिकैस
मानदेशनाकहियेनाकवोअपणांमानैतौयहनीनग्रहैरै।अयंतनिन्नअनेकमूर्ती
कपदार्थकैएकदेशमैरहनाकैसैंवणैं।अैसैसर्वथानेदपक्षमैदूषणआवहै।आगै
केपिप्रस्नोत्तररहै।श्लोक।आश्रयआश्रयिनावान्तस्वान्तंसमवायिनां।द्रव्ययुक्तः
समवंधोनयुक्तःसमवायिनि॥४॥अर्थ।वैशेषिकमतीकहैहैजोसमवायीपदार्थ
हैतिनिकैआश्रयआश्रयिनावहैयातैंस्वाधीनपणांनांहीहै।तातैंकार्यकारणादि
कैदेशकालादिककानेदकरिहतिनांहीहै।समवायीपदार्थतौसमवायकैआ

६६

धीनवरैहैआपहीदेशकालकैनेदकरिहतिकैसैकरैताकूंआचार्यकहैहैजोहे।
वैशेषिकसमवायीपदार्थनिकरिसोसमवायसंवंधनीतौभिन्नहीहै।तुडाताहीहै
सोयुक्तनांहीहोयहैसमवायपदार्थतुडायाताकूंसमवायीपदार्थतुडेतिनैकौनसै ७
ढाअैसैसर्वथानेदमानेंदूषणहीआवैहै।ढा।आगैवैशेषिककहैहैजोकेवलसम
वायतौसत्तासामान्यकीज्योंनित्यहै।अरकार्यउपजैहैतवसत्तासमवायीमानियेहै।
अैसैसमवायकैअरकार्यकैजोडहोताकूंआचार्यदूषणदिषावैहै।श्लोक।सामान्य
समवायश्चएकैकत्रसमाप्तितः।अनरेणाश्रयंनस्यात्नाशोत्पादिषुकोविधिः॥५॥अ
र्थ।सामान्यअरसमवायएदोकनित्यहैअरएकाएककहै।तेदोकएकएकपदार्थ।
विषैसमस्तपणांकरिवरैतवएकएकनित्यपदार्थविषैदोसमाप्तिहोयतवअ

मपदार्थमैकौनतोय॥अरइनिदोकनिकैअंशअवयमांन्यानांही॥तवअनित्यने
उपजनेंविनशनेंवालेंकार्य्यआदिपदार्थहैतेसामान्यअरसमवायविनाहैरै॥त
वसामान्यअरसमवायएदोकहीआअयविनांनहोय॥तवउपजनेंविनाशनेंवा॥
लेपदार्थनिकीकौनविधिमांनिये॥इनिकासत्वअरप्रवर्त्तनानहरै॥औसैदोषअ ७
वै॥छ॥आगैकहैहैऔसैवैशेषिकनिकैंपरस्परसापेक्षानमाननेंनैंनेदएकांतमा॥
ननैंसैंपहलैकहेतेअरअवकहैहैसोइषणाआवैहै॥छ॥श्लोक॥सर्वथानहिसंबंध॥
सामान्यसमवाययोः॥तात्मामर्थीनसंबद्धस्तानिश्रीणिखपुष्पवत्॥६॥अर्थ॥सामा॥
न्यकैअरसमवायकैसर्वथासंबंधवैशेषिकनांहीमान्यांहै॥वकुरितिनिदोकनि ६७
तैअनपदार्थद्रव्यगुणकर्मणानाहीसंबंधरूपहोहै॥नातैंसर्वथानेदपरस्परआपेक्षा॥

रहितमांन्याहैनातैंऐसैंआवैहै॥जोपरस्परअपेक्षाविनांसामान्यसमवाय॥अरअ॥
मपदार्थएतीनूंहीआकाशकेफूलकीज्योंअवस्तुहै॥वैशेषिकनैंकल्पनामात्रक॥
ननालकीयाहै॥औसैकार्यकारणगुणगुणीसामान्यविशेषइनिकैअनपणांकाए॥
कांतअनेदएकांतकीज्योंप्रेक्षनांही॥छ॥आगैअन्यवादीकहैजौकारणआदिकैतौतु
मकहातैसअन्यताअनन्यताकाएकांतमतिहोइ॥वकुरिपरमाणूंनिकैतौनित्यप
णांहैनातैंसर्वअवस्थाविषैअन्यपणाकाअनावैहै॥नातैंअनन्यताकाएकांतहैते
सदाएकस्वरूपरहैहै॥अरअस्वरूपकवरूनहोयताकूंआचार्यकहैहै॥श्लोक॥अ॥
नन्यतैकांतेनाणूनांसंघातेपिविभागवत्॥असंहतत्वप्रसङ्गतवनुक्तंज्ञानिरेवमा॥७॥
अर्थ॥परमाणूंनिकैअनन्यताकहियेअन्यस्वरूपनहोनैकाएकांतहोतैसंघातक

हियेपरस्परमिलितस्कंधहोतैंनीविनागकहियेपहलेन्यारेविनागरूपथेताकीज्यों
नांहीमिलनांहीव्हरैनातैंमिलितस्कंधस्वरूपननयेजोमिलितस्कंधरूपननयेमांनि-
येतौअनन्यताकाएकांतनव्हरैकथंचित्तअन्यस्वरूपननयेव्हरैकथंचित्तअन्य
स्वरूपननयेव्हरै।वक्रस्कंधरूपननयेतवपृथ्वीआपतेजवायुश्रैसाजुतकाचतुष्क
देखियेहैसोजातिरूपव्हरैनातैंभूतचतुष्कपरमाणूनिकाकार्यमांनियेहै।सोचम-
व्हैरैहै॥छ॥आगैंभूतचतुष्कूंजातिमानैंदोषआवैहैसोदिषावैहै॥छ॥श्लोक॥का-
र्यजातेरणुजातिःकार्यलिंगाहिकारणं॥अनयानावस्तत्तल्लंगुणजातीतस्वनाछ।
अर्थ॥परमाणूनिकेकार्यजेपृथ्वीआदिभूतचतुष्कतिकूंजूसस्वरूपमांनैंतैंपरम २ ६८
णूनीनसस्वरूपहीव्हरैहैजातैंतैंकारणहैसोकार्यलिंगस्वरूपहै।कार्यलिंगतैं-

---

हीकारणकाअनुमानकरियेहै॥कार्यजूसव्हरैतवताकाकारणजोजूमहीव्हरै-
रै॥वक्रस्किकार्यकारणस्वरूपजोभूतचतुष्कअरपरमाणूनिहीकेनिकाअना
वतैनिनिकैविषैतिष्टतैंजेगुणजातिसत्वक्रियाविशेषसमवायजानीनव्हरै।त २
तैंपरमाणूनिकैकथंचित्स्कंधरूपअन्यस्वरूपपणांहोनांमांननांअयुक्तहै॥श्रैसै
वैद्यमतीनिकैपरमाणूनिकाअन्यूस्वरूपनहोनांमांननांअयुक्तहै॥तैसैवैशेष-
कनिकानीमतसिद्धनहोयहै॥छ॥आगैंसांख्यमतीकार्यकारणकूंएकस्वरू-
पहीमानैंकथंचित्अन्यस्वरूपननांतैंसामैंदूषणदिषावैहै॥श्लोक॥एकत्वेन्य
तरानावःशेषानावोविनाभुवः॥द्वित्वसंख्याविरोधश्चसंहतिश्रैनषैवसा॥ए
अर्थ॥कार्यजोमाहानअादिअरकारणजोप्रधानताकैपरस्परएकस्वरूपता॥

द्वात्मप्रमाणनैगमवत्तादात्म्यैकस्वरूपनयात्तदेकत्वाश्रितावयवनयात्तदेकत्वा॥
क्रियैकत्वाच्चोपसर्जनैश्चितानावहै॥तातैउसरेकाश्रितावहोतैशेषरह्याथ२
एकतात्कालीश्रितावयवनयात्॥श्रैसैंदोकहीनरहरैहै॥वक्रियेयपर्यायकीसंख्यामा॥
नियेहैतात्कालिकविरोधश्रावैहैयहसख्यानीनरहरै॥वक्रियैकहैद्वित्वकीसंख्यातौसं
ख्यानिहैकल्पनाहैउपचारहैतौकल्पनोपचारहै॥सोमृषाहीहैश्रसत्यहीहैतात्कीक
हाचस्वा॥श्रैसैंधर्मनमहत्त्वादिसांख्यकल्पितकैश्रन्यतात्कात्तकांतमाननैंदूष
णश्रावैहै॥तथापुरुषश्चरवैतन्यइत्यनिकैनीश्रनन्यतात्कात्तकांतमाननीदोकात्कश्र
नावश्चरद्वित्वसंख्याकविरोधश्रावैहै॥श्रैसैंकार्यकारणादिकात्कश्रनन्यतात्कांत ६७
नाहीसंनवैहै॥छ॥श्रागैंश्रन्यतात्कश्चनन्यतीदोकपक्षकात्कांतमाननैंतथा॥

श्रवक्तव्यात्कांतमाननैंदूषणादिपावैहै॥छ॥श्लोक॥विरोधान्नोनयैकात्म्यंस्याद्वा
दन्यायविद्विषां॥श्रवाच्यतैकांतेप्युक्तिर्नावाच्यमितियुज्यते॥१७॥श्रर्थ॥स्याद्वादन्यायके
विद्वेषीनिकैश्रन्यतात्कश्चनन्यतादोकैकैकस्वरूपपणानसंनवैहै॥श्रवयवश्चवय
वीगुणगुणीसामान्यविशेषश्रादिककैनैदश्चरश्चनदूनिदोकनिकात्कस्वरूपणांन
वणैहै॥तातैनैदश्चनैदमैपरस्परविरोधहै॥वक्रियश्चवाच्यतात्कात्तकांतनीनाहीवणैजा
तैंकांतमैश्चवाच्यहै॥श्रैसीनाउक्तिनयुक्तहोयहै॥छ॥श्रागैंश्रैसैंश्चवयवश्चवयवी॥
श्रादिकात्कश्चनत्वश्चादिकात्कांतनोनैदानैदकांतताकूंनिराकरणकरिश्चवतिनिका
श्चनैकांतसामर्थ्यकरिसिद्धनयातौकुवादीकीश्राशंकाकूदूरिकरनैकूंतथादृढनि
श्चयकरनैकेदूछकश्राचार्यश्चनैकांतकूंकहैहै॥श्लोक॥द्रव्यपर्याययोरैक्यंतयोरव

ऽतिरेकतः परिणामविशेषाद्वशक्तिमद्भक्तिभावतः ॥११॥ संज्ञासंख्याविशेषाद्वस्वल
क्षणविशेषतः ॥ प्रयोजनादिभेदाच्चनानात्वंनसर्वथा ॥१२॥ अर्थ। द्रव्यश्चपर्यायश्च।
तिकैकथंचित्तादात्म्यपणांहैनातैंदोऊतिकैश्चत्रितेरेकहैसर्वथानिन्हवपणांनांहीहै।
वऊरितिनिद्रव्यपर्यायनिकैकथंचित्तनानापणांहै। नातैंऽतिकैपरिणामकाविशे
षहै। वऊरिशक्तिश्चरशक्तिमानपणांहैवऊरिसंज्ञाकाविशेषहै। वऊरिशंख्याकावि
शेषहै। वऊरिस्वलक्षणकाविशेषहैवऊरिसंज्ञाकाविशेषहै। श्रैसैंछहहैतुतैनानाप
णांहै। वऊरिश्रादिशब्दतैनिन्नप्रतिभासलेणा। वऊरिनिन्नाकालतेणा। श्रैसैंकथं
चित्तनेदानेदपणांहैसर्वथानांहीहै। छ। ऽहांद्रव्यशब्दतैंतौगुणीसामान्यउपादानका। ७०
रणऽनिकाग्रहणहै। वऊरिपर्यायशब्दतैंगुणव्यक्तिकार्यद्रव्यऽनिकाग्रहणहै॥ वऊरि

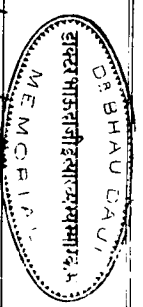

श्रव्यतिरेकशब्दतैंश्रशक्यविवेचनपणांकाग्रहणहै। याकायऊश्रर्थनोविवक्षिता
द्रव्यपर्यायनिकैंश्रन्यद्रव्यमैंघातकरनेंकूंश्रसमर्थपणांकूंश्रशक्यविवेचनपणां
कह्या॥ श्रन्यद्रव्यकेगुणपर्यायश्रन्यद्रव्यमैंनजाय॥ यहश्रर्थहै॥ वऊरिद्रव्यपर्या
यकैकाथंचित्तादात्म्यहनैंमैंविरोधवैयधिकरणसंशयव्यतिकरशंकरश्चन।
वस्थाश्चप्रतियतिश्चनावाऽवणांहीश्चावैहै। नातैंनैसैंएकनाकहीसैंसैंघतीति
मैंश्चीवैहै। कल्पनाकरिवचनमात्रनाहीकहैहै। श्ररनोघतीतिसिद्धहोयतामैंऽघ
णकाहेका॥ वऊरिकथंचित्तनानापणांकह्यातहांघरिणामकाविशेषद्रव्यकातो।
श्रनादिश्रनंतएकसनवस्थानाविकपरिणामहै। वऊरिपर्यायकासाहिसोतश्रने।
कतैंनित्तिकपरिणामहैश्रैसैंहीशक्तिमानसक्तिनावनानां। कऊरिद्रव्यनामहै

पर्यायनामाहै श्रैसा सङ्काविशेषहै। वक्तरिद्रव्यएकहैपर्यायवक्तृतहै श्रैसै
संख्याकाविशेषहै। वक्तरिद्रव्यनैगैएकपणां श्रन्वयपणां श्रैसेज्ञानश्रादिका
र्यहोयहै। वक्तरिपर्यायतैं श्रनेकपणां जुदापणां श्रादिकाज्ञानरूपकार्यहोनां
योजनकोविशेषहै। वक्तरिद्रव्यत्रिकालगोचरहै। पर्यायवर्त्तमानकालगोचरहै।
श्रैसैकालसेदहै। वक्तरिनिन्तवनतैंनासहैहो। सोपूर्वोक्तविशेषनितैंहीजाणाजा
यहै। वक्तरिलक्षणनेदनीतैसैंहीजाननां। द्रव्यकालक्षणगुणपर्यायवत्श्रैसा
है। पर्यायकात्रावपरिणामश्रैसालक्षणहै। श्रैसैनेदनेदैकांतकानिराकर
णकरिश्रनेकांतकाव्यापनकीया। तहांवस्तुकंथंचित्तत्वलक्षणकैनेदतैनां ७१
नांहीहै। कथंचित्तश्चशक्यविवेचनपणांतैंएकपणांरूपहीहै। कथंचित्तदोक

नावरूपकहनेमैंकथंचित्तदोकरूपयुगपत्नांकह्याजायतातैंश्रवक्तव्यहीहै।
कथंचित्तनानात्वश्रवक्तव्यहीहै। जातैंविरुद्धरूपहैश्रयुगपतनकह्याजायहै।
वक्तरिकथंचित्तएकत्वश्रवक्तव्यहीहै। जातैंश्रशक्यविवेचनस्वरूपहीहै। श्र
युगपत्दोकरूपहैसोकह्यानजायहै। वक्तरिकथंचित्तदोकरूपहै। श्रयुगपत्
नकह्याजायहैतातैंउनयश्रवक्तव्यहै। श्रैसैंसप्तनंगीप्रक्रियाप्रसङ्गश्रनुमं
नतैंश्रविरुद्धज्ञाननी॥८॥ चौपई। नानापणांएकतानाय॥ पक्षपातनैंमिथ्याथाय
श्रनेकांतसाधेसुखदाय। ज्ञानयथाकीयानिनराय। १। इसीश्रीश्राप्तमीमांसानाम।
देवागमस्तोत्रकीसंदीप श्रर्थरूपदेशभाषामयवचनिकाविषैचतुर्थपरिछेदसम २
सपणा॥ इहांताईकारिकावहुतरिनई। ७७। श्रागैपांचमापरिछेदकाप्रारंभहै। दोहा

एकवस्तुमैधर्मदो॥सापेक्षाश्रीगणाधार॥सुअपेक्षाअनपेक्षतैं॥नमूंतासपदसार॥१॥
अवइहांपथमहाअपक्षाअनेपेक्षाकाएकांतपक्षविषैदोषदिषावैहै॥ज्ञा॥श्लो॥
का॥यद्यापेक्षिकसिद्धिः स्यान्नद्वयंव्यवतिष्ठते॥अनापेक्षिकसिद्धौचानासामान्य
विशेषाता॥१॥अर्थ॥जोधर्मधर्मीआदिकैएकांतकरिअापेक्षिकसिद्धिमांनिया
तौधर्मधर्मीदोकहीनठहरै॥वकरिअपेक्षाविनाएकांतकरिसिद्धिमांनियेतौसा
मांन्यविशेषपणांनठहरै॥तहांबौद्धमतीअैसैमांनैहैंउत्पद्यतुद्धिमैधर्मअथवा॥
धर्मीनउतिन्नासैहै॥उत्पद्यदेषीद्वैविकल्पबुद्धिहोयतिसतैधर्मधर्मीकल्पिये
है॥अैसैंकल्पनांमात्रहैनाकूंधर्मकल्पियेसोहीकहूधर्मीहोजायधर्मीधर्महो॥ ७२
जायअैसैंकूंकहठहरैनांही॥जैसैंनाहअपेक्षासत्वआदिकूंधर्मकल्पियेसोहीसे

येपणांकीअपेक्षाधर्मीहानां॥अैसैंविशेषणांपणांसामांन्यविशेषपणांगुणागुण १
पणांक्रियाक्रियावानपणांकर्यकारणांपणांसाध्यसाधनपणांग्राह्यग्राहकपणां १
इत्यादिपरस्परअपेक्षामात्रहीतैंसिद्धहा॥अैसैंबौद्धमतीकाज्योंएकांतकरिमांनि
येतौदोकूंनठहरै॥तातैंअपेक्षामात्रसिद्धिकांएकांतअैसांनांही॥वकरिधर्ममी॥
कीसर्वथाअपेक्षाविनांहीसिद्धिनैयायिकमांनैहै॥कहैहैधर्मधर्मीनिन्नज्ञान॥
केविषयहै॥इनिकैपरस्परअपेक्षानांहीअैसैंएकांतकरिमांनैहै॥तांकैजोअ॥
न्वयव्यतिरेकनठहरै॥जातैंनेदअभेदहैतेपरस्परअपेक्षाविनासिद्धनहोय
अन्वयतौसामान्यहै॥अरैव्यतिरेकविशेषहैतेपरस्परअपेक्षास्वरूपहै॥तिनि
दोकूंकैअपेक्षानमांनियेतौसामांन्यविशेषभावनठहरै॥तातैंअपेक्षाअनपेक्ष १

एदोकहीराकांतनवणो॥एकांतसैवस्तुकीव्यवथानांहीहै॥छ॥आगैदोकमां
निएकांतमानैतथाअवक्तव्यएकांतमैदूषणदिपावैहै॥छ॥श्लोक॥विरोधा
नोभयैकात्म्यंस्याद्वादन्यायविद्विषां॥अवाच्यतैकांतेप्युक्तिर्नाच्यमितियुज्यते
॥३॥अर्थ॥अपेक्षाअनपेक्षादोकुकाएकांतमानैतौदोकुएकस्वरूपहोयनां
हीनातैस्याद्वादन्यायकेविद्वेषीनिकैविरोधनामादूषणआवैहै॥तैसैंसत्
एकांतमैंआवैतैसैंतातैंयहभीएकांतश्रेष्टनांहीहै॥वज्रसिअवाच्यताका
कांतकरैतौअवाच्यहैश्रैसैंकहनांहीनवणोतातैंअवक्तव्यएकांतभीश्रेष्ट
नांही॥छ॥आगैंअपेक्षाअनपेक्षाकाएकांतकेनिराकरणसामार्थ्यतैंअनै
कांतसिद्धनयातौकुवादीकीआज्ञांकादूरिकरनेकूंआचार्यकहैहै॥

छ॥श्लोक॥धर्मीधर्म्यविनाभावःसिध्यत्यसोत्यवीक्षया॥नस्वरूपस्वतोहेत
नकारकज्ञायकांगवत्॥३॥अर्थ॥धर्मअरधर्मीकैअविनाभावहैसोतौपर
स्परअपेक्षाकरिसिद्धहै॥धर्मविनांधर्मीनांही॥धर्मीविनाधर्मनांही॥वज्र
रिधर्मीधर्मीकास्वरूपहैसोपरस्परअपेक्षाकरिसिद्धिनांहीहै॥स्वरूपहै॥
सोस्वतसिद्धहैआपहीपहलैहीस्वयमेवसिद्धहै॥तैसैंकारककैअंगकर्ता
कर्मआदिहै॥तथाज्ञायककैअंगज्ञेयज्ञायकहैतैसैंकर्ताविनांकर्मीनांह १
अरकर्मविनाकर्तानांही॥श्रैसैंअपेक्षासिद्धहै॥वज्ररिकर्ताकाकरनेवा
लापणांस्वरूपहैसोपहलैंआपैंआपसिद्धहैही॥तैसैंहीकर्मआपैंआपसिद्ध
है॥स्वरूपमैंअपेक्षासिद्धपणांनांही॥श्रैसैंहीसामान्यविशेषगुणगुणीकार्य॥

कारणप्रमाणप्रमेयइत्यादिज्ञाननं॥कथंचित्स्याप्रेक्षिकसिद्धौ॥कथं॥
चित्स्यान्नापेक्षिकसिद्धौ॥कथंचित्दोऊकारिसिद्धौ॥कथंचित्स्यावक्त॥
व्यौ॥कथंचित्स्याप्रेक्षिकश्चवक्तव्यौ॥कथंचित्स्यान्नापेक्षिकश्चवक्तव्य॥
यौ॥कथंचित्दोऊयौ॥अरश्चवक्तव्यौदोऊकैश्चविनाभावश्चरनिजस्वरू॥
पहेतुलगावणांश्चैसप्तभंगीप्रक्रियापूर्वोक्तप्रकारलगावणी॥छ॥चौप॥
ई॥स्याप्रेक्षिकश्चादिकएकांत॥मिथ्याविषवतकह्योसिद्धंत॥जैनमुनीकेव
चनअमंत्र॥सुनेंजहरअतरोयहतंत्र॥१॥ईतीश्रीआप्तमीमांसानामदेवाग
मस्तोत्रकीसंस्कृतपश्चरूपदेशभाषामयवचनिकाविषैंपांचमांपरिछेदेस ७५
मानभयाः॥५॥इहांताईकारिकापिवेतरिनई॥७५॥श्रीछठमांपरिछेदका

प्रारंभहै॥दोहा॥हेतुअहेतुविचारिकै॥पक्षपातपरिहार॥आगमवरतायौमु॥
नी॥नमूंश्रीश्रीकरधारि॥१॥अबइहांप्रथमहीहेतुअरआगमकाएकांतप॥
क्षविषैंदूषणादिकावैहै॥श्लोकार्थासिद्धंचेद्धेतुतःसर्वंनस्यात्स्याद्यौगतिः॥
सिद्धंचेदागमात्सर्वंविरुद्धार्थमतान्यपि॥१॥अर्थ॥जोअपनांवांछितकार्यस
र्वाएकांतकरिहेतुतैंहासिद्धिहोनांमांनियेतौस्यात्स्यादिकतैंहीयहैसोनठा
हरै॥वज्रकरिएकांतकरिश्चआगमहीतैंसिद्धिहोनांमांनियेतौस्यात्स्यादितैंविरु॥
द्धतथापरस्परविरुद्धहैपदार्थजिनिकैश्रैसेआगमाक्रमततैंसिद्धहरैश्चै
सैंदोषआवैहै॥इहांश्रैसाजाननं॥जोसमस्तहीलौकिकजनततथापरीक्षाक
जनअपनेश्रादरनेंयोग्यछपेयतत्वकूंनिश्चयकरिश्चरनिसकाछपाय॥

तत्त्वकानिश्चयकरैहै।सोऽहांमोक्षकेअर्थीनिकूंनीमोक्षकास्वरूपकानि
श्चयकरिश्चरतिसकाउपायकानिश्चयकरनांतहांकोईअन्यमतीअनु-
मानहीतैंउपेयतत्त्वकीसिद्धिमांनैहै।तिनिकैंप्रत्यक्षादिकतैंगतिकहि-
येवस्तुकीघातितथाज्ञाननहोयजातैंअनुमानहोयहै।सोआदिमैंलिंग-
कांप्रत्यक्षदर्शनहोययाव्याप्तांतप्रत्यक्षहायतबहोयहैयातैंप्रत्यक्षविनां-
अनुमांनकीसिद्धिनांहीहोयहै।नातैंहेतुतैंएकांतकरिसिद्धिमांननाश्रेष्टनां
हीवक्तरिकैंईमीमांसक आदिआगमहीतैंएकांतकरिसिद्धिहानामांनेहै
तिनिकैंपरस्परविरुद्धअर्थजिनिमैंपाइएश्रैसेसर्वहीमतसिद्धवहरैना- ७५
तैंआगमकीप्रमाणतायुक्तिहेतुआदिकरिकीयेविनांप्रमांणवहरैतव-

सम्यक्मिथ्यकाविभागकैसैवहरैनातैंआगमतैंनासिद्धिहोनांएकांतकरिमान
नांश्रेष्टनांहीश्रैसैदोऊहीएकांतवाधासहितहै।छ।।आगैदोऊतैंसिद्धिमानेनें
काएकांतविषैंदोषदिषावैहै।छ।।श्लोक।।विरोधान्नोभयैकात्मंस्याद्वादन्या
यविद्विषां।।अवाच्यतैकांतेप्युक्तिर्नावाच्यमितियुज्यते।।१।।अर्थ।।स्यादवा
क्यायकैविद्वेषीएकांतवादीनिकैंहेतुआमदाकएकस्वरूपमांननांतिहीजा-
नातैंदोऊमैंएकांतकरिमाननेमैंविरोधदूषणआवैहै।।वक्तरिअवक्तव्यए-
कांतमांनेअवक्तव्यहै।श्रैसाकहनानवैएं।।कहैतौवक्तव्यनींवहरै।।तव-
एकांतकाहनांनवएं।।श्रैसैएकांतमैंदूषणहै।छ।।आगैंहेतुकाअरअहेतु
काएकांतकूंदिषावैहै।श्लोक।।वक्तर्यनाप्तेयद्धेतोमाध्यतद्धेतुसाधितं।।आ

सेवक्तरितवाक्यात्साध्यसाधनसाधितं॥३॥अर्थो॥वक्तरआप्तहोतैनोहेतुतैं॥
साध्यहोयसोतौहेतुसाधितहै॥वक्तरिवक्तआप्तहोतैतिसकेवचनतैंसाध्य
होयसोआगमसाधितहै॥इहांआप्तआप्तकास्वरूपपूर्वैकह्याथातोदोष
आवरणरहितसर्वज्ञवीतरागहैसोश्रीसाश्रहंतभगवानआप्तहै॥जातैंता
केवचनयुक्तिआगमतैंअविरोधरूपहै॥अरताकैकहेआपेतत्वप्रमाणतैंवा॥
पेनजायहै॥वक्तरिजोदोषसहितहैसोसर्वज्ञवीतरागनहीसोआप्तनहै॥ताके
वचनइष्टतत्वप्रत्यक्षबाधितहै॥तातैंआप्तकेतौवचनहीप्रमाणकरनेंअर॥
आप्तकेवचनपरीक्षाकरिप्रमाणकरनेंइत्यादिसारस्याश्रइसहश्रीतैंजा ७६
नतां॥श्रैसैकथंचित्सर्वहेतुतैंसिद्धहै॥जातैंजहांआप्तकेवचनकीअपेक्षा

नांहीवक्तरिकथंचिदागमतैंसिद्धहैजातैंजहांइंद्रियप्रत्यक्षअरलिंगकीअपे
क्षानांही॥इत्यादिपूर्वपक्षकरीज्योंसप्तभंगीप्रक्रियाजोडनी॥छ॥बीपईसो॥
द्रव्यतत्वअरसोद्रव्यपर्याय हेतुअहेतुकथंचितनाय॥साधोअनेकांततैंनलें॥
तजिएकांतपक्षमुनिमुनिचलें॥१॥इतीश्रीआप्तमीमांसानामदेवागमस्तोत्रक १
संक्षेपअर्थरूपदेखनाभाषावचनिकाविषैछठवापरिछेदसमाप्तभया॥इह १
ताईकारिकाअठहत्तरिजई ७८॥श्रीसातमापरिछेदकाप्रारंभहै॥दोहा
अंतरंगबहिरंगतत्वदो॥अनेकांततैंसाधि॥वरताये तिनिकूंनमूं॥मिथ्याप॥
क्षमुबाधि॥१॥अबइहांप्रथमहीअंतरंगअर्थहीकूंएकांतकरिमांनेतामैं॥
इत्यादिबाधाबैहै॥छ॥श्लोक॥अंतरंगार्थतैकांतेबुद्धिवाक्यंमृषाखिलंप्रमा

णानसमेवातत्स्वमाणहतेकर्थ॥१॥अर्थ॥अंतरंगार्थकहियेअपनेंहीसं
वेदमअनुभवमैंआवैजोज्ञाननाकाएकांतजोबाह्यपदार्थनमाननांताकै।
होतैंबुद्धिवाक्यकहियेहेतुवावअहेतुवादकाकारणउपाध्यायसिष्यका
वाक्यसोसर्वहीमृषाकहियेअसत्यकूठाव्हरैनातैवाक्यहैसोबाह्यपदार्थ
हैसोअंतरंगकाएकांतमैंकेहेकाव्हरै॥वक्तरितवबुद्धिवाक्यकूठेव्हरैत
वपरकूंप्रतीतउपजावनेंकूंप्रमाणवाक्यकहनासोनीप्रमाणनासहीव
हस्या॥वक्तरिप्रमाणनासहैसोप्रमाणविनाकैसैंहोयनाहीहोयश्रैसैंइष
णअवैइहाअंतरंगार्थणकांतमांनैंनैंबालाविज्ञानाद्वैतवादीबौद्धहैसो॥ ७७
बाह्यपदार्थकेमानैंवालेकूंदूषणदेहैसोवचनकरिदेहै।श्रवचनकूं॥

परमार्थेनूतमांनैंनांही॥तवकूठेवचनहैसोप्रमाणनूतनांहीप्रमाणनासहै
तवदूषणदेणासत्यार्थकैसैंहोय।वक्तरिश्रपनासंवेदनरूपअंतरंगत
त्वस्वतैंहीसिद्धिनहोयहै॥नातैंस्वसंवेदनकूंअद्वैतमांनैंहै॥तवद्वैतैंमानैं
विनासाध्यसाधनादिनैंदमांहीवतौहैनैंदमांनैंतौअद्वैतएकांतनव्हरै॥व
क्तरिस्वतःसिद्धवहरै॥तवश्रन्यबाह्यतत्वमानैंहैतिनिकामांननांसत्यार्थ॥
वहरैतिनिकूंनिषेधै॥तवकाहेतैंनिषेधै॥इत्यादिअंतरंगएकांतमांननैंमैंदू
षणहै॥छ॥श्रागैंसंवेदनाद्वैतवादीबौद्धकूंफेरिदूषणदिषावैहै॥छ॥श्लो
क॥साध्यसाधनविज्ञप्तियदिविज्ञप्तिमात्रतानसाध्यंनचहेतुश्चप्रतिज्ञाहे।
तुदोषतः॥२॥अर्थ॥विज्ञानाद्वैतवादीश्रैसैंकहैसोसाध्यसाधनकाविज्ञप्तिक

हियेविज्ञानहै॥ताकैविधिमात्रताकहियेविज्ञानमात्रपणांहीहै॥ताकैना-
तौसाध्यठहरै॥नहेतुठहरै॥ज्ञानेंयाकैप्रतिज्ञाअरहेतुका दोषआवैहै॥सा
ध्ययुक्तपदार्थकावचनसोतौप्रतिज्ञाअरसाधनकावचनसोहेतुताकैकहा-
नैमैंअपनेवचनहीतैंविरोधआवैहै॥ज्ञानैंवहविज्ञानाद्वैततत्वकूंश्रेयसा
धेहै॥नीलापदार्थअरनीलाकीबुद्धिइनिकामाथिग्रहणकानियमहै॥ताते॑-
अनैहहै॥तैसैंनेत्रविकारीकूंदोयचंद्रमादीप्यासोपरमार्थतैंएकहीहैतैंसै
नीलपदार्थअरनीलबुद्धिकूंदोयमांननांभ्रमहै॥श्रैसैंअपनांतत्वकूंसाधता॥
कैअपनेवचनहीतैंविरोधआवैहै॥साध्यसाधनरूपसंवेदनदोयहैंविअर॥ ५८
एकपणांकाएकांतकहैताकैविरोधकैसैंनआवैइहाधर्म्मीधर्म्मीकानेदवा॥

चनकह्यासंवेदनदोयकावचनकह्या॥वक्तरिज्ञानअरवचनएदोयकह्यावा
क्तरिहेतुहष्टांतकानेदकावचनकह्यातौअनेदकहनैमैविरोधकसैंनआवै॥
वक्तरिकहैवोचनमैविरोधकानयकरिअवक्तव्यकहैतौअवक्तव्यकावचन
नानवणौं॥वक्तरिकहैतौअसकोईहैतमानैंताकीमानकैनिषेधकूंमैंनानेदका
वचनकहो॥तौअद्वैतएकांतमांनतैंतौअसद्भावहरैहीनांही॥निषेधैकौनकूं
हैइत्यादिदूषणआवैहैतातैंसंवेदनांद्वैतवादीमिथ्यादृष्टीहै॥श्रैसैंअनरंगार्थ
एकांतपक्षमैंबुद्धिवाक्यतथासम्यक्पक्षकारहेपायतत्वनांहीसंनवैहैता॥
तैश्रीइनांही॥आगैवहिरंगार्थएकांतपक्षमैंदूषणदिषावैहै॥श्लोक॥वहि
रंगार्थतैकांतेप्रमाणाभासनिह्नवात्॥सर्वेषांकार्यसिद्धिःस्यादिरुद्धार्था॥

निधायिनां ॥ ३ ॥ अर्थ ॥ बहिरंगार्थकहिवाह्यघटआदिपदार्थतिनिकाएकं
तकहियेबाह्यपदार्थहीपरमार्थभूतहैअंतरंगार्थज्ञानहैसोपरमार्थनां
ही ॥ श्रैसापक्षहोतैंप्रमाणाभासकालोपहोयहै ॥ ताकेलोपतैंसर्वहीपरस्पर
विरुद्धपदार्थकास्वरूपकहनेवालेनिकैकार्यसिद्धिवहरैहैप्रमाणअप्र
मांणकाविनाशनांहीवहरै ॥ जातैंप्रमांणअप्रमाणस्वरूपतौज्ञानहैसोज्ञान
परमार्थभूतनांहीतबअप्रमांणकाहेकाविरुद्धस्वरूपकहनेवालेनीसांचेठ
हरैहै ॥ श्रैसैंदोषआवैहै ॥ आगैअंतरंगबहिरंगदोऊपक्षमांनिणकांतमा
नैंतथाअवक्तव्यएकांतमांनैंतामैंदूषणदिखावैहै ॥ श्लोक ॥ विरोधान्नोभयै ७९
कात्म्यंस्याद्वादन्यायविद्विषां ॥ अवाच्यतैकांतेप्युक्तिर्नावाच्यमितियुज्यते ॥ ४ ॥

अर्थस्याद्वादन्यायकेविद्वेषीनिकैंउभयकहियेअंतरंगतत्वज्ञानअरबा
ह्यतत्वज्ञेयएदोऊएकस्वरूपनहोयहै ॥ जातैंयइनिमैंपरस्परविरोधहैवक्त
व्यविरोधकैनयतैंअवाच्यताकहियेअवक्तव्यपक्षकाएकांतग्रहणाकरैतौ
अवाच्यहैश्रैसाउक्तिकहियेकहनांनबणैश्रैसैंदोषआवैहै ॥ ४ ॥ आगैंकहै ॥
हैनोदोऊपक्षकूंस्याद्वादकाआश्रयलेकरैतौदोषनांहीहै ॥ ५ ॥ श्लोक ॥ नाव
प्रमेयापेक्षांयांप्रमाणाभासनिह्नवः ॥ बहिःप्रमेयापेक्षायांप्रमाणांतनिह्नवते
य ॥ अर्थ ॥ नावप्रमेयकहियेज्ञानहैतेसर्वहीज्ञेयनिसहितस्वसंवेदनरूपहै
अपनांज्ञानकाहूज्ञेयकूंजांनूंज्ञानमात्रकरितौ अपनेआस्वादमैंआवैहै ॥
तिसकीअपेक्षातौसर्वज्ञानस्वसंवेदनपक्षप्रमांणस्वरूपहैप्रमाणाभास

किछनांहीहै। बहुरि वाह्यप्रमेयकी अपेक्षा कछू प्रमाणहै कछू अप्रमाणहै।
प्रमाणज्ञानसहै॥ जहांविसंवादहोयबाधा आवैतहांतौ प्रमाणज्ञानसहै। बहु-
रिजहांनिर्बाधहोयतहांप्रमाणहै। जातैएकजीवकै ज्ञानकै आवरणकै अन
वसङ्गवकै विशेषतैयथासत्यसंवेदनपरिणामकी सिद्धिहै॥ ऐसैतैकहि
येतुमारै अर्हंतकै मतविषैसिद्धहोयहै॥ ज्ञा॥ यौजीवश्रैसाज्ञाहैसोयाकावा।
द्यअर्थजीहैतहांवार्वाक आदिमतवालाकहैजोजीवहीनांहीतौजीवश्रैसा।
ज्ञाहकैसैंकह्याजीवकाग्रहणकरनेवालाप्रमाणनांही॥ श्रैसैकहनेवालेकूं
जीवकाग्राहकप्रमाणकासद्भावदिषावैहै। ज्ञा॥ श्लोक॥ जीवज्ञाहःसवाह्या ८०
र्थैःसंज्ञात्वाद्गुज्ञाहवत्॥ मायादिज्ञांतिसंज्ञाश्चमायाद्यैःखैःप्रमोक्तिवत्॥ ६

अर्थ॥ जीवश्रैसाज्ञाहहैसोवाह्यपदार्थसहितहै॥ ऽसज्ञाहकाअर्थजीववस्तुहै
जातैयहज्ञाहसंज्ञाहैनामहैतैसंज्ञाहैनामहैतैवाह्यपदार्थविनांहोयनांही। जै
सैंहैतुज्ञाहहैसोवाह्याकाअर्थहै॥ आदिप्रतिवादीप्रसिद्धहै। बहुरिऽहांकै
ईकहैमायाआदिज्ञांतिकीसंज्ञाहैतिनिकावाह्यपदार्थकाहाहै॥ ताकूंकहि
येमायादिकज्ञांतिकीसंज्ञाहै॥ तैमीअपनैंस्वरूपजोवाह्यअर्थतिसहीसहि
तहै॥ जैसैंप्रमाणकहियेप्रमाणकीउक्तिकहियेसहैतिप्रमाणनिकावाह्या
र्थपरयक्षपरोक्षआदिहै॥ तैसैंहीमायादिकज्ञांतिजीवादिकज्ञानकैनेद
रूपहै। ऽनकावाह्यार्थकैसैंनांही। बहुरिऽहांबार्वाकमतीकहैजोशरीरा
ऽंद्रियादिकसमूहहैसोहीजीवज्ञाहकाअर्थहैऽनितैतिनस्वरूपतौजीवकि

DR. BHAU DAJI

छद्मस्थहैनांहीतांकूंकहियेहैजोजीवश्रैसाअर्थलोकप्रसिद्धजीवकाग्रहणहै
जीवचालैहैजीवगायजीवतिष्टैहैश्रैसालोकप्रसिद्धव्यवहारहैसोश्रैव्यवहा-
रसरीरविषैनांहीहैइंद्रियनिविषैनांहोहै।वकुरिबोलनाआदिग्रहआदि।
विषैनांहीहै।जोइनिकाजीवनैवालाआत्माहैतांहीविषैयहव्यवहारहै।वकुरि
कोईवार्वाकसतीकहैश्रैसाजीवगर्भतैलैमरणपर्यंतहै।अनादिअनंतनां-
हीं।तांकूंकहियेजोजन्मतैपहलैअरमरणकैपीछैनांजीवकाअस्तित्वहैश्रै
साजीवदृष्टयादिकतैनुपनैनांहीं।इनितैंजीवविलक्षणहै।दृष्टयादि-
नहुहैजीवचैतन्यहै।जोवार्वाकश्रैसैंनमांनौतांकैंजीवतत्वकीसंख्यालक्षण। ८१
कैनेदतैहैसोनवतौंश्रैसैकायसहितजीवकैविषैंजीवकाव्यवहारहै।वकुरि

बौद्धमतीज्ञानिकचित्तसंतानविषैंजीवकाव्यवहारकैरैतौयकुंजीनवतौं।जातैंत्र
पयोगस्वरूपकर्तानोमक्तास्वरूपहीजीवज्ञहकावाह्यार्थहै।वकुरिकोईकहै
संज्ञाहेतुतैंनावस्तुसाध्यासोसंज्ञातौवक्तकाअभिप्रायसारूहै।तांकूंकहि-
येश्रैसैनांहीजामैंअर्थक्रियाहोयसोसंज्ञाकावाह्यार्थकोईकहैखरविषाणसं
ज्ञाकाकहाअर्थहै।तांकूंकहियेअनावकैविद्योषकीप्राप्तियाकाअर्थहैसोय
हनीसंज्ञावाह्यार्थविनांनांहीहैइत्यादिजानना।आगैंइसमहीअर्थकूंवि-
द्योषकरिसाधैहै। श्लोक॥बुद्धिज्ञाह्यार्थसंज्ञास्तास्तिस्त्रोबुध्यादिवाचकाः।तुल्याबु
ध्यादिबोधाश्चत्रयस्तत्त्वविवेचकाः॥ अर्थी।बुद्धिज्ञाह्यअर्थ।तीनसंज्ञाहैंतेबुद्धिज्ञा
ह्यअर्थ।तीनसंज्ञानिकैनिम्नवाह्यार्थहैतिनिकावाचकहैं। वकुरिबुद्धिज्ञाह्यअर्थ

इनिकाबोधनीतीनहैतेनितैतुल्यहैसमांनहै।।तेतिनितीननिकाघतिविवकहै।
यंजकहैइहांश्रैसाज्ञाननांमोपहलीकारिकामैंसंज्ञापणांहेतुवाह्यपदार्थसाधा
धानहाबोधकसतीश्रैसाकहैहैसोजीवद्रव्यहकावाह्यार्थतौसंज्ञापणांहेतुतैंसधै।परंतु
जीवद्रव्यहकीवृद्धिश्ररजीवद्रव्यहकाद्रव्यार्थहैतेतौचिपक्षहैतिनिसैंसंज्ञापणां
हेतुव्यापैहैनातैंइसहेतुकैव्यवहारश्रावैहैनाकूंश्राचार्यइसकारिकामैंउत्तरदेय।
निधारमेद्यहैसोसंज्ञापणांहेतुतौवाह्यार्थसहितपणांहीकूंसाधैहै।बुद्धिद्रव्यहश्रर्थ
णसंज्ञाहैतेइनिकावाह्यार्थबुद्धिद्रव्यहश्रर्थहैतिनिहीकेवाचकहै।।श्ररबुद्धिद्रव्यहश्रर्थ
इनिकाज्ञानहैसोजीतिनितीननिनैंतुल्यहैसोतिनिवाह्यार्थनिकाघतिविवकहै। ८२
शिखावनैंवालाहै।तैंमैंश्रर्थहपदार्थज्ञाकाश्रैसाजीवद्रव्यहहैसोयातैंजीवकूंनहना।

नांश्रैसैंकहैजीवश्रर्थकाघतिविवकबोधउपजैहै।तैसैंहीबुद्धिहैपदार्थज्ञाकाश्रै।
साजीवद्रव्यहतैंजीवहैश्रैसाज्ञानियेहैश्रैसैंबुद्धिश्रर्थकाघतिविवहोयहै।तैसैंहीद्र
व्यहैपदार्थज्ञाकाश्रैसाजीवद्रव्यहतैंजीवकूंकहैहैश्रैसाज्ञानहोयहै।श्रैसैंद्रव्यहकाघ
तिविवकहोयहै।श्रैसैंसंज्ञातौवाह्यपदर्थनैंकाहैहै।।श्ररद्रव्यहकाश्रर्थनासज्ञान।
एतीनूंतिनिकैसमानहै।तेघतिविवकहैज्ञातैंतिनिसीनूंनिकाज्ञानकरणैहैश्रैसैं।
व्यनिचारमेद्यहै।द्य।।श्रागैविज्ञानाद्वैतवादीबोधकहैज्योसंज्ञापणांतैंशद्रकूंवाह्या
र्थसहितसाधासोहमतौवाह्यार्थसिद्धनकरहै।संज्ञाहैसोज्ञानहीहैतिसतैं
भिन्नवाह्यपदार्थतौनांहीहै।वक्रशिहेतुद्रव्यहकादृष्टांतहैसोजीसाधनविकलदृष्टां
तानासहैहेतुजोविज्ञानमैंश्राया।याताकूंश्राचार्यउत्तररूपकारिकाकहैहै।।

श्लोक॥वक्त्रश्रोतृप्रमातृणांवोद्धव्याक्यप्रमाप्रथकत्वंस्यवेवप्रमाज्ञांतीवाह्यार्थौंता
दृश्नेतरौ॥८॥अर्थ॥वक्ताश्रोताप्रमाताइतिनीनूंनिकावोधवाक्यप्रमाणताती॥
नूंहीनिन्ननिन्नहै॥इहांकहैतीनूंहीज्ञांतहैज्ञानरूपहैतौज्ञांतिस्वरूपहोतैप्रमां
णहोनाज्ञांतिहीज्ञहैरै॥फेरिकहैप्रमाणज्ञांतिहीहोइ॥तौप्रमांणज्ञांतिस्वरू
पहोतैप्रमाणअप्रमाणस्वरूपवाह्यपदार्थप्रमेयहैतेनीज्ञांतिस्वरूपज्ञहरैहैश्री
सैंहोतैअतरंगज्ञानकाअरवाह्यपदार्थकासर्वहीकालोपहोयातवसंवेदनाद्वैत
कीनीसिद्धिनाहीहोयहै॥इहांश्रीसाज्ञाननाज्ञोवक्ताकैअर्थकाज्ञानविनातौवाक्य॥
कैसैप्रवर्तै॥वक्तरिवक्ताकावाक्यननप्रवर्त्तैतवश्रोताकैअर्थकाज्ञानकैसैहोयर ७३
वक्तरिप्रमातायथाअर्थयथापदार्थकानिर्णयकरनेंवालाताकैपदार्थकीप्रमाण

नानहोयतौज्ञहअरअर्थनेंवप्रमेयतिनिकायथार्थपणांकैसैहोय॥तातैंवक्ताश्रोत 1
प्रमाताकाज्ञानवाक्यप्रमांणतास्यारेमानतेंज्ञोसंदसाद्वैतवादीनमानैंतौता॥
कासंवेदनाद्वैतनीसिद्धनहोयहै॥८॥श्रीसंवेदनाद्वैतवादीकहैज्ञोज्ञांतिरहित॥
प्रमाणनिर्वीधसांनियेहैतौश्राचार्यकहैहै वाह्यपदार्थनीमांननांवाह्यपदार्थसा
नेविनांप्रमांणअरप्रमाणज्ञानसकीव्यवस्थानांहीहैरैहै॥श्लोक॥वुद्धिज्ञहप्रमा
णत्वं॥वाह्यार्थेसतिनासति॥सत्यानृतव्यवस्थेवंयुज्यतेर्थप्रमासिधु॥॥अर्थ॥
वाह्यपदार्थकेहोतैतौवुद्धिकैअरहकैप्रमांणपणांहै॥अरवाह्यपदार्थकेनहो
तैंवुद्धिकैअरज्ञहकैप्रमांणपणांनांहीहैज्ञातैअर्थकीप्राप्तिअरअप्राप्तिविषैंश्री
सैंहो॥श्रीसैंहोसत्यकीअरअसत्यकीव्यवस्थायुक्तहोयहै॥वाह्यपदार्थविनावु

द्धिकै अरथहदकै प्रमाणज्ञानहोयहै। इहां अैसा जानना जो बुद्धितौ ज्ञानहैसोतौ अप
नेही वस्तुकी प्राप्तिकै अर्थि वक्तरिशब्दहैसो परकै प्रतिपादनकै अर्थि है वचनविना
परका ज्ञानपरकै प्रत्यनग्रहण मैं नाहीं आवैहै वक्तरिस्वपक्षका साधनापरपक्ष-
का दूषण अैसैही होयहै तातैजो प्रमाणताकूं निर्बाधपनौ पक्षसाध्या
है ताकूं वाह्यपदार्थजीमाननां वाह्यपदार्थविनां प्रमाणप्रमाणज्ञानसनहरैहै। अैसै
वाह्यपदार्थै सिद्धहोतैवक्ताअ्रोताप्रमाणतानूं सिद्धहोयहै वक्तरितिनिकैज्ञान-
वचनप्रमाणतानूं सिद्धहोयहै। अैसैजीवशब्दकैसंज्ञापणाहेतुतैवाह्यार्थसहित
पणांसिद्धहोयहै वक्तरियाहीतजीवकी सिद्धिहोयहै याहीतैजीवपदार्थकूंजा- ८ध
णिअरपक्षतैकैनिर्बाधसाधककी सिद्धिहै। अैसैनावप्रमेयवीअपेक्षातौकथं

चित्सर्वज्ञानअज्ञातसिद्धहोया। वक्तरिवाह्यप्रमेयकी अपेक्षाकथंचित्वाह्यपदा
र्थविषैविसंवादतैंज्ञातसिद्धहोयअविसंवादतैंअज्ञातसिद्धहोयहै। अैसैंहीकथं
चित्उभयकथंचित्अवक्तव्यकथंचित्अज्ञाताक्तव्या कथंचित्ज्ञातअव-
क्तव्या कथंचित्उभयाक्तव्यअैसैपूर्ववत्सप्तभंगीप्रक्रियाजोडनीअैसैअंतरं
गवाह्यतत्वकानिर्णयकीयायाकौज्ञायकउपायतत्वकहियै। ज्ञा। चौपई अंतरं
गबहिरंगविचारि। पक्षहोयाकोतनिवारि। तत्वज्ञानायोअीमुनिराय। अनेकां
तहैसत्यउपाय॥ इतीअीआप्तमीमांसाभाषादेवागमस्तोत्रकीसंक्षेपअर्थरूप
देशभाषामयवचनिकाविषैसाधनांपरिछेदसमाप्तभया॥ इहांताईकारिका
सिद्धासीभई ६७॥ अागैआप्तभापरिछेदकाप्रारंभहै। दोहा। दैवपौरुषपक्षका

हतविनयथाऽनुनाय। अनेकांतनैसाधिजिन नमूनिनिकेपाया १ अवइहाकार।
कलक्षाणउपायतत्वकीपरीक्षाकरैहै। तहांप्रथमहीदैवहीतैंकार्यसिद्धिहै अैसा
णकांतपक्षमांनैंतामैंदोषदिषावैहै। छा। श्लोक। दैवादेवार्थसिद्धिश्चेद्दैवंपौरुषतः
कथं। दैवतश्चेदनिर्मोक्षःपौरुषंनिःफलंभवेत् १ अर्थ। जोदैवहीतैंकांतकरिस
र्वप्रयोजननसूतकार्यकीसिद्धिहैअैसांनियेतौतहांपूछियेदैवजोपुण्यपापकर्मसा
पुरुषकेअुनअअुनआचरणस्वरूपव्यापारतैंकैसेउपजैहै। इहांकहैअगदैवा।
जोपूर्वेथातातैंउपजैहैपौरुषतैंनांहीतातूंकहिये अैसेतौमोक्षहोनेकाअभा
वठहरैहैपूर्वपूर्वदैवतैंउत्तरोत्तरदैवउपजवोकरैतबमोक्षकैसैंहोया।पौरु ८५
षकरनानिःफलठहैरै। तातैंदैवएकांतश्रेष्ठनांही। इसहीकथनकरिकेईअै

सैएकांतकरैजोधर्मकाअभुदयतैंमोक्षहोयहैतोकानीनिषेधजाननाबुद्धिइहां
कोईकहैजोआपपौरुषस्वरूपनपवतैंकार्यकातदिमनकरैतोकैतौसर्वइष्टानिष्ट
कीर्यअदृष्टजोदैवतिसमात्रतैंहोयहै। वृद्धरिजोपौरुषस्वरूपउद्यमकरैहैतोकैपौरु
षमात्रतैंहोयहैतोहांउत्तरजोअैसैकहनैवालानीपरीक्षावाननाहीजातैसाथि
तदिमकरनेंवालेनिकैनीकोईकैतोकार्यनिर्विघ्नसिद्धहोयाकोईकार्यतौनहो
यअरुसलताअनर्थकीप्राप्तिहोयअैसैंदेषियेहैतातैंअैसैहै।योग्यतावाअथवा
पूर्वकर्मसोतौदैवहैसोएदोऊतौअदृष्टहै। वृद्धरिइसनवमैंजोपुरुषचेष्टाकरि
उद्यमकरैसोपौरुषहैसोयदृष्टहैतिनिदोऊनितैंअर्थकीसिद्धिहै।पौरुषवा।
लेकैतौनांहीहोनादेषियेहै। अरदैवमात्रतैंमांननैंविधैंवांछाकरनांअनर्थक

MEHTA RESEARCH INSTITUTE

वहरैहै॥सोज्ञानीहोयहैसोपरमपुरुषकाउदयअरचारित्रकाविशेषआचारणरू॥
पपौरुषतैहोयहैतातैदैवकाएकांतश्रेष्टनाहीं॥छ॥अरौपौरुषहीतैकार्यसिद्धि
हैश्रैसाएकांतमानैतामैंदूषणादिषावैहै॥श्लोक॥पौरुषोदैवसिद्धिश्चेत्पौरुषंदै
वतःकथं॥पौरुषाच्चेदमोघंस्यात्सर्वप्राणिपुपौरुषं॥२॥अर्थ॥जोपौरुषहीतैंअर्थ
कीसिद्धिहैश्रैसाएकांतपक्षमानैं॥ताकूंपूछियेजोपौरुषदैवतैंकैसैंहोयहैजोनैं॥
जोकार्यकीसिद्धिहैसोदैवकीनिपजाईहैसोपौरुषकरावैहै॥जातैंश्रैसाप्रसिद्धव॥
चनहैजोजैसोजनविनव्यतहोयहो॥हौतैसावुद्धिवपजैहै॥ताहापौरुषवादाफेरिक
हैजोपौरुषहीतैंदैवहोयहै॥तौताकूंकहियेश्रैसोतौपौरुषसर्वप्राणीकरैहैंति ८६
निकासर्वहीकासफलनयावाहियेसोहैनाहीं॥कोईकैसफलहोयहैकोईकैनिः

फलहोयहै॥इहांकहैजोज्ञाकैसम्यकज्ञानपूर्वकपौरुषहोयहैतयहैतातैंतासफ॥
लहोयहै॥वहुरिमिथ्याज्ञानपूर्वकहोयतातैंनिःफलहोयहैतातूंकहियेजोसं
पूर्णसंम्यकज्ञानतौसर्वज्ञकैहै॥वहुरिछद्मस्थकैतौश्रापकैज्ञानमैंश्राईनस॥
त्यार्थसामग्रीतिनितैंनीपौरुषतैंकार्यनहोनांदेषिएहै॥तातैंपौरुषएकांतपक्ष
नीश्रेष्टनांहीं॥छ॥श्रौदोकपक्षएकांतमैंतथाश्रवक्तव्यएकांतमैंदूषणादिषा
वैहै॥छ॥श्लोक॥विरोधान्नोभयैकात्म्यंस्याद्वादन्यायविद्विषां॥अवाच्यतैकां॥
पुक्तिर्नावाच्यमितियुक्तंतद्वा॥अर्थ॥स्याद्वादन्यायकेविद्वेषीनिकैदैवपौरुषदोऊ
पक्षएकस्वरूपसंभवैनांही॥जातैंदोऊपक्षमैंपरस्परविरोधहै॥वहुरिदोऊकाश्र॥
वक्तव्यएकांतपक्षभीनांहीवणैंजातैंश्रवाच्यहैश्रैसाभीकहनांवक्तव्यपक्षहैसोन

वोतातैस्याद्दादन्यायहीश्रेष्टहै।ज्ञा।श्रीगौपूज्यजोस्याद्दादन्यायकैसैहैश्रैसैंपूज्येश्र १
चार्यकहैहै।श्लोक।अबुद्धिपूर्वापेक्षायामिष्टानिष्टस्वदैवतः।बुद्धिपूर्वविपेक्षाया
मिष्टानिष्टस्वपौरुषात्।धाअर्थ।जोपुरुषकीबुद्धिपूर्वकनहोयतिसअपेक्षाविषैतै १
ईष्टअनिष्टकार्यहैसोअपनेदै।वहीतैंनयाकहियेनाहापौरुषप्रधानमांही।दैवका
हीप्रधानपणांहै।बुद्धिजोपुरुषकीबुद्धिपूर्वकहोयतिसअपेक्षाविषैपौरुषतैंन
याइष्टानिष्टकार्यकहियेनाहादैवकाभीणाभावहैपौरुषहाप्रधानहैश्रैसैंपरस्पर
श्रैपेक्षाजाननी।श्रैसैकथंचितसर्वदैवकृतहै।अबुद्धिपूर्वकपणांतैंवकृकिंकथं
चित्बुद्धिपूर्वकपणांतैंसर्वपौरुषकृतनहीहै।कथंचिन्नुनयकथंचित्अवक्तव्य ७७
कथंचित्दैवकृतअवक्तव्यकथंचित्पौरुषकृत्अवक्तव्यकथंचित्उभयकृत।

अवक्तव्या श्रैसैंसप्तभंगीपक्रियापूर्ववत्जोडनी।चौपई।बुद्धिपूर्वमैंपौरुषमांनि
दैवकियेमैंबुधिनमिलानि।श्रैसैंअनेकांतजेगहै।तेजनकार्यसिद्धिसबलहै।१।
इतीश्रीआप्तमीमांसानामदेवागमस्तोत्रकीसंदेपअर्थस्वरूपदेशभाषामयवच
निकाविषैअष्टमांपरिछेदसमाप्तभया।इहांताईकारिकाडक्याणवैनई।।९।।अ
थनवमांपरिछेदकाप्रारंभहै।दोहा।।पत्यपापकेबंधकूंस्यादवादतैसाधि।कि
योयथारथजैनमुनि।नमूंतिनहितजिआधि१।अबइहांपूर्वपरिछेदमैंदैवका
हासोदैवइष्टअनिष्टकार्यकासाधनपणांनिकैदोयप्रकारकहाहै।एकपुण्य
इजापापताहासातावेदनीयशुआयुशुननामशुनगोत्रश्रैसेव्यारितौपुण्यकरा
मकहेहै।बहुरिइनितैंअन्यकर्मप्रकृतिहैपापकर्मकहैहै।तिनिकानेदतौसि

कांतपक्षमाश्रित्य परेभ्यो दुःखदानेनात्मनस्तोषमुपैति अपरेषां सुखोत्पादनेनात्मनि पुण्यमुपचिनोति श्रेयसः कांतपक्षमाश्रित्य द्वेषादिदोषावहः श्लोकार्थः पापं ध्रुवं परेषां दुःखात्पुण्यं च सुखतोयदि अचेतनाकषायौ चवध्येयातामिमिततः १ अर्थः परविषेभ्यः सुखकरणेनात्मनो ध्रुवं कथंचित्कारणात्पापबंधो भवति परविषेभ्यः सुखकरणेनात्मनः कांतात्कथंचित्पुण्यबंधो भवति श्रेयसः कांतपक्षमाश्रित्य अचेतनानां तृणकंटकादिकदुःखकरणेन लेष्टुकाष्ठादिसुखकरणेन वा लेष्टवादीनां अकषायाणां एकेषां कषायरहितवीतरागमुनि आदिनात्मनि पुण्यपापकृतबंधौ ज्ञात्वा परविषेभ्यः सुखदुःखोत्पादनेन निमित्तकारणीकृत्य स्वस्यात्मनः कषायाविष्टस्य हिंसकस्य अचेतनहिंसाबंधयोरपि तीव्रतरागमुनिचेतन

हिंसानिबंधनकर्मबंधौ कृत्वा हिंसकं वीतरागमुनिनिमित्तकं सुखदुःखोत्पादनेनात्मनि पुण्यं ज्ञात्वा निष्पाद्य तत्पुण्यं हीनात्मनस्तेनबंधतोश्रेयसैकांतपक्षपरविषेभ्यः सुखदुःखोत्पादनेनात्मनि बंधो घातिहेश्रेयसः कांतनरस्याऽसद्धेतुत्वेनात्महीनबंधहेश्रेयसाश्रयाच्च आत्मनः स्वयं दुःखकरणेनात्मनि पुण्यबंधे आत्मनः सुखकरणेनात्मनि पापबंधे श्रेयसः कांतमाश्रित्य द्वेषादिदोषावहः श्लोकः पुण्यं ध्रुवं स्वतोदुःखात्पापं च सुखतोयदि वीतरागो मुनिर्विद्वान्ताभ्यां युज्यान्निमितनतः २ अर्थः आत्मनः स्वयं दुःखोत्पादनेनात्मनि पुण्यबंधो भवति अपरस्यात्मनः सुखोत्पादनेनात्मनि पापबंधो भवति श्रेयसो ध्रुवं कथंचित्कारणात्पुण्यबंधो भवति कषायरहितस्य अनिष्पादयतः कषायरहितमुनेस्तथाविधानकर्मणो हीनात्मनः पुण्यपापदोषनिमित्तकारणीकृत्य पुण्यबंधो ज्ञात्वा निमित्तकारणीकृत्य वीतरागमुनिनिमित्तकारणीकृत्य श्रेयसः

खकीत्यतिपाऽएहै वक्तरिज्ञानीपंडितकै तत्वज्ञानंसतोषरूपसुखकीज
त्यतिपाऽएहैयहनिमित्तहै वक्तरिकहै वक्तरिकहैतिनिकैसुखदुखज्ञाव
नेकाअभिप्रायनांहीहैतातैतिनिकैबंधनांहीतौअैसैअनेकांतविक्षयाऽएता
हेतुतैबंधनांहीनीवहस्या वक्तरिअकषायीनीवधैतौबंधतैंछूटनाव।
हैरैअैसैदोकूहीएकांतपक्षेदनीहीघत्पक्षअनुमानतैविरुद्धहै अोगैदोकू।
काएकांतमांनैतामैदूषणदिषावैहै विरोधानोनयैकात्मास्याद्वादसाय।
विद्वेषा अवाच्यतैकांतैपुक्तिनीवाच्यमितियुज्यते ३ अथ दोकूएकांत
कूंएकस्वरूपकरिएकांतमांनैतौदोकूाकस्वरूपहोयनांही तातैदोकू ८७
पक्षनिमैंस्याद्वादसायकैविद्वेषीनिकैविरोधहैनातैकथंचित्मांनना॥

युक्तहै॥ वक्तरिअवक्तव्याकांतपक्षमांनैतौअवक्तव्यहैअैसाकहनांजीनवनैंयातैं।
स्याद्वादहीयुक्तहै ॥ अोगैपूछैहैस्याद्वादविषैपुण्यपापकाअास्रवकैसैवणैहैअै
सैपूछैआचार्यकहैहै ॥ श्लोक॥ विशुद्धिरंगेशंगंवेत्तस्यपरस्यसुखमुखं पु
ण्यपापास्रवोयुक्तोनवैद्यर्थस्तवार्हतः॥ अर्थ॥ आपविषैअरपरविषैतथादोकू
विषैतिष्टेनपजावैनपनैजोसुखदुःखयोजोविशुद्धिअरसंक्लेशाकाअंगहोयतौपु
ण्यअरपापकाआस्रवयुक्तहोया वक्तरिजोहेभगवंतविशुद्धिसंक्लेशाकाअंगनहो
यतौतुमजोअरहंततिनिकैमतसैंअर्थकहाहैतिनितैंबंधनांहीहोयहैतहाविशु
द्धितौमंदकषायरूपपरिणामकूंकहियेहै। वक्तरिज्ञानेज्ञातीइकाषायरूपपरि
णामकूंकहियेहै॥ ताहाविशुद्धिकाकारणविशुद्धिकाकार्यविशुद्धिकास्वभाव

एतौविशुद्धिकेअंगहै।वज्रऋिसंक्लेशकेकारणासंक्लेशकेकार्यसंक्लेशकास्वभाव
एसंक्लेशकेअंगहै।वज्रऋिविशुद्धिकेअंगतैतौपुण्यकाआस्रवहोयहै।वज्रऋिसं-
क्लेशकेअंगतैंपापकाआस्रवहोयहै।तहांआर्तरौद्रध्यानपरिणामतौसंक्लेशक
स्वभावहै।वज्रऋिआर्तरौद्रध्यानकाआस्रवआत्माकाआपविषैतिष्टनासोविशुद्धि-
स्वभावहै।वज्रऋिआर्तरौद्रध्यानकेकार्यहिंसादिकक्रियाहैतेभीसंक्लेशकेअंगा
हैवज्रऋिमिथ्यादर्शनअविरतिप्रमादकषायोगआर्तरौद्रध्यानकेकारणहैतीभी
संक्लेशकेअंगहै।वज्रऋिआर्तरौद्रध्यानकाआस्रवसोविशुद्धिकाकारणहै।वज्रऋि ९०
सम्यग्दर्शनादिकविशुद्धिकेकार्यहै।वज्रऋिधर्मशुक्लध्यानकेपरिणामहैतेविशुद्धि
केस्वभावहैतिसविशुद्धिकेहोतैहीआत्माआपविषैतिष्टैहैतातैयहअनेकांतसि-

UNIVERSITY OF BHAU DAJI

द्धिनयाजोपरस्थसुखदुखहैतैकथंचित्पुण्यआस्रवकेकारणहैआतैविशुद्धिकेअं-
गहै।वज्रऋिकथंचित्पापआस्रवकेकारणहै।आतैंसंक्लेशकेअंगहैअैसैहीकथं
चित्उभयहै।कथंचित्अवक्तव्यहै।कथंचित्पुण्यहेतुअवक्तव्यहैकथंचित्पा-
पहेतुअवक्तव्या।कथंचित्उभयावक्तव्यहै।अैसैसप्तभंगीपक्रियापूर्ववत्जोडनी
छा।चौपई।निजपरसुखदुखपुण्यबंधाद्या।जाविशुद्धिकेअंगजुथायबंधेपापजोरा।
वैकलेशापरमविशुद्धिबंधनहिलेखा।१६ती श्री आप्तमीमांसानामदेवागमस्तोत्र
की संदेअर्थरूपदेशानामसमयवचनिकाविषैनवमापरिछेदसमाप्तभया।९।
हातांईकारिकापद्याणवैनई।१००। अैसैदशमापरिछेदकाभाषारंनहै।दोहा
बंधहोयअज्ञानतैं।अल्पज्ञानतैंमुक्तिदोकमिथ्यापदविनिनमूल्यातपदयुक्ति

१ अवश्हां अज्ञानतैवंधहीहोहै वक्रिअल्पज्ञानतैंहीमोक्षहोयहै अैसेदोकए
कांतपक्षमांननैंमैंदोषदिषावैंहै। श्लोक अज्ञानाच्चेधुवोबंधोज्ञेयानंत्यान्नकेव
ली ज्ञानस्तोकाद्विमोक्षश्चदज्ञानबहुतोमथा १ अर्थ जोअज्ञानतैंबंधहोयहै।
असाएकांतपक्षमानियेतोकेवलीनहीयजानैंज्ञेयपदार्थअनंतैंहै वक्रिस्ताक
कहियेथोरेज्ञानतैंमोक्षहोयहै अैसाएकांतपक्षमांनियेतौरहनाअज्ञानबक्रत
हैनातैंबंधबहरैतबमोक्षकाहेतैंहोयअैसैदोकएकांतपक्षमैंदोषआवैंहै। छ।
इहांअैसाजांननांजोसर्वपदार्थनिकूंजानैंनाकूंसर्वज्ञकेवलीकहियेहैसोजैसैं अै
सानैंहोयतैंअज्ञानहै। अैसैंअज्ञानतैंबंधहीहोवैकरैतबतैंछूटाविना ९१
केवलीकैंमैंहोय। वक्रिअल्पज्ञान होतैंतौसर्वज्ञानहोयजैसैंवक्रतेअज्ञान।

अवशेषहै। नातैंबंधहोययहपक्षआवैनातैंदोकएकांतपक्षअैसैनहीं। छ। आगै
दोकएकांतपक्षमांनैंतथाअवक्तव्यएकांतमांनैंतामैंदोषदिषावैंहै। श्लोक। विरे १
धाल्लोनयैकांत्यस्याद्वादन्यायविद्विषां। अवाच्यतैकांतेप्युक्तिर्नावाच्यमितियुज्य
तेः। अर्थ। स्याद्वादन्यायकैविद्वेषीहैतिनिकैदोकपक्षाएकस्वरूपहोयनांहीजातै
इनिमैंपरस्परविरोधहै। वक्रिअवाच्यताकाएकांतपक्षनांनांहीवोजातैयातैंअ
वाच्यहै। अैसानांकहनांनवोंनातैंयहनांपक्षअैसनांहीं। आगैपूछेहैंजो अैसैंहैतौजा
णिनिकैंबंधकौनहैतुतैंहोयहै। जाकरिइष्टअनिष्टकार्यपाणिनिकैंहोयहै सो
अबुद्धिपूर्वकीअपेक्षादेवतैंहोयहै। अैसापूर्वैंकहयासोकहनांनवोंवक्रिमु
निकैंमोक्षकाहेतैंहोयहैजाकरिपोरुषैइष्टकासिद्धिबुद्धिपूर्वअपेक्षातैंहोयहैअै

सापूर्वैकह्यासोकहनंवोंश्ररनास्तिकमतकापरिहारहोय।श्रैसैपूछेऽसत्रा-
शंकाकेनिराकरणकेऽर्थकआचार्यकहैहैं छ श्लोक। अज्ञानान्मोहिनोबंधोना
ज्ञानाद्वीतमोहतः।ज्ञानस्तोकाच्चमोक्षस्यादमोहान्मोहिनोन्यथा। इ अर्थ। मोहस
हितअज्ञानहै।तातैंबंधहै।बहुरिमोहरहितअज्ञानहैतातैंबंधनांहीहै।श्रैसैं।
कथंचित्अज्ञानतैंबंधहै।कथंचित्तांही।श्रैसाअनेकांतसिद्धहोयहै।बहुरि।
स्तोकज्ञानहोयअरज्ञानमैंमोहनांहीहोयश्रैसैंतौंमोक्षहोयहै।बहुरिजोस्तोकज्ञा
नमोहसहितहैतातैंबंधहोयहै।श्रैसैंस्तोकज्ञानमैंअनेकांतसिद्धहोयहै।इहां
श्रैसाज्ञाननांजोकर्मबंधस्थितिअनुभागलीयेअपनैंफलदेनेकूंसमर्थहोय। ९७
श्रैसाकर्मबंधहैक्रोधादिकषायतिनैंसिद्धासिद्धात्वसहिततथामिथ्यात्वर

हितकेवलकषायसहितअज्ञानतातैंहोयहै।बहुरिजामैंक्रोधादिककषायतथा
मिथ्यात्वनमिलैंश्रैसाअज्ञानयथाख्यातचारित्रवालेमुनिनिकैंहै।तिसतैंस्थि-
तिअनुभागरूपबंधनांहीहोयहै।श्रैसैंहीस्तोकज्ञानमैंज्ञाननां।केवलज्ञानअ
पेक्षास्तोकज्ञानछद्मस्थकाकहियेतामैंमोहसहितनैंबंधहोयमोहरहितनैंमो
क्षहोयश्रैसैंज्ञाननां।इहांज्ञानसमानांपक्रियापूर्ववत्जोडनां।अज्ञानतैंकथं-
चित्बंधहैमोहसहितनैंबहुरिकथंचित्मोहरहितअज्ञानतैंबंधनांहीहैबहु
रिमोहरहितस्तोकज्ञानतैंमोक्षहै।मोहसहितस्तोकज्ञानतैंबंधहै।कथंचित्
उभयहै।कथंचित्अवक्तव्यहै।कथंचित्अज्ञानतैंबंधअवक्तव्यहै।कथंचि
त्अज्ञानतैंबंधनांहीअवक्तव्यहै।कथंचित्उभयाअवक्तव्यहै।श्रैसैंऽहांना

ऽसर्वथाएकांतवादीश्रस्मत्संकेश्वनिमानतैंदाधतिनिकैमतऽहतत्वमैंवाधा
दिषाऽस्मत्संनेकांतनिर्वीधदिषायातोकदाग्रपक्षवर्णनकरी।सत्श्रसत्१
एकश्रनेक।२।नित्यश्रनित्य।३।नेदश्रनेद।४।श्रपेक्षाश्रनपेक्षा।५।हेतुश्राग्म६
श्रतरंगबहिरंगतत्व।७।दैवसिद्धियौरुषसिद्धि।८।पुण्यपापकबंध।९।श्रज्ञा।
नतैबंधस्तोकज्ञानतैमोक्ष।१०।श्रैसैदशपक्षकाविधिनिषेधतैसाधिमातमातमा
गकरिसतरिनंगकाएकांतनिषेधा[illegible]स्यादवादसाधाकारिकाश्रद्यागवै।
मई।एष्ट। श्रीपूछै हैजीकामश्रादिदोषस्वरूपनेमोहकीपक्षतिनिकरिसहा
वरितजीश्रज्ञानतातैघाणिनिकैश्रुभश्रश्रुभफलकालीगनेकाकारणजोपु
ण्यपापकर्मतिनितैबधकह्यासोतौहोकुपरंतुसोयहकामादिककाउपजनौहै

सोईश्वरहैनिमितनाकूंश्रैसाहै। श्रैसैपूछेऽसश्राजांकाकूंऽरिकरनेकूंश्राचार्यकहै
है। श्लोका।कामादिप्रनवश्चित्रकर्मबंधानुरूपतः।तत्कर्मस्वहेतुर्योजीवासेशुद्ध
शुद्धितः।ध। श्रर्था।कामादिप्रनवकहियेमानमायालोनश्रादिकाप्रनवकहिये
उत्पत्तिनामैहोयश्रैसाजोसंसारहैसोचित्रकहियेश्रनेकप्रकारहै।जातैयासैसु
खदुःखश्रादिकदेनाकालकेनेदकरिकार्यश्रनेकप्रकारहोयहै।सोयहकामादि
प्रनवचित्ररूपसंसारहैसोकर्मबंधकेश्रनुरूपहोयहै।जैसाकर्मपूर्वैबांधाथा।ता
केउदयकेश्रनुसारहोयहै। बहुरिसोकर्मपूर्वैबांधाथासोश्रपनेकरणहारैबंध
थावहुरितैकारणजीवहै। बहुरितैजीवशुद्धिश्रशुद्धिकेनेदतैदोयप्रकारहै।श्रैसै
संसारकीउत्पत्तिकाक्रमहै।इहांऽस्मत्वादीकहैजीकामादिककाप्रनवहोसोऽ।

श्वरके कीयेहोयहै।।ताकूं कहियेजोऽश्वरसोनित्यहै।एकस्वभावहै।वक्तरिताकीऽज्ञ १
ताएकस्वभावहै।वक्तरिताकाज्ञानभी।एकस्वभावहैअरुसंसारभैकारहै।तेअनेक
स्वभावरूपहैसो।एकस्वभावहोयसोअनेकस्वभावरूपकार्यनिकूं कैसैकरैतौका
र्यनिकीजोईश्वरकेस्वभावकैतथाऽज्ञाकैतथाज्ञानकैअनित्यपणांश्वरअनेक
स्वभावपणांआवैसोअैसाईश्वरसांमांनांहीतथासिद्धहोयनांही।वक्तरिताबनिकै
बुद्धिकेनैदकहनैतैकोई।कैमुक्तिहोयहैकेईकैसंसारहीहैअैसासिद्धहोयहै।व
क्तरिऽश्वरवादकीचरचाविशेषहैसोअष्टसहस्रीतैजानना।छ।।आगैपूछैहैजोजी
वनिकैबुद्धिअबुद्धिकहीतिकास्वरूपकहाहै।अैसैपूछेआचार्यकहैहैं।श्लोक ९५
बुध्यबुद्धिपुनः शक्तिर्नेयाक्यापाक्यशक्तिवत्। साधनादेतयोर्व्यक्तीस्वभावोतर्क।

गोचरः।।प।।अर्थ।।पुनःकहियेवक्तरितैपूर्वोक्तबुद्धिअबुद्धिदोऊहैंतैशक्तिहैयोग्यता
अयोग्यताहै।।तेसुनिश्चितअसंभवबाधकप्रमाणतैनिश्चयकरीकुईसंभवैहै।।
जैसैमाषऊदमूंधानहैनिनिसैंयाक्यापाक्यकहियेपचैंपचावनैंयोग्यअरु
पचैपचावनैंयोग्यशक्तिहैसोस्वभावहै।तैसैहै।।वक्तरितिनिदोऊनिकीशक्तिहै
प्राटहोनांहैसोसादिकहियेकालअपेक्षाआदिसहितहै।तथाअनादिकहियेअ १
दिरहितहै।।वक्तरिऽहापूछैजोसादिअनादिकाहितैहैनाहाअैसाउत्तरसोऽह
वस्तुकास्वभावहैसाहैसोयहैतर्कगोचरनांही।।वस्तुस्वभावमैंहेतुकापूछणा।
नांही।अैसैंकारिकाअर्थहै।ऽहीटीकामैंअैसाअर्थहैजोजीवनिकैनव्यपणांहै।
सोतौबुद्धिहैसोजोसम्यादृष्टीनअनादिकीवासितैनिश्चयकीजियेहै।वक्तरिअबु

द्विशक्ति अनन्यपणांहैं सोसम्यग्दर्शनादिककीव्याप्तिरहितहै। सोयहप्रत्यक्षतौसर्व
ज्ञनानैहै अरअनुमानतैजानैहै। वक्रशितिनिकीव्यक्तिहोयहै। सोअन्यजीव।
कैतौअशुद्धिकीव्यक्तिआदिहै। जातैयाकैसम्यग्दर्शनआदिकआदिसहितप्रगटहो
यहै वक्रशिअनन्यजीवकैअशुद्धिकीव्यक्तिअनादिहीहै। जातैयाकैमिथ्यादर्शनआ।
दिकअनादिहीकैहै। वक्रशिऽसशक्तिकीव्यक्तिकाअैसाजीव्याख्यानहैजोजीवनिकै।
अनिष्टायकैनेदतैशुद्धिअशुद्धिहै। ताहांसम्यग्दर्शनादिपरिणामस्वरूपअनिष्टाय
तौशुद्धिहै। अरमिथ्यादर्शनपरिणामस्वरूपअनिष्टायअशुद्धिहै। ऽसिकीव्या।
क्तिअन्यजीवनिकैसादिअनादिहै। ताहांसम्यग्दर्शनादिकअनुपजैतैतैअशुद्धि ९५
कीव्यक्तिअनादिकहिये। वक्रशिसम्यग्दर्शनादिरूपशुद्धिकीव्यक्तिसादिकहियै।

अैसैजानना॥ वक्रशिकोईपूछैजोऽहांस्वभावसैंतर्कनकरणांकह्याहै सोप्रत्यक्षप
नीतिसैंआयापदार्थकास्वभावसैंतर्कनगोचरपूछ्याजोहैसमंतभद्रऽसर्वज्ञपणांआ
दिकऽपेयतत्त्ववक्रशितैंकैऽपायतत्त्वजीज्ञायककहियेजानावतैंवालाहैतुवाद।
अरकारकतत्त्वदैवपौरुषऽनिकाअधिगमकहियेजानना समस्तपणौतौप्रमाण
करिअरकदेवापणौनयनिकरिकरणांकह्याहैयहनियमकह्याहै तातैंप्रथम
होप्रमाणकूंकहनांजातैयाकैस्वरूपसख्याविषयफल ऽनिष्यादिनिकैविधैंवि
धनिपत्तिहै। अनेकवादीअनेकप्रकारऽनिकूंअन्यथामांनैहै तिनिकाराकरण
विनाप्रमाणकानिश्चयनहोयहैअैसैंपूछैमांनूंआचार्यकहैहै श्लोक। तत्त्वज्ञानं
प्रमाणंतेयुगपत्सर्वभासनं। क्रमभाविविशेषज्ञानंस्याद्वादनयसंस्कृतं ६ अर्थ।

हैनाचतनेकहियेतुमारेमतमैंतत्वज्ञानहैसोप्रमाणहैयहतोप्रमाणकास्वरूप। कह्या। कैसाहैतुमारातत्वज्ञानयुगपत्सर्वभासनंकहियेणकैकालसर्वपदार्थनिक १
प्रतिभासजामैंऐसाकेवलज्ञानहै। वक्रसिणोज्ञानक्रमसमावीहैसोजीवप्रमाणहैजातैय
हमतितत्वज्ञानहै। ऐसामतिस्मृतिअवधिमनःपर्ययश्रुतिज्ञानहै। वक्रसिकोसाहैता
त्वज्ञानप्रमाणाण्वादत्वायकरिसंस्कृतहैजोसर्वथाएकांतकहियैतौबाधासहित
होयतातैंण्णाछादतैंसिद्धकीयानिर्बाधहै। ऐसैयुगपत्सर्वभासनअरक्रमभाविक।
हैनेंमैंप्रत्यक्षपरोक्षरूपसंख्याकहीवक्रसिसर्वभासनअरक्रमरूपभासनऐसैंकह
नेतैंविषयजनाथाऐसैकारिकाकाअर्थप्रमाणकास्वरूपसंख्याविषयजनाजनेंस्वरू ९६
पहै तहांऐसाजानांजोतत्वज्ञानकहनेतैंअज्ञानकैतथानिराकारदर्शनकैत

थाइंद्रियअरविषयकेनिकटनेंरूपसंनिकर्षकैतथाइंद्रियनिकीपटुतिमात्रकैप्र
माणपणांकानिराकरणभयातथाप्रमितिप्रतिकरणांहीतातैंप्रमाणांहीं। इहांको
ईपूछैतत्वज्ञानकूंसर्वथाप्रमाणताकहतैंअनेकांतमैंविरोधआवैहैताकूंकहि
येयहबुद्धिहैसोअनेकांतस्वरूपहैजिसआकारतैंतत्वज्ञानस्वरूपहैतिसआका
रतैंप्रमाणहै। अरजिसआकारतैंमिथ्याज्ञानस्वरूपहैतिसआकारतैंअप्रमाण
है। ऐसैंबुधिप्रमाणअप्रमाणस्वरूपहोनैंअनेकांतमैंविरोधनांहीहै। जैसैंनिर्दोष
नेत्रवालावंडमासूर्यकूंउतनेकूंदेषैतवएथीसूलमणूवादीषैसोवंडमासूर्यप्र
माणकीअपेक्षातोयहदेषणाप्रमाणहै। वक्रसिएथीसूलमणादेषणाअप्रमाणहै वा
क्रसिनेंसैंहीदोषसहितनेत्रवालाकूंणाकवंडमाकादोयवंडमादीषैसोवंडमादेष

णांतोपमाणहै। अरदोयचंडमादेषणांअपमाणहै। श्वेतैसाकहीवुद्धिमैंविवहारतैं।
पमाणअपमाणपणांसंनवैहैवकुरिछहाकोईपूछैपमाणअपमाणकानामकानिय
मकाव्यवहारकैसैठहरैताकूंकहियेवेधनैंघटतैंकीअपेक्षापधानगौणाकरिनाम
काव्यवहारप्रवर्तैहैजैसैंकस्तूरीआदिकमैंसुगंधवकुनदेषिताकूंव्यवहारमैंसुगं।
धद्रव्यकहियै। श्वेतैसुगंधकीपधानताकरिकहायद्यपिचामैंस्पर्शआदिकनीहै
तथापितिनिकीगौणताहैश्वेतैंनामकाव्यवहारहै। श्वेतैंतत्वज्ञानपमाणकास्व
रूपकह्या। वकुरिसंख्यापत्यक्षपरोक्षकेनेदकरिदोयकहीं। ताहांपत्यक्षकेनेद
दोय। तहांव्यवहारप्रत्यक्षतौइंद्रियबुद्धिइंद्रियकरिविषयकंसाक्षात्ज्ञाननांवा ९७
कुरिपरमार्थप्रत्यक्षतौकेवलज्ञानअरविकलप्रत्यक्षअवधिमनःपर्ययज्ञान।

श्वेतैंप्रत्यक्षपमाणहैयाकालक्षणासामान्यविशेषनिसहितस्पष्टवस्तुकाज्ञाननांहै
वकुरिपरोक्षकालक्षणासामान्यविशेष।अस्पष्टअवधानसहितज्ञाननां। ताकेनेदया
चस्मृतिप्रतिभिज्ञान।तर्कअनुमान।आगमश्वेतैंइनिकालक्षणाश्वेतांजोपूर्वैअनुन
वमैंधारणाभैंआयावस्तुकास्मरणहोनांयादिआवनांदोकुनिनैंकपणांअरसदृश
पणांआदिकांजोडरूपज्ञानहानांसोप्रतिभिज्ञानहै। वकुरिसाधसाधनकैव्याप्तिजोअ
विनाभावताकूंज्ञानैंसोतर्कहै। वकुरिसाधनतैंसाध्यपदार्थकाज्ञानहोनांसोअ
नुमांनहैताकेनेददोयहै। स्वार्थानुमान।परार्थानुमानश्वेतैंताहांसाधनतैंसा।
ध्यकाआप्पहीनिश्चयकरिज्ञानैंसोस्वार्थानुमांनहै। वकुरिपरकेउपदेशतैंनि
श्चययकरिज्ञानैंसोपरार्थानुमानहैताकेपांचअवयवहैं। प्रतिज्ञानेनुनदाहरण

उपनयनिगमनं ताहांसाध्यअरसाध्याकाश्रयदोऊकूंपक्षकहियेश्रैसेपक्षका
वचनकूंप्रतिज्ञाकहियेताहांसाध्याकास्वरूपतौशब्दकाअनित्यत्वश्रप्रसिद्धश्रैसैंती
नरूपहैश्ररसाध्याकाश्राश्रयपक्षादिककरिप्रसिद्धहोयहै वक्तरिसाध्यनैश्रा
विनाभावसाधनकाश्रैसासाधनकास्वरूपहैताकावचनकूंहेतुकहिये व
क्तरिपक्षसारिषातथाविलक्षणाश्रन्वयीकाणांहोयताकूंदृष्टांतकहियेहैताकाव
चनकूंउदाहरणकहियेहै।सोपक्षसारिषाकूंश्रन्वयीकहियेव्यपरीतकूंव्यति
रेककहिये वक्तरिदृष्टांतकाश्रपेक्षालेश्ररपक्षकूंसांनकरिकहैसोउपनयहै।
वक्तरिहेतुपूर्वकपक्षकानियमकरिकहनांनिगमनहैइनिकाउदाहरणश्रैसायह ९८
पर्वतश्रग्निमांनहै यहतौप्रतिज्ञा वक्तरिजातैयहधूमवानहैयहहेतु वक्तरि

जोधूमवानहैसोश्रग्निमांनहै।जैसैरसोइहैयहश्रन्वयदृष्टांत।वक्तरिजोधूमवान
नांही।तौश्रग्निताभांनांही।जैसैतलकानिवासयहव्यतिरेकदृष्टांतयहउदाहरणवक्तरि
नैसैयहधूमवानपर्वतहैयहउपनय।वक्तरितातैयहश्रग्निमांनहैयहनिगमन।श्रौ
पाचयवोगकापरार्थानुमानहै।वक्तरिश्राप्तजोसर्वज्ञश्रादिसाधावक्ताताकैवचन।
तैंवस्तुकानिश्चयकीजियेसोश्रागमप्रमाणहै।श्रैसैंप्रमाणकीसंख्याहै.श्रभवादी।
स्मृतिप्रतिभिज्ञानतर्ककूंप्रमाणतामांनिसंख्याकानियमथापैहै।तिनिकानियमस्मृ
तिश्रादिप्रमाणविणाहैहै।वक्तरिप्रमाणकाविषयसामान्यविशेषस्वरूपवस्तुहैसो
हीनिर्बाधसिद्धहोयहै।श्रभवादीसामान्यहीकूंतथादोऊकूंतथाविशेषहीकूंव
स्तुरश्रपेक्षारहितप्रमाणकाविषयथापैहैसोनिर्बाधसिद्धहोयनांहीहै।वक्तरिता

त्वज्ञानस्याद्यादनयकरिसंस्कृतहै।।ताहांश्रैसाज्ञाननांजोज्ञानहैसोकथंचित्प्रमा।
णप्रतिभासस्वरूपहैज्ञातैसकलविषयस्वरूपहै। श्रैरकथंचित्क्रमभावीहैज्ञातै।
ज्ञाकाक्रमरूपविषयहैइत्यादिसप्तभंगीजोडनी।।श्रथवाप्रमारेप्रमारेनेदनियरिला।
णवाणनैसैतत्वज्ञानहैसोकथंचित्प्रमाणहै।श्रथनीप्रतिप्रतिसाधकतमरणहै
वडुरिकथंचित्श्रप्रमाणहैज्ञातैश्रप्रमाणकेनेदश्रपेक्षाप्रमेयहै।।श्रथवाश्राप
कैश्रापप्रमेयइत्यादिसप्तभंगजोडनी।।वडुरिप्रमाणकीविशेषघरचाश्रष्टसहस्रीटी
कातैंतथाश्लोकवार्तिकतत्वार्थसूत्रकीटीकातैंतथापरीक्षामुखग्रंथतैंजाननी।।
श्रीरंप्रमाणकाफलकास्वरूपकहैहै।ज्ञातैश्रज्ञानादीफलकास्वरूपश्रज्ञपकका। ७७
रणनैहै।ताकानिराकरणहोया।श्लोक। उपेक्षाफलमाद्यस्योपादानहानधीः

पूर्वावाज्ञाननाशोवासर्वस्याप्यस्वगोचरेधत्रर्थे।।श्राद्यस्यकहियेकारिकामैंयुगप
त्सर्वज्ञासनंश्रैसाप्रहलैकहयासोकैवलज्ञानश्राहिलेनांतिसकानिज्ञानफलतौउ।
पेक्षाकहियेउदासीनतावीतरागताहै।ज्ञातैंकेवलीनिकैसर्वप्रयोजनसिद्धिन
यासंसारश्रश्रसंसारकाकारणहैयथाताकाश्रज्ञाननयाश्रश्रोहश्रश्रोहकाका

ज्ञाहै वक्तरिउपदेशकावचनहैसोतीर्थकरएणांनामानामकर्मकीप्रकृतिकेउद
यतैंविनाइसयसेवप्रवर्तैहैतिनितैंसर्वज्ञाणीनिकाहितहोयहै वक्तरिकेवलज्ञा
नएसांणाकाअनिन्तफलअज्ञानकाअभावहै वक्तरिशेषकहियेमतिआदिज्ञानरू
पप्रमाणनाकाफलसाक्षात्तौअपनेविषयविषैंअज्ञानकाअभावहैसोतिनितैंअ
निन्तहै वक्तरियरंपराकरिहेयकात्यागउपादेयकाग्रहणाकाज्ञानहोनाफलहै त
थापूर्वाकहियेउपेक्षाजोहैतेतिनितैंनिन्तहै अरैसैकथंचित्फलअनिन्तकथंचि
त्तनिन्तहैयातैंएकांतकानिराकरणहै ॥ आगैंपूछैहैंजोप्रमाणाकाफलस्याद्वा
दनयसंस्कृतकह्यासोस्याद्वादकास्वरूपकहाहै। अरैसैंपूछेआचार्यकहैहै ॥ १०७
वाक्येष्वनेकांतद्योतीगम्यंप्रतिविशेषणंस्यान्निपातोर्थयोगित्वात्तवकेवलिनाम

BHAU DA

पि॥ ७॥ हेनगवन्तयहस्याद्वअरैसाज्ञाहैसोनिपातहैअव्ययहैवाक्यनिविषैंअनेकांतका
द्योतीकहियेप्रकाशनेंवालाहैवक्तरिगम्यंकहियेसाधनेंयोग्यजानेनेंयोग्यपदार्थहैतात्प
र्यविशेषणहै। जोनैंयाकैअर्थकाद्योतीपणांहैअर्थतैंसंबंधहैयातैंतुमारेमतमेंकेव
लीनिकैनीयहहै। ताहाकोंईपूछैवाक्यकहा॥ ताकासमाधानजोवर्णस्वरूपपद
हैतिनिकैपरस्परअपेक्षारूपनिकैनिरपेक्षसमुदायहोयसोवाक्यहै अरैवादी
वाक्यकास्वरूपअनेकप्रकारश्रमथाकहैहैसोनिर्बाधनांहीमैदशप्रकारवाक्य
तौएकहैतिनिकैनाम। अख्यातशब्द १ संघातमैवमैअरैसीजाति १ एक। अरअव
यवरहितशब्द १ क्रम १ बुद्धि १ अनुसरति १ आद्यपद १ अंतपद १ ।
सापेक्षपद अरैसैइत्यादिअनेकप्रकारकहैहैतिनितैंबाधाआवैहै स्याद्वादकरि

सिद्धवाक्यकास्वरूपकह्यासोहीनिर्बाधहैवक्तरिपूछेअनेकांतकाहा ताकासमाधा
नसतश्चमतनित्यश्चनित्यएकश्चनेकइत्यादिसर्वथाएकांतकानिराकरणश्चनेकां
तहैसोइनिसतआदिकैलगायास्यात्शब्दहैसोतिसकाविशेषणएणांकरितिसा
कूंतत्वकाश्चवयवएणांकरिताकाद्योतकहोयहै।जातैनिपातशब्दनिकूंद्योतक।
नीकहियेहै वक्तरियहस्यात्निपातस्याद्वादकावाचकनीहै। वक्तरिवाक्यद्योत
कपक्षविषैनीतासंकहियेजाननेयोग्यअर्थप्रतिविशेषणाहोयहै वक्तरिस्यात्शब्द।
सर्वहीवाक्यानिकतिलगावताजातैसर्वअर्थकूंएकहीशब्दकहैनांहीवाक्यकरि।
सूचवर्तैहतातैनिसावाक्यकैजोतासंअर्थहोयताहीकाद्योतकहोयहै।जोस्यात्श। १०१
ब्दतलगाइनौअनेकांतअर्थजानाजायनांहीश्रैसैजाननां। आगैपूछेहैकथंचि

त्शब्दिशब्दतैंनीतौअनेकांतअर्थकाजाननांहोयहैआचार्यकहैहैयहसत्यहै।होय
है यहकथंचित्शब्दनीतिसस्यात्शब्दकापर्यायशब्दहै।सोहीस्याद्वादविधावैहै।स्यात्
कास्याद्वादःसर्वथैकांतत्यागात्किंवृत्तचिद्विधिःसप्तनयापेक्षोहेयादेयविशेष
कः।।अर्थःस्याद्वादकहियेस्यात्शब्दहैसोसर्वथाएकांतकात्यागतैकथंचित्श्रै
यायाकापर्यायशब्दहै जातैकिसशब्दकाकथंनिपजायचित्वृत्तयकविधानकी
याहै।।तबकथंचित्श्रैसाजनयाहै।।वक्तरिकैसाहैसप्तनंगस्वरूपनयनकीहैअपेक्षा।
जाकै वक्तरिकैसाहैहेयअरुउपादेयजोश्रैअर्थताकाविशेषकहैनैवकरनेवाला।
है इहांश्रैसांजाननांजोयहस्याद्वादहैसोअनेकांतवस्तुकूंअभिप्रायरूपअपनां।
विषयकरिसप्तनंगनयकीअपेक्षालेश्रस्वभावश्रपरभावकरिसत्असत्।

आदिकीव्यवस्थाकूंप्रतिपादनकरैहै॥ताहासप्तनैगनौपूर्वैकहैजानू ऋजुसूत्रनया-
हैनैऽव्यार्थिकपर्य्यायार्थिकऽनिदोयकैनैदनैदनैगमआदिकहै ताहानैग
मसंग्रहव्यवहारनौतीननौऽव्यार्थिककैनैदहै॥ऋजुसूत्रशब्दसमभिरूढ
एवंभूतएचारिपर्य्यायार्थिककैनैदहै॥ऋजुसूत्रनिमाननयनिमैनैगमसंग्रहव्य
हारऋजुसूत्रएचारिनौअर्थप्रधानहै॥ऋजुसूत्रशब्दसमभिरूढएवंभूतनौतीनशब्द
प्रधानहै ऋजुसूत्रनैगमनयकेतीननैदहै दोयऽषकूंप्रधानगौणकरिएवर्त्तै॥दो-
यपर्य्यायकूंप्रधानगौणकरिएवर्त्तै॥ऽव्यअरुपर्य्यायकूंप्रधानगौणकरिएवर्त्तै॥
त्रैसैतीननहादोयऽव्यकूंप्रधानगौणकरिएवर्त्तै॥तथाएकऽव्यतथाएकअ १०२
व्यत्रैसैदोयऽव्यकूंप्रधानगौणकरिएवर्त्तै॥त्रैसैऽव्यनैगमदोयप्रकारहै॥ऋज

रिपर्यायनैगमतीनप्रकारहै॥दोयअर्थपर्य्यायदोयव्यंजनपर्य्यायाएकअर्थपर्यायाएक
व्यंजनपर्य्यायऽनिकूंप्रधानगौणाकरिएवर्त्तै॥तहांअर्थपर्य्यायतीनप्रकारज्ञानार्थपर्य्या
यज्ञेयार्थपर्य्यायज्ञानज्ञेयार्थपर्य्यायत्रैसैव्यंजनपर्य्यायनैगमछहप्रकार॥शब्दव्यंजन
पर्य्याय॥समभिरूढव्यंजनपर्य्याय॥एवंभूतव्यंजनपर्य्याय॥शब्दसमभिरूढव्यंजनपर्य्याय॥
शब्दएवंभूतव्यंजनपर्य्याय॥समभिरूढएवंभूतव्यंजनपर्य्यायत्रैसैवक्रिअर्थव्यंजनप
र्य्यायनैगमतीनप्रकारहै॥ऋजूसूत्रशब्दऋजूसूत्रसमभिरूढऋजूसूत्रएवंभूतत्रैसैं व
क्रिऽव्यपर्य्यायनैगमआदप्रकारहै॥शुद्धऽव्यऋजूसूत्रार्थपर्य्यायशुद्धऽव्यशब्द शु
द्धऽव्यसमभिरूढ शुद्धऽव्यएवंभूत॥अशुद्धऽव्यऋजूसूत्रअशुद्धऽव्यसमभिरूढ॥
अशुद्धऽव्यशब्द अशुद्धऽव्यएवंभूतत्रैसैवक्रिआदनयकैकालकारककलिंगसंख्या

साधनमुपग्रहकेनेदंतैनेदंहै।मुख्यगौणाकरिप्रवर्त्तै इत्यादिनयनेतेवचनकेनेद।
हैतैनेहीनयहैतिनिकैमुख्यगौणाकरिविधिनिषेधतैंसातसातभंगाकरिप्रवर्तैहैसोश्रै
सैनयनिकीअपेक्षालेस्याद्वादप्रवर्तैहैसोहेयउपादेयतत्वकूंजनावैहै।श्रीकहैहै
जोश्रैसायहस्याद्वादहैसोकेवलज्ञानकीज्योंसर्वतत्वप्रकाशकहैसोहीदिषावैहै।श्लो
क स्याद्वादकेवलज्ञानेसर्वतत्वप्रकाशने।भेदःसाक्षादसाक्षाद्वह्यवस्त्वन्यतमंभवेत
१० अर्थ।स्याद्वादश्रुतकेवलज्ञानदोऊहैनेकैसेहैसर्वतत्वकाहैप्रकाशनतिनितै।
श्रैसैहै।वक्तरिऽनिमैंस्याद्वातकहियेप्रत्यक्षश्रुतस्याद्वातकहियेपरोक्षश्रैज्ञाननो
हीकानेदहै।वक्तरिऽनिमैंएकहीकहियेश्रुतकानकहियेश्रैसैश्रुतमहीयतौश्रु। १०३
वस्तुहोय इहांश्रैसाज्ञाननांजोज्ञानप्रत्यक्षपरोक्षश्रैसैदोयहीप्रकारहै।इतिसिद्धा।

यश्रुतकोईनांही।वक्तरिदोऊहीप्रधानहजातैपरस्परहै।तुपणांऽनिकैहै।केवलज्ञा
नतैस्याद्वादप्रवर्तैहै।वक्तरिकैवलज्ञानश्रुतादिसातनरूपहैतोऊस्याद्वादतैंसा
तांजायहै।वक्तरिसर्वतत्वकैप्रकाशकसमानकह्याताकायऊश्रुतिप्रायहै।जो
जीवश्रादिसातपदार्थतत्वकहैतिनिकाकहनांदोऊकैसमानहैजैसैश्रागमहै।
सोजीवादिकसमस्ततत्वकूंपरकूंपतिपादनकरैहैतैसैहीकेवलीभाषैहैश्रैसैं।
मांनैहैप्रत्यक्षपरोक्षप्रकाशनैंकाहीभेदहै।वचनद्वारैकहनेकीश्रपेक्षाभीसमा
नहैजातैंतिनिविशेषनिकूंकेवलीजांनैहैतिनिमैंजेवचनश्रगोचरहैतेकहनैं।
मैंश्रावहनाहाहै. वक्तरिस्याद्वादनायसंस्कृतंतत्वज्ञानंयाकाव्याख्यानश्रैसाजोप्र
मांणनयकरिसंस्कृतहै।ताहास्याद्वादतौसपूर्णागीवचनकीविधिनैप्रमांणहै।वक्त

नैगमआदिवक्तव्यनैदरूपनयहै।श्वेसैसंक्षेपतैंकह्याविस्तारतैंश्रमग्रंथनितैंजान
नां छ आगैश्रवतत्वज्ञानपमाणंस्याद्वादनयसंस्कृतंइतिकाश्रीरघकारव्याख्यान
करैहैतहांस्याद्वादतौंश्रहेतुवादश्रागमहै।वक्तृरिनयहैसोहेतुवादहैनिर्दोऊनि
करिसंस्कृतहैसोहीयुक्तिग्राह्यइतिदोऊनिकरिश्रविरुद्धहै।सुनिश्चितासंभवद्बा
धकरूपहैश्वैसैंश्रनिपायवानश्राचार्यहैतेस्याद्वादश्रहेतुवादहैसोतौंपहलैकह्या
हीश्रायेश्रवहेतुवादजोनेयताकालक्षणकहैहै।श्लोक।सधर्मणैवसाध्यस्यसाध
र्म्यादविरोधतःस्याद्वादप्रविनस्कार्थाविशेषव्यंजकोनयः॥११॥श्रर्थ जाकरिसा
ध्यपदार्थजानियेसोनयहैसोकैसाहैस्याद्वादजोश्रुतप्रमाणतातैंनैदरूपकी। १०५
याजोश्रर्थकाविशेषशक्यश्रनिषेतश्रप्रसिद्धविशेषणविशिष्टसाध्यविवादमैं।

श्रायाताकाव्यंजकहैसोकैसैव्यंजकहैसाधकैसमानधर्मरूपजोदृष्टांततांहीकरिस १
धर्मकहियेसमानधर्मपणांतैव्यंजकहैसोश्रविरोधतैव्यंजकहैसाध्यतैंविरुद्धपक्ष
केसाधर्म्यतैंव्यंजकनांहीहै।विपक्षतैंतौवैधर्म्यतैंहाश्रविरोधकरिहीहेतुकैसाधा
काप्रकाशनपणांहै।श्वैसैकहनैतैंहीहेतुकालक्षणश्रन्यथानुपपन्नपणांहोयहै।
श्रन्यथकारहेतुकालक्षणकहैतामैंबाधाहै।श्वैसैनयहैसोहाहेतुहै वक्तृरिश्वैसैन
यैसामान्यकालीलक्षणहोयहैजातैंस्यादवादतैंनैदरूपकीयाजोश्रर्थसोंपधानपणां १
तैंसर्वश्रंशकाव्यापनैवालाहै।श्लोकाविशेषजोनित्यपणांदिकताकास्यारास्याराकाक
हनैवालाहैसोयहनयहैश्वैसैंनयकासामान्यलक्षणजानलांहेतुतौंजाधश्रनिषेते
मैंश्रावैताहीकूंसाधैहै।वक्तृरिनयसामान्यहैसोसर्वधर्मनिमैंव्यापकहैश्वैसैंश्रनेक

धर्मनिसहितवस्तुकीप्रतिपत्तिप्रमिज्ञानसोतौप्रमाणहै।।वक्तरिएकधर्मकीप्रतिपा-
तेहैसोनयहै।।वक्तरिप्रतिपक्षीधर्मकासर्वथानिराकरणासोदुर्नयहै।छ।आगैजो
प्रमाणकाविषयअनेकांतात्मकवस्तुकसोकैसाहै।ऐसैपूछेआचार्यकहैहैं।श्लो
नयोपनयैकांतानांत्रिकालानांसमुच्चयः।अविद्धाअनुबंधोऽयंसैकमनेकधा
१२ अर्थ।तीनकालसंबंधीजनयअरउपनयतिनिकाएकांततिनिकाअविद्ध
गनाअबस्वरूपजोसंबंधऐसासमुच्चयकहियेसमुदायएकतासोऽवयहैसोकैसाहैअ
नेकंधाकहियेअनेकप्रकारहै।ताहानयकास्वरूपतीपहलैकह्यासोहैतैऽवय
केनेदतैंतथातिनिकैउनश्नेदतैंअनेकहै।वक्तरितिनिनयकीसास्तापतिसास्वा १०५
अनेकहैतैउपनयहै।वक्तरिएकाएकधर्मकाग्रहणकरणांसोतिनिकाएकांतहै

तिनिकासमुच्चयऐसाजोधर्मअपनाआश्रयरूपधर्मीकूंछोडिअन्यधर्मीमैंनजाना
ऐसाअशक्याविवेचनपणांरूपसमुदायसोहैऽहाऽनेदानेदकथंचिन्नजानानां।सर्व
थानेदानेदमैंविरोधहै।ऐसैत्रिकालवर्तीनयउपनयकाविषयभूतपर्यायविशे
षनिकासमूहऽव्यहैसोएकानेकस्वरूपवस्तुहैऐसासामान्यकथाकारकह्याहूवा
वोहै।छ।आगैपरवादीकाआशंकाविचारिअरउत्तरकरतेसंतेआचार्यकहैहैं
श्लोक।मिथ्यासमूहोमिथ्याचेन्नमिथ्यैकांततास्तिनः।निरपेक्षानयामिथ्यासापे
क्षावस्तुतेर्थकृत १३ अर्थ।ऽहांअन्यवादीतर्ककरैतुमनैवस्तुकास्वरूपनय
अरउपनयनिकाएकांतकासमूहकूंऽव्यकरिकह्यासोनयनिकाएकांतकूंतो
तुममिथ्याकहतेआवोहोसोमिथ्यानयनिकासमूहनांमिथ्याहीहोयताकूंआ।

चार्यकहैहैजोमिथ्यानयनिकासमूहहैसोतौमिथ्याहीहै।।वक्तरिहेसाधैनैनिकैनय
निकासमूहहैसोमिथ्यानांहीहैजातैश्रैसाकहौहैजोपरस्परअपेक्षारहितनयहैते
तौमिथ्याहै।वक्तरिनैपरस्परअपेक्षासहितनयहैतेवस्तुस्वरूपहैतेअर्थक्रियाकूं
करैश्रैसावस्तुकूंसाधैहैनिरपेक्षपणांहैसोतौप्रतिपक्षीधर्मकासर्वथानिराकरण
स्वरूपहै।वक्तरिप्रतिपक्षीधर्मनैंअपेक्षाकहिएहठदासीनतासोसापेक्षपणांहैउप
क्षानहोयअरप्रतिपक्षीधर्मकूंमुख्यकरैतौप्रधानपणांनयसैंविशेषनजहरैहैयसाणय
दुर्नयकाश्रैसैहालक्षणवणौहै दोऊधर्मकासमानग्रहणसोतौप्रमाणवक्तरिप्रति
क्षीधर्मनैंअपेक्षासोसुनय।।वक्तरिप्रतिपक्षीधर्मकासर्वथात्यागसोदुर्नयश्रैसैसर्वै
कान्तउपसंहारसंक्षेपसेटनांजानना।छ।।आगैपूछैहैजोश्रैसैंअनेकांतात्मकअर्थहै

तौवचनकरिकैसैंनियमकरिकहियेजातैप्रतिनियतकहियेन्याराकोईपदार्थनिवि
षैलोककैपहलिहोयहै।।श्रैसैआगैकाहोतैआचार्यकहैहैःश्लोक।।नियम्यतेऽर्थोवा
क्येनविधिनावारणेनवा।।तथान्यथावाणेवचनमविशेष्यंतन्नयथा।।१४।।अर्थ।।वि
धिरूपतथावारणकहियेनिषेधरूपश्रैसावाक्यकरिअर्थकहियेपदार्थहैसोनि
यम्यतैकहियेनियमरूपकरियेहै।जातैसोकहियेपदार्थतथाकहिएतैसाअरअन्य
थाकरिअन्यसाश्रैसैविधिनिषेधरूपअवस्तुहै।।वक्तरिश्रैसानमांनियेतौअविशेष्य
त्वकहियेपदार्थकैविशेषणायोग्यपणांनहोय।ऽहांश्रैसाजाननांजोकिंचूसतरूपा
वस्तुहैसोसर्वहीअनेकांतस्वरूपहै।जातैश्रैसाहोयसोहीअर्थक्रियाकाकरनेवाला
होयसर्वथाएकांतरूपतौअवस्तुहैसोअर्थक्रियारहितहै।यहतौविधिरूपवाक्य

है। अन्यमतीजीसारेश्रैसैहीएकानेकस्वरूपमांनैहैपरंतुसर्वथाजोएमुख्यकरिएकप।
क्षकूंपरमार्थमांनिर्मूलीपक्षकालोपकरिअनिष्टायविणडैहैअरमानैहैश्रैसैहै।वोद्वमती
तौएकसंवेदनकूंचित्राकारमांनैहै।नैयायिकऽश्वरकेज्ञानकूंअनेकाकारमांनैहै।सां
ख्यमतीस्वसंवेदनकूंबुद्धिसैंआयापदार्थकूंज्ञाननेवालामानैं।मीमांशकफलज्ञानकूं।
स्वसंवेदनरूपअरअर्थनिकाजाननेवालामांनैहै।चार्वाकजीएपक्षज्ञानकूंअपनाप
नापरकाजाननेवालामानैहैश्रैसैएकानेकस्वरूपमांनिअरएकपक्षकूंसर्वथामुख्या
तौएकरैतवअनिष्टायविणडाहीकहिये।श्रैसैतौयहअनेकांतस्वरूपवस्तुकाविधिवाक्यहै वक्तरिनैसैहीनिषेधवाक्यहै।जोवस्तुतत्वहैसौकिछभीएकांतस्वरूपनांहै १०५
है जातैसर्वथाएकांतमैंसर्वथाअर्थक्रियानांहीहै।जैसैआकासकेफूलनांहीतातैअ।

र्थक्रियानीनांहै।श्रैसैअन्यवादीनिकरिमान्याजोसर्वथाएकांतनिकीमांन्यकानिषेधहै।
जातैसर्वथाएकांतकौकिछवस्तुनाहीसोनिषेधनेयोंएपनीनांहीं।अरएपरवादीनिकीम
न्यानावस्तुरूपहैतानकानिषेधहै।श्रैसैविधिप्रतिषेधरूपवाक्यकरिवस्तुतत्वनिपनरूप
कीनियेहै।।वक्तरिनैसैहीतथाअन्यथाकाअवश्यपनवहै।जोनथाअन्यथानहोयतौ।
पदार्थविशेष्यपनवहैरै।।प्रतिषेधविनाविधिविशेषणनांहा।विधिविनाप्रतिषेधविशे
षणानांहीदोकविशेषणविनांविशेष्यपदार्थनांहीकथनकरिविधिप्रतिषेधदोऊकूंम।
खांगीएकरिसतअसतआदिवाक्यनिविषैहतिजांननीछभीसर्वथाअन्यवादीका।
हैजोवाक्यहैसोसर्वथाविधिकरिवस्तुतत्वकानियमरूपकरैहैश्रैसैएकांतविषैआ
वार्यऽषणादिषावैहैं।। श्लोक।।सदेतदस्तवादोषानदेवेत्यनुशासती।।नमस्यास्यामृ।

वाक्यैकथंतत्त्वार्थदेशनाना॥१५॥ अर्थ। वस्तुहैसोतत्अतत्अरैसैदोकरूपहैयातैं
यदुवाक्कहियेवाणीतत्हीहै। अरैसैकहतीकैसैसत्यहोयनहोय। वदुरिअरैसैअस
त्यवाक्यनिकरितत्वार्थकाउपदेशकैसैप्रवर्तै। असत्अवाक्कूंकौनमानै। इहांअरै
साजाननांजोवस्तुहैसोतौउत्पत्त्यादिकप्रमाणकाविषयभूतसत्असत्आदिविरुद्ध
धर्मकाआधाररूपहैसोअविरुद्धहैसोअन्यवादीसतरूपहीहैतअसतरूपहीहैअरै
सैएकांतकहैहैतौकहोवस्तुतौअरैसैहैनांहीवस्तुहीअपनांस्वरूपअनेकांतात्मक
आपदिषावैहैतौहमकाहाकरैवादीपुकारैहैविरुद्धहैरेविरुद्धहैरेतौपुकारोनिरर्थ।
कपुकारनैंमैंसाध्यहैनांही। अरैसैसत्असत्वस्तुकूंतत्हीहै। अरैसैकहैतीवाणीमि
थ्याहैअरमिथ्यावाक्यनिकरितत्वार्थकीदेशनायुक्तनाहीहै। अरैसिद्धकीया॥ छ॥ १७

आतौवाक्यहैसोप्रतिषेधप्रधानकरिहीपदार्थकूंनियमरूपकरैहै। अरैसैएकांतनी।
अरैसनांहीअरैसैकहैहै। श्लोक॥ वाक्स्वजातोऽयवार्थप्रतिषेधनिरंकुशः॥ आहैवस्त्व
र्थसामान्यंतादृक्वाक्यंखपुष्पवत्॥१६॥ अर्थ। वाचनकायहास्वजातवहै। जोअपनाअ
र्थसामान्यकूंतौकहैहै। वदुरिअन्यवचनकाअर्थकाप्रतिषेधअवश्यकरैहैतासैं।
निरंकुशहै। वदुरिइहांवोदमतीकहैजोअन्यवचनकाप्रतिषेधहैसोहीवचनका
अर्थनिरंकुशहैस्वार्थसामान्यतौकहनैंमोत्रहैकिछूवस्तुनांहीनाकूंआचार्यकहै
हैअरैसावचनतौआकाशकेफूलवतहैइहाअरैसाजाननांजोवचनकैअपनांसामान्य
अर्थकातौप्रतिपादनअरअन्यवचनकाअर्थकानिषेधसिवायअन्यकिछूकहनै
कूंहैनांही दोकमैंमूंकनहोयतौवचनकह्याहीनकह्यासमानहैताकाकिछूअ

र्थहैनांही। निश्चयनैसामान्यतौविशेषविनांअरविशेषसामान्यविनांकहूंदीखैहैनांही
दीऊहीवस्तुस्वरूपहै। इससिवायअन्यापोहकहतौकिछहैनांही।तत्वकीप्राप्तिविनां
केवलवचनकहिकरिआपतथापरकूंकाहेकूंठिगनां छ आगैकहैजोविधिएकां।
तकीज्योंहिविधएकांतकानीनिराकरणातौविस्तारकरिपहलैकहहीआये। वज्रसि-
कैसेनिषेधैहीवचनकाअर्थकहनेवालेवादीकीआशंकाइहिकरैहै।श्लोक।सा।
मान्यवाविशेषेचेन्नशब्दार्थोमृषाहिसा।।अनिवेतविषाभेःस्यात्कारःसत्यलांछन
ग।।अर्थ।सामान्यवाणीहैसोचेतकहियेजोविशेषविषैशब्दार्थरूपनांहीहैविशे।
षकूंनजनावैतौश्रीसीवाणीमिथ्याहीहै। वज्रसिअनिवेतसैलीयाजोविशेषताकीपा १०७
सिकास्यात्कारहैसोसत्यार्थलांछनकहियेचिह्नहै। यहचिह्नअनिशायसैंतिष्ठनेवि

शेषकूंजनांवैहै। इहांश्रीसमंतभद्रजीवौद्धमतीअन्यापोहकहियेअन्यकेनिषेधमात्रवा
क्यकाअर्थकहैहैसोअन्यापोहोतौकिछवस्तुहैनांहीवस्तुतौसामान्यविशेषात्मक
हैसोसामान्यकूंकहैतबविशेषवक्ताकेअनिशायमैतत्यमांनहैतातैंजोकहनैंवालासा
मान्यवचनहीहैजातैयाकैस्यात्पदलागैहै। सोअनिवेतविशेषकूंजांननैकायहस्या
त्कारसत्यार्थचिह्नहै। वज्रसिअन्यावकूंतौकहैअन्यावकूंनकहैश्रीसावचनतौअ।
नुक्रमसांनहै। छ। आगैकहैहैजोश्रीसैस्याद्वादकानिश्चयकीयातासैंस्याद्वादहीसत्य
र्थहै। अन्यवादीसत्यार्थनांहीहैश्रीसैमन्नावान्समंतभद्रस्वांमीअतिशयरूपकहै।
है।श्लोक।विधेयप्रतिषेध्यात्मार्थांगंप्रतिषेधाविरोधियत्।यथैवादेयहेयत्वमितिस्याद्वा
दसंस्थितिः।१८।अर्थ।यथाकहियेजैसैजोप्रतिषेध्यपदार्थमूअविरोधीविधेयपदा

र्थहै। सोईप्रसिद्धार्थीकहियेआपकैवांछितअभिप्रेतपदार्थकाअंगभूतहतैसैही।
आदेयहैयत्वकहियेग्रहणकरणीयाप्रश्नरूपाकरनैंयोग्यपणांनीप्रतिषेधतैंअ
विनाभावीहै। औसैस्याद्वादकीसम्यक्प्रकारस्थितिहै। ताहाअस्तिइत्यादिकतौ।
अभिप्रायसैंलीयाहुवाविधेयहै। ताहाजीवनकानयतथाजीवआदिकानयतैंकि
छूविधानकरैतौताकूंविधेयनकहियेजातैंताकाकरनैंकाअभिप्रायनांही वक्तरि
अभिप्रायसैंनीलीग्याअरविधानकायासोवियनकहियेजातैंतिसमैंकरनैंकी।
योग्यताहीहै विधाननामयावक्तरिअभिप्रायमैंनीनलीयाअरकरनैंनीनलाग्यासो
कछूविधेयहैहीनांहीप्रतिषेध्यनीनांहीलातैंउपेक्षाउदासीनताभावहीहै वक्तरि
निसिवायअभिप्रायमैंलीयाअरविधानकरैसोविधेयहैसोप्रतिषेध्यनैंनास्तित्व।

आदिनिनितैंअविरुद्धहैसोहीतैसैहीवांछितपदार्थकाअंगहै जातैंविधिप्रतिषेधकैप
रस्परअविनाभावलक्षणपणांहै औसैविधेयप्रतिषेधस्वरूपकैविशेषतैंस्याद्वाद
क्रियाजोडनी। अस्तित्वआदिविशेषहैसोअपनैंस्वरूपकरिविधेयहै कथंचित्अ
विधेयहै। औसैप्रतिषेध्यपरिलग्नलक्षणांतैंसैहीजीवआदिपदार्थनिपरिलग्नलक्षणां
कथंचित्विधेयकथंचित्प्रतिषेध्य औसैस्याद्वादकासम्यक्स्थितियुक्तिशास्त्र
तैंअविरोधसधैहै अरपरमेष्ठीनावएकांतइत्यादिविषैही। विधिप्रतिषेधकैविरो
धकासमर्थनकीयाहैनातैंश्रीसमंतभद्राचार्यनगवनप्रतिकहैहैजोहेनगवत्
हमतैंनिर्बाधनिश्चयकीयाहैसोयुक्तिशास्त्रतैंअविरोधीवचनपणांतैंमहानिर्दो
षहौअन्यनांहाहै तिनिकेवचनविधिनांहीहै ॐ अवयहआपसीमांसाकाषा

DR BHAU DAJI

रूपंकीयाप्तताकानिर्वहणश्रद्धापकैतांकाफलकूंआचार्यपकाहैहै॥ श्लो
क॥इतीयमाप्तमीमांसाविहितात्महितमिच्छतां॥सम्यग्मिथ्योपदेशार्थविशेषप्रतिपा
त्तये॥१॥॥अर्थ॥इतीकहियेऐसैदशपरिछेदरूपयहआप्तमीमांसासर्वज्ञविशे
षकीपरिक्षाहै सोहितकूंइछतेजेनयजीवनिकैसम्यक्उपदेशाश्रसिथ्याउपदेशा
तिनिकाविशेषसत्यार्थश्रसत्यार्थताकीप्रतिपत्तिहेयउपादेयरूपजाननांश्रधा न
करणांआवरणकरनांताकैश्रविर्हभनैश्वाहै॥ऐसैआचार्यनिनैंश्रपनाश्रभिप्रेस
प्रयोजनप्रगटकह्याहै॥सोआर्यसत्पुरुषनिकैविचारनैंयोग्यहै॥तहांहितनौमोह
तथाभिसंधिकाकारणसम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रज्ञाननैं॥वक्तरिसम्यक्उपदेशनौमोह ११२
कोकारणसम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रकाहेतूहैहै वक्तरिमिथ्याउपदेशाज्ञानही॥

नैमोहकहैइत्यादिकहैवक्तरिशास्त्रकाश्रारंभविषैश्राप्तकास्तवनमोहमार्कि
नेताकर्मभूभृतकैभेत्ताविश्वतत्वकैज्ञाताऐसाकीयाप्ताकीयहपरीक्षाकराहैया
हीतैयाकानामश्राप्तमीमांसाहै॥श्रादिश्रक्षरकेनामदेवागमस्तोत्रहै॥ऐसैं॥
जाननां॥श्राप्तपरीक्षाकीविशेषवस्याजाणांचाहौतौश्रष्टसहस्रीतैंजानियोइहांश्र
र्थसंक्षेपलिख्याहै॥छ॥चौपई॥ज्ञानश्रज्ञानमोहश्ररवंधसंभूतिकीजनपतिसंवंध
नयप्रमांणइतिसवकीरीति॥स्यादवादनायीमुनिनीति॥१॥इतीश्रीश्राप्तमीमांसान
मदेवागमस्तोत्रकासंक्षेपश्रर्थरूपदेशानामायसम्बन्धिकाविषैदशमापरि
छेदसमाप्तमयाः॥१०॥इहांताईकारिकाएकसौचौदहभई॥११४॥सवयाते
ईसा॥१३॥॥घातिनिवारिनयैश्ररहंतश्रघातिनिवारिसुसिद्धकहाये पंचश्राचार

Digitized with financial assistance from the Government of Maharashtra on 11 June 2017

सवाशिश्चवारिजनम्यनितारितिरैश्रुतमाये श्रीगजपंथपदैसवकायपदायघणोंशिव
रोलगाधेसाधुसवैगुणामूलधरैतवसाधयमोक्षनमूमननोय १ दोहा मंगलकार
णपंचगुरु नमैविघनकीहांनि ग्रंथश्रेनिमंगलश्रर्थि नमस्कारमनजांनि १ सं
मंतनऽश्रकलंकफुनि विद्यानंदिसुजानि इनिकेचरणमूंसदासाधुत्रयीगुणाखा
नि २ सवया ३३ देशादुढाहडजैपुरथांनसाहाननरेशजोशाविराजै न्यायचलै
सवलोकनलैविधिवासलहैसुषुसूडरनाजैनजनावफुतेनिनिमैंनुश्रध्यानमशै।
लिनलीसुसमाजै होतिनिमैजयचंदसुनामकियोयहकामपहौनिजकाजै १ दो
हा श्रष्टादशशतसाविषट् विक्रमसंवतजांनि चैत्रशुक्लचौदसिदिवसपूर्णाचौंनि ११३
कामांनि ५ संवत्सरणा१७०४